मालती जोशी की कहानियों में चित्रित पारिवारिक समस्याएं

HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

शिवानी सोमनाथ नाईक

अनुक्रमांक: 22P0140030

PR Number: 20190516

मार्गदर्शक

श्वेता गोवेकर

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

परीक्षक: श्वेता गोवेकर

Seal of the School

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, **"मालती जोशी की कहानियों में चित्रित पारिवारिक समस्याएं"** is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University under the Supervision of Assistant Prof. Shweta Govekar and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to anyone as needed.

SNaik

Shivani Somnath Naik
22P0140030

Date: 16/04/2024

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation report "मालती जोशी की कहानियों में चित्रित पारिवारिक समस्याएं" is a bonafide work carried out by Ms. Shivani Somnath Naik under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Guide :Shweta Prasad Govekar

Date: 16/04/24

Signature of Dean of the School

School Stamp

GOA UNIVERSITY
SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE
TALEIGAON PLATEAU

Date: 16/04/24

Place: Goa University

GOA KONKANI AKADEMI
Goa Sanchar Bhavan,
5th Floor, B.S.N.L. Bldg.,
Patto Plaza, Panaji Goa-403001
Email Id: konkaniakademi@gmail.com **Ph. No. 7775891857**

क्र.14/3/86/GKA/Lib.Visitors/2023/75 ता:- 02/ 05/2024

हाजेरी दाखलो

गोंय विद्यापिठाच्या शणै गोंयबाब भाशा आनी साहित्य महाशालेच्या हिन्दी अध्ययन शाखेची विद्यार्थीनी **कु. शिवानी सोमनाथ नायक** एम.ए. भाग – II (हिन्दी) हिणें ता.23/08/2023, ता.13/10/2023, ता. 27/10/ 2023, ता.11/03/2024, ता.12/03/2024, ता. 14/03/2024 ह्या दिसांनी ईन्टनशिप/प्रबंधा विशी म्हायती एकठांय करपा संबंदान गोवा कोंकणी अकादेमीच्या मों. सेबास्तियांव रूदोल्फ दाल्गादो वाचनालयाक भेट दिल्या म्हणपाचें हांव प्रमाणीत करता.

(दामोदर मोरजकर)
सचीव

सेवेक,
कु. शिवानी सोमनाथ नायक
हिन्दी ए.म.ए. भाग – II
शणै गोंयबाब भाशा आनी साहित्य महाशाला
गोंय विद्यापीठ

अनुक्रम

अध्याय	**विवरण**	**पृष्ठ संख्या**
	Acknowledgements	
	अनुक्रम	
	भूमिका	
	कृतज्ञा	
1	1.1. भारतीय परिवार का स्वरूप एवं व्याप्ति 1.2. परिवार शब्द का अर्थ 1.3. भारतीय परिवार का महत्व 1.4. परिवार के प्रकार	
2	2.1. समकालीन हिंदी महिला कहानीकारों में मालती जोशी का स्थान 2.2. कृष्णा सोबती 2.3. मृदुला गर्ग 2.4. सूर्यबाला 2.5. चित्रा मुद्गल 2.6. सुधा अरोडा 2.7. ममता कालिया	

	2.8. मालती जोशी	
3	3.1. मालती जोशी की कहानियों का समीक्षात्मक अध्ययन 3.2. बोल री कठपुतली (कहानी संग्रह) 3.3. आखिरी शर्त (कहानी संग्रह) 3.4. मालती जोशी की लोकप्रिय कहानियाँ (कहानी संग्रह)	
4	4.1. मालती जोशी की कहानियों में चित्रित पारिवारिक समस्याएं 4.2. रूढ़िवादी मानसिकता 4.3. घरवालों एवं ससुरालवालों से प्रताडित स्त्री 4.4. वात्सल्य भाव की कमी 4.5. आर्थिक स्थिति की तंगी 4.6. अपराध बोध की भावना 4.7. प्रौढ़ावस्था में विवाह 4.8. रिश्तों में स्वार्थ-वृत्ती की समस्या 4.9. मित्रता के कारण परिवार में उपजे तनाव 4.10. अकेलेपन की समस्या 4.11. दांपत्य जीवन में उभरते तनाव 4.12. व्यक्तिगत मजबुरी के कारण उभरते तनाव 4.13. असहाय पिता 4.14. बेरोजगारी की समस्यां 4.15. डॉक्टर से पीडित परिवार 4.16. साफ़-सफ़ाई का मोहः एक समस्या 4.17. उपसंहार	

	संदर्भ	

भूमिका

भारतीय समाज में परिवार का महत्त्व सनातन काल से स्वीकार किया गया है। परिवार को समाज की आधारभूत इकाई माना जाता है। परिवार समाज की ऐसी संस्था है जिसका महत्त्व मानव के आत्म संरक्षण, वंश और जातीय जीवन के विकास हेतु माना जाता है। स्वातन्त्र्योत्तर युग तक आते-आते हिन्दी कथाकारों ने भारतीय समाज की बदलती परिस्थितियों का यथार्थांकन किया। इन साहित्यकारों ने शहर ही नहीं तथा ग्रामीण परिवेश में होने वाले परिवर्तनों के दृश्य को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है| इस युग हिन्दी कथा साहित्य में अनेक लेखिकाएँ सामने आई जिन्होंने नारी जीवन और पारिवारिक सन्दर्भों की प्रामाणिक तस्वीर को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया| इनमें से उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, चित्रा मुद्‌गल, कृष्णा अग्निहोत्री, मालती जोशी आदि प्रमुख हैं|

मानव जीवन के सांस्कृतिक विकास के प्रत्येक स्तर पर परिवार एक आधार के रूप में उपस्थित रहता है| इसी प्रकार से हिन्दी साहित्य में मालती जोशी का एक विशेष स्थान एवं बडा योगदान रहा है| उन्होंने बड़ी ही सादगी व सहजता से हिन्दी कथा-साहित्य को अनेक ऐसी सशक्त कृतियाँ दी, जो आज के ग्रामीण एवं शहरी मध्यवर्ग के पारिवारिक संदर्भ की प्रामाणिक तस्वीरों को प्रस्तुत करती हैं| उन्होंने मध्यवर्गीय समाज में फैली रूढ़ियां, कुरीतियां, असामानता आदि को अपने साहित्य में चित्रित किया है।

इस शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में भारतीय परिवार का स्वरूप, परिवार के प्रकार एवं महत्व का उल्लेख किया है|

समकालीन लेखिकाओं ने आज के जीवन की परिवर्तनशीलता और पारिवारिक -जीवन के परिवर्तित मूल्यों को अत्यंत मार्मिकता के साथ अपने कथा-साहित्य में चित्रित किया है। इसी के साथ द्वितीय अध्याय में समकालीन महिला कहानीकारों में मालती जोशी के महत्व एवं उनके स्थान का वर्णन किया है|

तृतीय अध्याय में मालती जोशी की कहानियों का समीक्षात्मक अध्ययन

किया है| लेखिका की कहानियाँ पढ़ने से यह ज्ञात होता है कि मध्यवर्गीय परिवार तथा स्त्री इनकी कहानी का मुख्य विषय रहा है। लेखिका को अपने आस-पास कहानी के बीज मिल जाते है।

अंत: या चतुर्थ अध्याय में मालती जोशी जी के कहानी संग्रहों में चित्रित पारिवारिक समस्यांओ ध्यानपूर्वक वर्णन किया है।

मालती जोशी की कहानियाँ भारतीय परिवार एवं पारिवारिक जीवन, परिवार के तौर-तरीके और शहरीकरण की सीमा पर निर्भर करती है। विवाह पद्धति में विवाह के रीति-रिवाज, विवाह के लिए साथी का चयन, विवाह करने की उम्र, विवाह की रस्में, वित्तीय आदान-प्रदान और तलाक जैसे विषयों पर जोर दिया जाता है। इसी कारण वश मालती जोशी के कथा- साहित्य में चित्रित मध्यवर्गीय परिवार का विश्लेषण महत्त्वपूर्ण बन जाता है। इसी प्रकार समकालीन भारतीय समाज में शहरीकरण और औद्योगीकरण के बावजूद, परिवार संस्था लोगों के जीवन में एक केंद्रीय भूमिका निभाती है।

कृतज्ञता

पारिवारिक समस्या पर आधारित विषय 'मालती जोशी की कहानियों में चित्रित पारिवारिक समस्याएं' स्वीकृत नहीं हो पाता तो मेरा यह लघु शोध प्रबंध संभव ही नहीं था। इस विषय को लेकर आगे बढ़ने के लिए, प्रोत्साहित करने के लिए मैं मेरी शोध निर्देशक सहायक प्राध्यापिका श्वेता प्रसाद गोवेकर का आभार व्यक्त करती हूँ। उन्होंने मेरे विषय संबंधित सहायता तथा कुछ पुस्तकों का संदर्भ देकर प्रस्तुत शोध प्रबंध पूरा करने में मेरी काफ़ी मदद की है।

इस शोध प्रबंध को पूरा करने में शणै गोंयबाब भाषा एवं साहित्य संकाय के सभी प्राध्यापकों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। सभी प्राध्यापक जैसे उप-अधिष्ठाता प्रो. वृषाली मांद्रेकर तथा विभाग के अन्य प्राध्यापक गण सहायक प्राध्यापक आदित्य सिनाय भांगी और मनीषा गावडे जिन्होनें मुझे प्रोत्साहित किया और इनके मार्गदर्शन के कारण मैं उन सभी का तहे दिल से ऋणी हूँ। गोवा विश्वविद्यालय एवं सेंट्रल लायब्ररी के ग्रंथपाल तथा कर्मचारियों का भी जिन्होंने किताबें ढूँढकर देने के लिए आभार व्यक्त करती हूँ। साथ ही मेरे स्नातकोत्तर कला हिन्दी के मित्रों द्वारा किए गए मदद के लिए मैं उनकी भी आभारी हूँ।

भारतीय परिवार: स्वरूप एवं व्याप्ति

प्रस्तावना

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। सामाजिक जीवन की पहचान मनुष्य को परिवार से मिलती है। घर, कुटुम्ब अथवा परिवार मानव-समाज की प्राचीनतम एवं आधारभूत इकाई है| भारतीय समाज में परिवार का महत्त्व सनातन काल से स्वीकार किया गया है, भारतीय संस्कृति 'मातृ देवो भव, पितृ देवो भव तथा आचार्य देव भव' के द्वारा माता-पिता को देवता का दर्जा देती है। "भारत में परिवार के दो रूपों का प्रचलन रहा है जिसमें एक रूप मातृप्रधान तथा दूसरा रूप पितृप्रधान रहा है। हिन्दू समाज में पितृ सत्तात्मक परिवार में परिवार का प्राचीनतम रूप संयुक्त परिवार को माना है|”[1]

प्राचीन भारत में पारिवारिक जीवन की आधारभुति संयुक्त परिवार को माना है। जहाँ परिवार के सभी सदस्य आपस में बंधे हुए होते थे तथा खुशी एवं सुख से अपना जीवन जीते थे। उनमें आत्मीयता एवं एक-दूसरे के सुख-दुःख की सहभागिता का भाव होता था। परिवार एक ऐसा समूह है जिसमें बूढ़े, जवान, पति-पत्नी तथा उनके बच्चे रहते साथ-साथ रहते हैं। इनका संबंध माता-पिता, भाई-बहन तथा भाई-भाई अथवा किसी अन्य संबंध से सम्बन्धित होते हैं।

साठोत्तरी काल से परिवार संस्था में तेजी से परिवर्तन होने लगे। परिवर्तन की इन्हीं दिशाओं को पकड़ने का प्रयास साठोत्तरी काल की विविध महिला कहानीकारों

ने अपनी कहानियों में किया है। देशी-विदेशी परिपार्श्व पर चित्रित कहानियों का लेखन विशेष रूप से मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती, शिवानी, मेहरुन्निसा परवेज, शशिप्रभा शास्त्री, चंद्रकांता, मालती जोशी तथा अन्य अधुनातन महिला कहानीकारों ने किया है।

'परिवार' विधि-विधान सम्मत स्वरूप या सामाजिक संस्था मात्र नहीं है, इससे कहीं अधिक वह एक ऐसी भावात्मक इकाई है जिसमें भविष्य का स्वरूप निर्धारित होता है। "मनुष्य मरणधर्मा है, परन्तु मानव जाति अमर है। मृत्यु और अमरत्व- दो विरोधी वस्तुएँ हैं, किन्तु परिवार द्वारा इन दोनों का समन्वय हुआ है। व्यक्ति भले ही मर जाये, पर परिवार और विवाह द्वारा मानव जाति अमर हो गयी है।"[2] इस तरह डॉ भरती जी ने परिवार और मनुष्य किस प्रकार अमर हुए है यह बताया है| परिवार इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है कि एक ओर जहाँ उसमें थकी हुई पीढ़ी आश्रय पाती हैं वहीं वह भावी पीढ़ी की निर्माता भी है। पारंपरिक भारतीय संयुक्त परिवार, जो सामूहिकता के समान सिद्धांतों का पालन करता है, मानसिक रूप से बीमार लोगों की देखभाल के लिए एक उत्कृष्ट संसाधन साबित हुआ है। हालाँकि, समाज बदल रहा है और सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तनों में से एक संयुक्त परिवार का विघटन और एकल और विस्तारित परिवार प्रणाली का उदय है।

व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक की विकास यात्रा समाज के द्वारा ही सम्पन्न होती है। जिसके द्वारा कुछ संबंध तो उसे परंपरा के रूप में मिलते हैं तो कुछ वह स्वंय निर्मित करता है, क्योंकि व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न

रूपों में समाज से जुड़ा रहता है और जिसका प्रमुख आधार 'परिवार' होता है। परिवार इसलिए भी महत्वपूर्ण माना गया है क्योंकि परिवार में एक ओर जहाँ थकी पीढ़ी आश्रय पाती है वहीं दूसरी ओर यहाँ भावी पीढ़ी का निर्माण होता है जिसके द्वारा अतीत, वर्तमान और भविष्य का साकार रूप निश्चित होता है। इस दृष्टि से हरिदत्त वेदालंकार परिवार को परिभाषित करते हुए कहते है कि, "परिवार एक सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक संस्था रही हैप्रत्येक समाज चाहे वह आदिम हो या आधुनिक, पूर्व या पश्चिम का परिवार पाए जाते हैं|"[3] संसार के विभिन्न भागों में परिवार के स्वरूपों में विविधता दिखाई देती है। इस विविधता का मूल कारण, स्थान विशेष की भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ हैं। समाज में परिवार का जो रूप पहले था उसमें समय के साथ धीरे-धीरे परिवर्तन आ गया है। सदियों से चलती आ रही मान्यताएँ अब बिल्कुल लुप्त हो रही हैं। जहाँ पहले संयुक्त परिवार हुआ करता था वह आज एकल परिवार के रूप में सीमित हो गया है। इस तरह बदलते पारिवारिक परिदृश्य से समाज का रूप भी बदल गया है।

परिवार' शब्द की व्युत्पत्ति तथा परिभाषाएँ

'परिवार शब्द संस्कृत के 'परि' उपसर्ग पूर्वक 'वृ' धातु में 'धत्र' प्रत्यय के योग से बना है। परिवार समाज के सबसे प्राथमिक समूहों में से एक है। परिवार एक सार्वभौमिक और अन्य सामाजिक संस्थानों में सबसे पुराना है। परिवार इस अर्थ

में एक संस्था है कि यह रिश्ते की रूपरेखा देता है जो कुछ नियमों और प्रक्रियाओं द्वारा निर्देशित होता है जो परिवार में हैं।

1. **<u>हिन्दी विश्वकोश के अनुसार परिवार का मूलार्थ है</u>** - "परिव्रियतेऽनेन परि-वृ-करणे घत्र।"[4] अर्थात् एक ही कुल में उत्पन्न और परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध रखने वाले मनुष्यों का समुदाय।
2. **<u>हिन्दी विश्वकोश के अनुसार</u>** - "परिवार साधारण पति-पत्नी और बच्चों के समूह को कहते हैं, किन्तु दुनिया के अधिकांश भागों में वह सम्मिलित वास वाले रक्त सम्बन्धियों का समूह है, जिसमें विवाह और दत्तकप्रथा द्वारा स्वीकृत व्यक्ति भी सम्मिलित है।"[5] अर्थात समाज में बच्चों का जन्म और पालन-पोषण परिवार में होता है। बच्चों का संस्कार करने और समाज के आचार-व्यवहार से उन्हें दीक्षित करने का काम मुख्य रूप से परिवार में होता है। इसके द्वारा ही समाज की सांस्कृतिक विरासत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती है। व्यक्ति की सामाजिक मर्यादा बहुत कुछ परिवार से ही निर्धारित होती है। नर-नारी के यौनसम्बन्ध मुख्यतः परिवार के दायरे में निबद्ध रहते हैं।
3. **<u>डी. एन. मजूमदार के अनुसार</u>**; "परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो एक ही छत के नीचे रहते है, रक्त से संबंधित होते है और स्थान, स्वार्थ

और पारस्परिक आदान-प्रदान के आधार पर एक किस्म की चेतनता अनुभव करते है।"[6]

अर्थात परिवार उसे कहते जो एक ही घर में रहते हैं तथा रक्त संबंध से जुड़े होते हैं|

4. **<u>Oxford Dictionaries</u>** के अनुसार, “A group of one or more parents and their children living together as a unit." or "A group of people related by blood or marriage."[7]

अर्थात् एक या एक से अधिक माता-पिता अपने बच्चों के साथ एक ही साथ रहते है उसीको परिवार कहते है|

5. **<u>मराठी शब्दकोश के अनुसार</u>**, "कुटुंब म्हणजे परस्परांशी नाती असलेल्या माणसांचा समूह. माणसांमधील नाती ही जन्मावरून, विवाहावरून अथवा दत्तक घेण्यावरून निर्माण होतात. कुटुंबसंस्था एकत्र अथवा विभक्त अशी दोन्ही प्रकारची असू शकते. विभक्त कुटुंबसंस्थेत आई-वडिल, पती-पत्नी, मुलगा-मुलगी असे प्राथमिक घटक असतात. एकत्र कुटुंबपद्धतीत इतर दुय्यम नातेसंबंधांचा अंतर्भाव होतो. साधारणतः पुरुष हा कुटुंबाचा प्रमुख असतो."[8]

6. **<u>किंग्सले डेविस</u>** के अनुसार- "परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो एक-दूसरे से रक्त सम्बन्धी होते हैं।"[9]

अर्थात परिवार एक ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो रक्त संबांधो से जुडे हुए है|

उपर्युक्त परिभाषाओं द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि पति-पत्नी के यौन संबंध द्वारा ही परिवार का स्वरूप विकसित होता है। बच्चों के पालन-पोषण से लेकर उनके व्यक्तित्व विकास तक का पुरा कार्य परिवार द्वारा ही होता है। परिवार में रहकर ही व्यक्ति सामाजिक व्यवहार एवं नैतिक आचरण की शिक्षा प्राप्त करता है। इसीलिए परिवार को व्यक्ति की प्रथम पाठशाला माना गया है, वास्तव में कहा जा सकता है कि परिवार ही व्यक्ति के जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए उसके व्यक्तित्व, सोच-विचार, आचार-व्यवहार आदि सभी को निर्मित करता है।

परिवार के प्रकार

मानव-समाज तथा संस्कृति के विकास से सम्बन्धित प्रत्येक स्तर में परिवार का स्वरूप एकसमान नहीं रहा है। वास्तविकता यह है कि विभिन्न कालों में मानव की आवश्यकताएँ बदलते रहने तथा उसकी प्राकृतिक और सामाजिक दशाओं में परिवर्तन होते रहने के कारण विभिन्न कालों तथा विभिन्न स्थानों में परिवार का स्वरूप भी एक-दूसरे से बहुत भिन्न देखने को मिलता है।

सयुंक्त परिवार

एक संयुक्त परिवार एक प्रकार का विस्तारित परिवार है जिसमें माता-पिता, दादा-दादी, चाचा-चाची और उन सभी के बच्चे एक साथ एक ही छत के नीचे रहते हैं। भारत देश में अधिकतर ऐसे उदाहरण हमें मिलते हैं, जो कई पीढ़ियों से एक साथ रहते हैं तथा सब अपनी अपनी जिम्मेदारी को परस्पर निभाते हैं जिससे परिवार में एकता और प्रेम बना रहता है।

आई. पी. देसाई के अनुसार; "हम उस गृह (घर) को संयुक्त परिवार कहते हैं, जिसमे एकाकी परिवार से अधिक पीढ़ियों के सदस्य रहते हैं और जिसके सदस्य एक दूसरे से संपत्ति, आय और पारस्परिक अधिकारों तथा कर्त्तव्यों द्वारा सम्बद्ध हो।"[10]

औद्योगीकरण और वैश्वीकरण के इस युग में संयुक्त परिवार की कल्पना नहीं की जा सकती है क्योंकि आर्थिक आवश्यकताओं व आर्थिक दबावों ने जीवन

10

मूल्यों और मनुष्य के नैतिक बोध को झकझोर दिया है, जिसके फलस्वरूप परिवार को जोड़ने वाले जो सम्बन्ध है जैसे- प्रेम, समझ और आत्मीयता न्यून या कम होते जा रहे हैं। आज मनुष्य सामाजिक सुरक्षा की दृष्टि से संयुक्त प्रथा को लाभदायक मानते हुए भी व्यक्तिगत विकास और व्यक्तिगत स्वाधीनता में इसे बाधक मानता है इसलिए संयुक्त परिवारों के स्थान पर एकल परिवारों का उदय हुआ।

सन् 60 के पश्चात् की स्थितियों ने सम्पूर्ण भारतीय समाज को बदलकर रख दिया| इस युग में परिवार की एक नारी के जीवन में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन होने लगे| शिक्षा, आर्थिक दबावों व स्वयं उसकी महत्त्वाकांक्षाओं ने उसे घर से बाहर निकलने को विवश कर दिया, जिससे उसका पारिवारिक जीवन व दाम्पत्य सम्बन्ध प्रभावित हुआ। अतः इस नवीन दृष्टिकोण के कारण नारी ने एक ओर तो अपने प्रति होने वाले प्रत्येक अन्याय को अस्वीकार किया, तो दूसरी ओर पारिवारिक सम्बन्धों के प्रति अपनी मान्यताओं को भी बदला। नारी की इन बदलती मान्यताओं के कारण भी संयुक्त परिवार एकल परिवारों में परिवर्तित हुए।

डॉ० आई०पी० देसाई ने संयुक्त परिवार की परिभाषा करते हुए लिखा है "हम उस परिवार को संयुक्त परिवार कहते हैं, जिसमें मूल परिवार से अधिक पीढ़ियों के सदस्य सम्मिलित हों तथा उनके सदस्य एक दूसरे से सम्पत्ति, आय तथा पारस्परिक अधिकारों एवं कर्तव्यों के द्वारा सम्बन्धित हो।"[11]

संयुक्त परिवार में परिवार के नियमों एवं आचार-विचार के अनुकूल चलने का अब्यास करना पड़ता है। संयुक्त परिवारों की संख्या गाँवों में अधिक है, क्योंकि सभी कृषि-व्यवसाय से सम्बन्धित रहते हैं, अतः एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान पर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। संयुक्त परिवार के संदर्भ में डॉ भरती का कहना है कि, "संयुक्त परिवार के माध्यम से बूढ़ों, विधवाओं और अनाथों को सहारा मिलता है। बच्चों के समुचित विकास में भी संयुक्त परिवार की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। संयुक्त परिवारों में पीढ़ी दर पीढ़ी लोग एक साथ रहते हैं। जिससे एक पीढ़ी की परम्पराएँ, सामाजिक आधार, प्रथाएँ, नियम सभी कुछ दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित हो जाते हैं।"[12]

एकल परिवार

आज के इस युग में भारतीय समाज के अंतर्गत बहुत तेजी से परिवर्तन होता हम देख सकते है। संयुक्त परिवार जो कभी भारतीय सामाजिक व्यवस्था की बुन्याद हुआ करते थे, आज वह पूरी तरह खतम होने की राह पर हैं। इसका सबसे बड़ा कारण बदलते परिवेश में लोगों की मुख्य रूप से आर्थिक व्यवस्थाओं की प्राथमिकता हैं।

मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए अपने परिवार को भी छोड़ने से पीछे नहीं रहता है। इसके अलावा व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बढ़ती मांग भी परिवारों के टूटने का कारण बनती है।

21 वीं सदी के शुरूआती दौर में ही भारत देश से संयुक्त परिवार प्रणाली का कम होना शुरू हो गया| बड़े परिवार तेजी से टूटकर एकांकी परिवार का रूप लेने लगे| एकल परिवार को आदर्श परिवार मानने तथा जॉइंट फॅमिली के टूटने के अनेक कारण हमें मिलते हैं| उदहारण के लिए;

घर से बाहर दूसरे शहरों या राज्यों में नौकरी व्यवसाय लगने के कारण, इसके अलावा शिक्षा के कारण, पारिवारिक तनाव तथा वसीयत के कारण एकल परिवार को तेजी से प्रोत्साहन मिले हैं|

तेजी से टूटते संयुक्त परिवार और एकल परिवार को बढ़ावा मिलने का दूसरा बड़ा कारण आज के यूथ की संकीर्ण सोच भी जिम्मेदार हैं| शादी के बाद पति-पत्नी को घर के अन्य लोगों से 'प्रोब्लम' होनी लगती हैं| माता-पिता या बड़ों की बातें उन्हें चुबने लगती है|| उन्हें लगता है वे बड़े घर में रहकर मनचाहे कपड़े, मनचाहा काम और खुलकर बात नहीं कर पाते है| इस तरह के संकीर्ण विचारों से प्रेरित होकर वे माता-पिता से अलग हो जाते हैं|

"आज तक जो सूत्र परिवार के सदस्यों को आपस में बाँधता था, उत्तरदायित्त्व को निभाने में प्रेरणा देता था, परिवार के महत्त्वपूर्ण कर्तव्यों को निभाने के लिए मार्गदर्शन करता था, उसके टूट जाने से परिवार विघटित होने की संभावना बढ़ने लगी अतः परिवार के सदस्यों को आपस में बाँधने के लिए 'आत्मीयता' और 'स्नेह' का सूत्र आवश्यक है। चाहे परिवार टूटता सा प्रतीत होता है क्यों कि इन सूत्रों के होते हुए कहीं न कहीं दरार निर्माण होती हैं परन्तु स्पष्ट रूप से दरार

दिखाई नहीं देती जैसे ही उन सूत्रों का अस्तित्व विलीन हो जाता है उस सूत्र में गूँफे मोती रूपी सदस्य बिखरे जाते हैं।"[13]

देखा जाए तो आम तौर परिवार होने के कारण घर में लड़ाई झगड़ा आम बात हैं| बड़ा परिवार होने के कारण बच्चों तथा बड़ो में छोटी-मोटी बात पर कहासुनी हो जाती है जिन्हें अपने-अपने बच्चों के माँ-बाप पक्ष लेते है और फिर बात का बतंगड बन जाता हैं| कई बार इस तरह की आपसी टकराहट एकल परिवार के जन्म की पृष्टभूमि तैयार कर देते हैं|

आज से कुछ समय पहले तक जब व्यक्ति की जरूरतें कम थीं और परिवार बहुत बड़ा होता था तब भी व्यक्ति के पास अपने परिवार के लिए अधिक समय जरूर होता था, लेकिन आज के समय में एक-दूसरें से आगे निकलने की आस के कारण इस तरह के हालात उत्पन्न हो गए हैं|

मालती जोशी स्वंय मध्यवर्ग के सुख-दुःख, राग-द्वेष, आशा आकांक्षा से परिचित है| मध्यवर्गीय परिवार या मध्यवर्गीय नारी इनकी कहानियों का केंद्रबिंदू रही है| एकल परिवार के कई फायदे भी हैं, जैसे एक तरफ जहाँ संयुक्त परिवार जब आर्थिक समस्यां में बढ़ जाता हैं तब कमाने वाले बहुत कम होते हैं जबकि खर्च करने वालों व खाने वालों की संख्या अधिक होती हैं|

दूसरी तरफ एकल परिवार के कुछ नुकसान भी हैं| छोटे और एकांकी परिवारों के बनने से परिवार में बच्चों की देखभाल तथा परवरीश उनके दादा-दादी आदि के हाथों से नहीं होती| जिसके कारण बच्चों को बुजूर्गो का प्यार नहीं मिल पाता हैं|

माता-पिता के काम पर चले जाने के बाद बच्चे अकेलेपन का शिकार बन जाते हैं|

एकल परिवारों से छोटी-छोटी घटनाओं पर व्यतीत रहना, कोई सलाह देने वाला न होना, आपसी कलह पर कोई समझाने वाला न होने के कारण पति-पत्नी के रिश्तों में दरार पड़ जाती हैं| यह पारिवारिक विघटन स्वतन्त्रता पूर्व से आरंभ हो गया था परंतु आधुनिक युग में इसकी तीव्रता और अधिक बढ़ गई। इस विघटन का प्रभाव व्यक्ति के जीवन पर भी पड़ा। भावना और भावनात्मक तत्व, दया, प्रेम, सहानुभूति लगाव आदि जो परिवार के विकास द्वारा प्राप्त होते थे आज उनके स्थान पर रिश्तों में टूटन, अलगाव, दूरियाँ व आपसी सम्बन्धों का विच्छेद नजर आ रहा है। इस तरह संयुक्त परिवारों के टूटने से पूरी तरह भावात्मक सम्बन्धों में अलगाव की भावना उत्पन्न हो गई|

भारतीय परिवार का महत्व

परिवार भारतीय समाज की आधारभूत इकाई है। संसार के विभिन्न भागों में परिवार के स्वरूपों में विविधता दिखाई देती है। इस विविधता का मूल कारण, स्थान, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ हैं। भारतीय समाज में परिवार का जो रूप पहले दिखाई देता था वह अब धीरे-धीरे बदल रहा है। हम अपने जीवन में जो कुछ भी हासील करते हैं, वह परिवार के सहयोग और समर्थन के कारण ही मुक्कीन हो पाता हैं।

मित्रता

भाई-बहन के रूप में घर में हर एक को अपना पहला दोस्त मिल जाता हैं, जिनसे बिना मतलब की अनेक लड़ाई होती रहती है। भारतीय परिवार में माता-पिता के बाद भावनात्मक सहारा और सुरक्षा भाई-बहन से बेहतर और कोई नहीं दे सकता। घर के बड़े-बुजुर्ग के रूप में दादा-दादी, नाना-नानी बच्चो पर सबसे ज्यादा प्रेम न्यौछावर करते हैं। व्यक्ति पर परिवार का साया न होने के कारण वह अनाथ कहलाता है और यह एक कडवा सत्य है| इसलिए समृद्ध या गरीब परिवार का होना आवश्यक नहीं पर व्यक्ति के जीवन में परिवार का होना अतिआवश्यक बन जाता है। किशोरावस्था में जब बच्चा अपने कदम रखता है तब वह सबसे अधिक

संवेदनशील स्थिति से गुज़र रहा होता है, इस दौरान परिवार बच्चे को समझने का पूरा प्रयास करता है। उसे भावनात्मक सहयोग देता है। बच्चे के अंदर हो रहे उथल-पुथल का समाधान परिवार अपनी सूज-बूझ से करता है।

निस्वार्थ भाव

एक इनसान जो सबसे बड़ा काम कर सकता है, वह है दूसरों की मदद करना। दूसरों को कुछ देना। इसी प्रकार से जब कोई निस्वार्थ भाव से अपने परिवार की मदद करता हैं तब उसे अपनों का महत्व समझता है| परिवार महत्वपूर्ण है क्योंकि वे बिना अपने स्वार्थ, प्यार के साथ अपने परिवार जनों की सहायता और उनको सुरक्षा प्रदान करते हैं; वे हमेशा अपने लोगों में अच्छाइयां देखते है और उन्हें हमेशा जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित भी करते है| भले ही हम इसे स्वयं नहीं देख पाते|

परिवार महत्वपूर्ण है क्योंकि अधिकांशतः वे ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति है जो वास्तव में आपको समझ सकते हैं तथा बुरे वक्त के चलते आपका साथ देते है। अकसर ऐसा होता है कि जब हम अपने परिवार कि सहायता करते है तब मन में यह तस्सली होती है कि हमारें बुरे वक्त में भी कोई तो होगा जो हमारा साथ अवश्य देगा| इसकी वजह है कि जब भी हम निस्वार्थ भाव से किसी की मदद करते हैं तो परिवार के रूप में ईश्वर हमारी मदत करता है। हमारे पालन-पोषण को हमारा परिवार अपनी पहली प्राथमिकता समझता है, यहाँ पर माता-पिता अपने बच्चो के पालन पोषण में कोई कमी नहीं छोडते हैं| इसके अलावा जब तक उनके

बच्चे आत्मनिर्भर नहीं हो जाते तब तक उनकी सभी जरूरतों की पूर्ति निःस्वार्थ भावना से करते है। सुबह नहलाने से लेकर जूते पहनाने तक पढ़ा-लिखा कर हमें समाज का एक शिक्षित नागरिक हीं नहीं तो एक अच्छा व्यक्ति बनाते हैं।

आर्थिक तथा संवेगात्मक आधार

कामकाजी और जिम्मेदार व्यक्ति होने के नाते हम सभी अपने परिवार को एक अच्छी जिंदगी देने के लिए काम खून पसिना एक करते हैं। हमारी गैर मौजूदगी में भी उन्हें एक आरामदायक जिंदगी मिल सके, इसके लिए हम कई उपाय करते हैं। हमारे फाइनेंशल लक्ष्य, उनकी इच्छाओं और भावी जरूरतों के इर्दगिर्द मंडराते रहते हैं। आर्थिक संकट के दौरान परिवार हीं होता है जो अपनी जमापुंजी हमें देकर सहायता करते हैं| इतना हीं नहीं बल्कि जब हमारी शिक्षा एवं कैरियर की बात आती है तब परिवार पैसों का मुँह नहीं देखता।

परिवार के सदस्य हर सुख-दुख में एक दूसरे का साथ निभाते हैं। कई बार कुछ बातों को लेकर घर के सदस्यों के बीच थोड़ी कहा सुनी और नोक-झोंक भी हो जाती है, पर परिवार तो आखिर परिवार ही होता है। हर कोई एक दूसरे को प्यार और खुशी देना चाहते हैं। बेशक! यह भावना हर किसी के मन में होती है, लेकिन थोड़ी कहा-सुनी के बाद या फिर शर्मिला स्वभाव होने की वजह से इस प्यार को बयां करना मुश्किल लगता है।

परिवार के सदस्य आपस में स्नेह, आदर, श्रद्धा, वात्सल्य, त्याग, प्रेम तथा संतान कामना आदि भावनाओं से बंधे रहते हैं। सभी सदस्यों में अपनत्व की

भावना विद्यमान रहती है। पति-पत्नी में प्रेम तथा संतान कामना की प्रवृत्ति, माता-पिता में अपनी संतान के प्रति त्याग तथा वात्सल्य की भावना, भाई-बहन में स्नेह संबधं, संतान में अपने माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति प्रेम, श्रद्धा तथा आदर के भाव पाए जाते हैं। परिवार को संगठित रखने में इन भावनाओं का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

सही मार्गदर्शन

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जीवनयात्रा के हर पड़ाव पर मार्गदर्शक की आवश्यकता पड़ती है। मार्गदर्शन की प्रक्रिया मानव जीवन के शुरुआती वर्षों से ही प्रारंभ हो जाती है। मनुष्य को सबसे पहला मार्गदर्शन माता-पिता से मिलता है। जब बाहरी प्रभावों जैसे नशीली दवाओं, शराब, साथियों के दबाव, धमकाने या किसी के बारे में नकारात्मक बातें कहने की बात आती है, तो नैतिकता के मार्ग पर आपका मार्गदर्शन करने के लिए परिवार बहुत महत्वपूर्ण होता है। हो सकता है कि परिवार हर चीज़ से आपको बचाने में सक्षम न हो, लेकिन वे कठिन समय में आपकी सहायता करने में सक्षम होंगे और आपको स्थिति से निपटने या बचने के लिए आवश्यक उपकरण देंगे। उदाहरण के लिए यदि व्यवसाय के कारण आप घर से दूर रहते है और अचानक एक दिन आपके व्यवसाय में घाटा हो जाता है तब परिवार आपको कोसता नहीं| बल्की आपको सहारा देकर सही दिशा दिखाएंगे ताकि आप अपने पैरों पर फिर से खड़े हो सकें। मार्गदर्शन एक प्रगतिशील निरंतर चलने

वाली प्रक्रिया है, जो एक व्यक्ति को जीवन लक्ष्य की ओर जाने में मदद करती है।

हालांकि केवल माता-पिता ही नहीं बल्कि घर के बुजुर्ग जैसे दादा-दादी, नाना-नानी गीता, श्रीरामचरितमानस जैसे महान ग्रंथ, महापुरुषों की जीवनियों का पाठ पढकर घर के बच्चों को प्रेरणा प्रदान कर उनका मार्गदर्शन करते हैं। प्रकृति भी हमें बहुत कुछ सिखाती है। माता-पिता, परिवार, धर्म ग्रंथ और प्रकृति की सीखों की जो लोग अवहेलना करते हैं उन्हें जीवन में बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है।

निष्कर्ष

वस्तुतः भारतीय संकृती के अनुसार परिवार इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि परिवार हमारी पहली पहचान है तथा बाह्य अथवा बुरी शक्ति से हमारी ढ़ाल के रूप में रक्षा प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त हमारे सभी जायज जरूरतों की पूर्ति परिवार करता है। परिवार द्वारा समाज का विस्तार होता है और इसी के द्वारा प्रत्येक समाज का अस्तित्व जीवित रहता है। मानव जीवन के सांस्कृतिक विकास के हर एक स्तर पर परिवार उपस्थित रहा है| देखा जाये तो परिवार ही व्यक्ति के जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए उसके व्यक्तित्व, सोच-विचार, आचार-व्यवहार आदि सभी को निर्मित करता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ. भारती शेळके, साठोत्तरी लेखिकेओं की कहानियों में परिवार, विद्या प्रकाशन, कानपुर , पृ•4

2. -वही- पृ•6

3. वेदालंकार हरिदत्त, हिन्दू परिवार मीमांसा, कल्पना प्रकाशन, कलकत्ता, पृ•1

4. -वही-पृ•4

5. हिंदी विश्वकोश, नागरीप्रचारिणी सभा प्रकाशन, पृ•12

6. -वही- पृ•12

7. David skills, international Encyclopaedia of the Social-Science, पृ•302

8. Oxford Dictionaries

9. मराठी शब्दकोश

10. भारतीय समाज, वीरेंद्र प्रकाश शर्मा,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ• 131

11. डॉ० राजबली पाण्डेय हिन्दू संस्कार सामाजिक तथा धार्मिक अध्ययन, पृ० 197

12. वही

13. डॉ. भारती शेळके, साठोत्तरी लेखिकेओं की कहानियों में परिवार, विद्या प्रकाशन, कानपुर, पृ• 12

14. -वही- पृ•14

समकालीन हिंदी महिला कहानीकारों में मालती जोशी का स्थान

प्रस्तावना

समकालीन स्त्री लेखन में स्त्री की अस्मिता की पहचान कराने की कोशिश है। आज के इस भूमंडलीकृत समाज में स्त्री के प्रति व्यावसायिक और भोगवादी नजरिया तेजी से पनप रहा है। उनकी रचनाओं में समाज की इस व्यवस्था में नारी की स्थिति को बड़ी ईमानदारी के साथ व्यक्त किया गया है। मनुष्य समाज में रहने के साथ-साथ समाज को प्रभावित करता है और खुद भी प्रभावित होता है। साहित्यकार समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है तथा समाज की परिस्थिति का प्रभाव उस पर पड़ता है।

साहित्यकार समाज को साहित्य में बांधता है और साहित्य से समाज का मार्गदर्शन होता है। इस बात को नकारा नहीं जा सकता है कि एक साहित्यकार युग दृष्टा और सृष्टा होता है। वह समाज की समस्याओं को देखता, सुनता और समझता है और उसी तरह साहित्य की सृष्टि करता है। साहित्यकार अपनी विभिन्न विधाओं

के माध्यम से सामाजिक युगीत चित्र को अंकित करने का प्रयास करता है| समाज का स्वरुप हम साहित्य में देखते है।

स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद भारतीय स्त्री के जीवन में काफी बदलाव आया| इस काल के लेखिका ने बड़ी कुशलता से स्त्री जीवन का चित्रण किया है। एक ओर जहाँ परिवार का परंपरागत स्वरुप टूटा, वहीं दूसरी ओर स्त्री जागरण के कारण नयी पाढियों का स्त्रियों के स्वरूप में अपूर्व परिवर्तन दिखाई देता है। स्वातंत्र्योत्तर स्त्री के इस रूप को लेकर नये कहानीकारों ने अनेक कहानियाँ लिखी, जिनमें पारिवारिक विघटन से लेकर स्त्री के अहं पोषित स्वरुप तक का चित्रण मिलता है। वास्तव में स्त्री का प्रतिरोध या चेतना की जागृति एक ही घटना नहीं है। इसमें सदियों से चली आ रही संघर्ष की गाथा प्रस्तुत है| कहानी साहित्य के जन्म से हिंदी साहित्य में महिला लेखिकाएँ कहानी लेखन कर रही थीं।

समकालीन लेखिकाओं ने आज के जीवन की परिवर्तनशीलता और पारिवारिक - जीवन के परिवर्तित मूल्यों को अत्यंत मार्मिकता के साथ अपने कथा-साहित्य में चित्रित किया है।

हिन्दी कहानी साहित्य में अनेक महिला लेखिकाओं का जन्म हो चुका हैं, उनमें से प्रातिनिधिक रूप से निम्नलिखित महिला कहानीकार तथा उनके कहानी साहित्य पर संक्षिप्त प्रकार से शोध की है:-

कृष्णा सोबती

कृष्णा सोबती हिंदी साहित्य की महान साहित्यकार और लेखिका के रूप में जानी जाती है। कृष्णा सोबती अपने कथा साहित्य में जिस साहसिकता का प्रतीक मानी जाती हैं वह उनके व्यक्तित्व को एक शाश्वत ऊँचाई देता है| "सोबती विभाजन व आजादी के संघर्ष के दौर से गुजरी कथाकार हैं| सो विभाजन की कचोट को उन्होंने अपनी कहानियों और खास तौर पर अपने आखिरी उपन्यास 'गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान' में भरपूर जिया है|"[14]

कृष्णा सोबती की कहानियां छोटी सही परंतु उन्होंने हर एक विशेष पात्र का बारीकी से वर्णन किया मिलता है उदहारण के लिये उनकी कहानी 'सिक्का बदल गया है' विभाजन की त्रासदी का ऐसा हिला देने वाला दृश्य पैदा करती है की रुह कांप उठे| कहानी की पंक्तियां कुछ इस प्रकार है, "शाह जी के जाने के बाद शाहनी अकेली हो गयी हैं-- बूढी असहाय पर गांव वालों से न चाहते हुए भी उसे जुदा होना पड़ रहा है उसके जाने की बात से सारा गांव रो उठा है पर वह अब और यहां रुक नहीं सकती पर जाएगी कहां? शाह जी के जाने के बाद वैसे ही वह अकेली हो गयी थी, अब न जाने कहां दाना पानी लिखा हो उसे जाना होगा क्योंकि राज पलट गया है, सिक्का बदल गया है उसके जाने की खबर से शेरे का दिल टूट गया है, इसमाइल उससे कुछ आशीषं मांगता है|" कृष्णा सोबती आधुनिक बोध की प्रमुख लेखिका है। उनकी कहानियों में प्रायः पंजाब देश की मिट्टी की गंध समायी हुई है। कृष्णा सोबती ने अपनी कहानियों में नारी जीवन की परिवर्तित

मनः स्थितियों एवम् उसकी दमित इच्छाओं को खुले रूप में साहस के साथ अभिव्यक्त किया है।

उषा प्रियंवदा

उषा प्रियंवदा हिंदी साहित्य में नई कहानी आंदोलन की प्रमुख लेखिका मानी जाती हैं। वह नई कहानी आंदोलन के दौर की चर्चित महिला कहानीकार 'मन्नू भंडारी' और 'कृष्णा सोबती' में से एक थीं। उन्होंने अपने जीवन की अर्जित अनुभूतियाँ, स्मृतियाँ और कल्पनाओं की अभिव्यक्ति को अपनी रचनाओं का विषय बनाया जिससे पाठक वर्ग जुड़ा हुआ महसूस करता हैं| उनको हिंदी साहित्य में अपनी अनुपम रचनाओं के लिए कई पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका हैं। उषा प्रियंवदा ने मध्यम वर्ग के पारिवारिक यथार्थ एवम् उसकी समस्याओं को सूक्ष्मता के साथ चित्रित किया है| सामाजिक विषमता, पति-पत्नी के सम्बन्ध और प्रेम के विविध पक्षों का उद्घाटन उनकी कहानियों में हुआ है। उनकी कहानियों में संघर्षशीलता एवम् टूटते परिवारों की मार्मिक कथा है । उनकी कहानियों में 'जिन्दगी और गुलाब के फूल' और 'वापसी' सुप्रसिद्ध हैं।

उषा प्रियंवदा की कहानियाँ वैयक्तिक और समष्टिगत दोनों ही प्रकार के मूल्यों से संबंधित है।

उदाहारण के लिए उषा प्रियंवदा की चर्चित कहानी कहानी 'वापसी' भी अकेलेपन की गाथा कहती है| कहानी की मूल संवेदना एक ऐसे व्यक्ति की विडंबना को दर्शाती है, जो अपने रिटायरमेंट के बाद बाकी के जीवन को अपने परिवार के

साथ बिताने के लिए वापस आता है, लेकिन वहां उसे केवल उपेक्षित व्यवहार मिलता है| कहानी पारिवारिक संबंधों की संवेदनहीनता पर आधारित है| लेखिका ने कहानी के माध्यम से आधुनिक परिवारों में बदलते मानवीय संबंधों की गहराई से वर्णन करती हैं| यह कहानी इतनी प्रासंगिक है, कि मूल रूप से साल 1960 में प्रकाशित होने के बाद भी समय-समय पर कई पत्र-पत्रिकाओं और संग्रहों का हिस्सा बनी|

उषा प्रियंवदा ने इस युग में मनोवैज्ञानिक कहानी की प्रवृत्ति के विकास में योगदान दिया है। आधुनिक युग में मनुष्य के सामने रोजी-रोटी की समस्या इतने कठिन रूप में उपस्थित है कि उसके परिणाम स्वरूप सामाजिक और पारिवारिक जीवन की परंपरा बिलकुल छिन्न-भिन्न हो गई है। "उषा प्रियंवदा आधुनिक-बोध की कहानीकार हैं। उनका बोध भी नया है और भाषा भी अपेक्षाकृत संयमित है।"[15]

मन्नू भंडारी

आजादी के बाद के लेखन में जब कहानी का एक अलग तरह का दौर चल रहा था तो उसे 'नई कहानी' यह नाम मिला| मन्नू भंडारी नई कहानी आंदोलन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही हैं, जिसकी शुरुआत कमलेश्वर, मोहन राकेश, राजेंद्र यादव और भीष्म साहनी जैसे लेखकों ने की थी| मन्नू भंडारी उन लेखिकाओं में से रही हैं, जिन्होंने नए दौर के बनते भारत की महिलाओं के संघर्ष और चुनौतियों को अपने लेखन के माध्यम से उजागर किया|

मन्नू भंडारी की बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने इस बदलते परिवेश में खुद को स्त्री मनोभावों की लेखिका के रूप में स्थापित किया। उस दौरान उभरते मध्य वर्ग के गुस्से और संघर्ष की झलक उनकी रचनाओं में दिखती है। आजादी के बाद लोगों में पैदा हुई इच्छाओं और आशाओं पर भी उन्होंने जमकर लिखा। उन्होंने महानगरीय जीवन में स्त्रियों की दशा का भी वर्णन किया। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है उनकी कहानी ‘यही सच है’। इस कहानी में जब संजय अपनी पत्नी दीपा को शंका भरे मन में उसके बचपन का प्यार वाला किस्सा दोहराता है तब दीपा अपने स्वर को ऊंचा कर कहती है, "अठारह वर्ष की आयु में किया हुआ प्यार भी कोई प्यार होता है भला ! निरा बचपन होता है, महज पागलपन! उसमें आवेश रहता है पर स्थायित्व नहीं, गति रहती है पर गहराई नहीं। जिस वेग से वह आरंभ होता है, ज़रा-सा झटका लगने पर उसी वेग से टूट भी जाता है।"[16] यह उस वक्त के लिए एक नई स्त्री की आवाज थी। उस समय जब भारतीय समाज संक्रमण काल से गुजर रहा था, मध्यवर्गीय परिवारों में अनेक कारणों की वजह से विघटन शुरू होने लगे| उनकी रचनाएँ पढकर उसी दौर में स्त्रियाँ घरों से बाहर निकलीं और कामकाज़ी बनीं तथा उनका जीवन बदला और सोच भी बदली| मन्नू भंडारी के साथ लंबे समय से साथ रहीं लेखिका सुधा अरोड़ा बताती हैं, "मन्नू जी के जीवन की प्रतिकूल स्थितियों से लड़ने की उनकी ताक़त और एक निर्णय लेकर उस पर अडिग रहने की उनकी ज़िद, उनके जीवन को एक समाज वैज्ञानिक के नज़रिए से विश्लेषित करने की माँग करता है, जो आने वाली सदियों

तक बीस के दशक में जन्मी औरतों के समाज, परिवेश और मूल्यों की पड़ताल के लिए एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता रहेगा|"[17]

मृदुला गर्ग

हिंदी साहित्य जगत में मृदुला गर्ग वरिष्ठ और लोकप्रिय लेखिकाओं में से एक मानी जाती हैं। साठोत्तरी महिला कथाकारों में भी मृदुला जी का नाम सबसे ऊँचा हैं। इन्होंने हिंदी साहित्य में अनेक विधाओं में साहित्य का सृजन किया जिसमें कहानियां, उपन्यास, निबंध, व्यंग्य, यात्रा वृतांत और नाटक शामिल हैं। मृदुला जी के हिंदी साहित्य में विशेष योगदान के लिए उन्हें कई सम्मान और पुरस्कारों से सम्मानित भी किया जा चुका हैं।

नारी के प्रति बदलते दृष्टिकोण लेकर लिखनेवाली मृदुला गर्ग की रचनाएँ परंपरागत स्त्री लेखन से भिन्न होकर स्त्री की बाह्य और भीतरीय जीवन को बड़ी सूक्ष्मता से देखा परखा है।

मानव जीवन के विभिन्न पक्षों का उद्घाटन कर उन्होंने हिन्दी साहित्य केलिए कुछ अविस्मरणीय रचनाएँ प्रदान कीं। 'उसके हिस्से की धूप' (उपन्यास), 'चितकोबरा' 'वंशज' 'अनित्य 'मैं और मैं' 'शहर के नाम' 'समागम' (कहानी संग्रह) इत्यादि|

सूर्यबाला

सूर्यबाला एक कथाकार एवं व्यंग्यकार के रूप में प्रसिद्धि है। उनके व्यक्तित्व का प्रभाव उनके साहित्य पर नजर आता है| इनका पूरा नाम सूर्यबाला वीरप्रतापसिंह श्रीवास्तव है। सूर्यबाला की कई कहानियाँ उनके व्यक्तिगत जीवन से प्रेरित हैं। आस-पास के तथा अपने जीवन के अनुभवों को बड़ी संवेदनशीलता से ग्रहण कर अपनी रचनाओं में उन्होंने पिरोया है| 'मातम', 'न किन्नी न', 'मानसी', 'मटियाला तीतर' जैसी अनेक कहानियाँ उनके इसी स्वभाव का परिचय देती हैं।

कहानी 'समान सतहें' में ऐसे ही परिवार का चित्रण हुआ है जो पहले संपन्न था लेकिन स्थितियों में बदलाव से आर्थिक दृष्टि से कमजोर बन गया था। कथा-नायक अपनी पत्नी से उसके चाचा की बढ़ाई सुनकर उनके घर जब जाता है, तो पाता है कि उनकी स्थिति भी नायक की अपनी स्थितियों की तरह ही है। वे दिन बीत चुके हैं जिनके बारे में उसने सुना था। उनके घर की स्थिति और कथा नायक के घर की स्थिति दोनों परिवारों को समान सतहों पर लाकर खड़ा करती है।

"व्यभिचार कहानी में नायिका को कई पाठकों के पत्र आते रहते हैं। उनमें पते की जगह अकसर लोग भूलकर 'केयर ऑफ' की जगह 'डॉटर ऑफ' या 'मिसेज' की जगह 'मिस' लिखते हैं। यह जब वह अपने पति को दिखाती है तो पति उसका मजाक उड़ाता है। ये चिट्ठियाँ ही कहीं उनमें नए तरह का प्यार एवं एक-दूसरे के प्रति विश्वास जगाती हैं। जब एक पाठक कथा-नायिका से निकटता स्थापित करता-सा उसे नजर आता है तो उसे यह उसके व्दारा व्यभिचार महसूस होता है और वह अपने पति के और करीब जाने की कोशिश करती है। साथ ही उस व्यक्ति से मिलना टालती है। वह अपनी ही व्दंव्दात्मक मानसिकता की शिकार

बन जाती है और शारीरिक मांसलता के तिलस्म को तोड़ने की कोशिश करती है।"[18]

चित्रा मुद्गल

चित्रा मुद्गल की कहानियां अनायास ही पाठकों को अपनी ओर खींचती हैं| वह लेखन के अलावा चित्रकला और महिलाओं के लिए संघर्ष करने में भी गहरी रुचि रखती हैं| चित्रा मुद्गल नए स्त्री-विमर्श की कथाकार हैं|

'जहर ठहरा हुआ' चित्राजी का एक उल्लेखनीय कहानी-संग्रह है। इसमें परम्परागत रूढियों के खिलाफ और अपनी स्वतंत्रता केलिए संघर्षरत नारियों को देखा जा सकता है। चित्राजी की प्रारंभिक कहानियों में झोंपड-पट्टी की जिंदगी में लड़नेवाली नारियों के चित्र प्रस्तुत हैं तो इस संकलन में संकलित कहानियों में उनका कथ्य बहुवर्णी हो जाता है। 'ज़हर ठहरा हुआ' कहानी इसकी अच्छी मिसाल है। यह दरअसल इस संकलन की प्रतिनिधि कहानी साबित होती है।

'अपनी वापसी' में संकलित कहानियाँ पुरानी लीक से हटकर कामकाजी नारी का भावात्मक सम्बन्ध एवं संघर्ष, उसके विभिन्न परिप्रेक्ष्य मानवीय सम्बन्धों के नए बिन्दु, बेकार नवयुवक की मानसिकता और परिवार जनों का उसके प्रति कटु व्यवहार आदि को प्रस्तुत करती हैं| संघर्षशील, उच्च, मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय नारी स्थितियों को उजागर करती हुई, खुद को उससे अलग करके समाज में अपनी पहचान कायम कर रही है। ऐसे पात्रों का सृजन चित्राजी ने इसमें संकलित

कहानियों में किया है। इसमें संकलित 'अपनी वापसी' 'मोर्चा पर' 'केंचुल' 'शून्य' 'लिफाफा' 'गर्दी' 'दरमियान' आदि कहानियाँ इसके प्रमाण हैं। तथा-कथित महिला लेखन के चालू और बोल्ड रवैये से अलग, विभिन्न परिस्थितियों से जूझती, पिसती और उबरती महिलाओं के यथार्थ से जुड़ी हुई कहानियाँ हैं 'अपनी वापसी' में।

ममता कालिया

ममता कालिया ने कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक, संस्मरण और पत्रकारिता अर्थात् साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपने साहित्य को रचा तथा अपने लेखन में रोजमर्रा के संघर्ष में युद्धरत स्त्री का व्यक्तित्व उभारा।जीवन के यथार्थ की अद्भुत विश्लेषण क्षमता ममता जी का वैशिष्ट्य है। ममता कालिया के कहानी एवं उपन्यास साहित्य में युगों-युगों से पीडित, शोषित, प्रताडित, उपेक्षित, रूढियों के बंधन में बँधी रहनेवाली नायिका यथार्थ व सजीव अनुभूतिपरक चित्र विद्यमान है। अपनी रचनाओं में वह न केवल महिलाओं से जुड़े सवाल उठाती हैं, बल्कि उन्होंने उनके उत्तर देने की भी कोशिश की हैं।

सफल दाम्पत्य जीवन के लिए आवश्यक मूल्य है समझदारी| नवविवाहिता पहले से ही संभ्रमित होती है कि जिस अजनबी पुरुष के साथ उसका सम्बन्ध आजीवन जोड़ दिया गया है वह साथी पुरुष उसकी भावनाओं को समझ लेगा या नहीं? वह अपने वैवाहिक जीवन की सफलता के बारे में सोचती है जैसे ममता कालिया की 'रजतजयंती' कहानी है| इस कहानी की नायिका अपने जीवन साथी के बारे में अटकले लगा रही है अगर विवाह के पश्चात् प्रथम मिलन की रात्रि में पति द्वारा

मिला समझदारी का व्यवहार नवविवाहिता को उसके व्यक्तित्व के संदर्भ में राहत देता है जैसे उषा प्रियंवदा की 'प्रसंग' कहानी की प्रौढ़ा नवविवाहिता पति के संयत व्यवहार से राहत की साँस लेती हैं - "फिर भी उसे खुशी थी कि पति का व्यवहार बहुत संयत और शिष्ट था उसी के साथ। वैवाहिक जीवन की सफलता प्रथम मिलन पर निर्भर होती है उस समय अगर पति-पत्नी दोनों ने एक-दूसरे को जीत लिया तो आजीवन उनका बंधन दृढ़ रहता है और वह अटूट बंधन जीवन के अन्तिम छोर तक सफलता से बंधा रहता है।"[19]

लेखिका ममता कालिया ने युगों से पीडित व त्रस्त स्त्री जीवन के विविध पहलुओं को कहानी एवं उपन्यास साहित्य का विषय बनाया है। कामकाजी महिला में अर्थप्राप्त करने के कारण आर्थिक रूप से सक्षम, आत्मनिर्भर, निर्णय लेने में स्वायत्त, समस्याओं का डटकर मुकाबला करती हुई दिखाई दे रही है। फिर भी वह पीडित, शोषित व त्रासदीपूर्ण जीवन व्यथित कर रही है।

सुधा अरोडा

सुधा अरोड़ा मूलतः कथाकार हैं| सामाजिक और मानवीय संवेदनाओं को वे दिलचस्प तरीके से विश्लेषित करतीं है| उनके पात्रों के पास आधुनिक जीवन की एक आंतरिक छटपटाहट है और यही उनकी कहानियों को एक सौंदर्य प्रदान करती है|

सुधा जी की कहानियों में अकेलापन एक यंत्रणा नहीं है, आत्मदान है। उनकी सबसे बड़ी समस्या वर्तमान के प्रति 'एडजस्टमेन्ट' की हैं। सुधा अरोडा की कहानियाँ वर्तमान भारतीय जीवन के सूक्ष्मतम स्वरूप को स्पष्ट करती है। “निर्मम संबंध की निर्मम अभिव्यक्ति है, जिसमें व्यक्ति का मरना-जीना, विवाह, तलाक आदि घटनाएँ ही महत्वपूर्ण नहीं हैं बल्कि स्वयम् व्यक्ति महत्वपूर्ण है और उसके कई चेहरे एवम् प्रिय अनौपचारिक रिश्तों का फीकापन भी है।”

'उधड़ा हुआ स्वेटर' यह सुधा अरोड़ा जी की पाठक को बांधने वाली कहानी है। कहानी का कथानक, लेखिका की सोच, प्रकृति से दूर अभिजात वर्ग के लोगों की कहानी जिसमें अंग्रेजी के शब्दों का अच्छा प्रयोग लेखिका द्वारा किया गया है। कहानी का परिचय कुछ इस प्रकार है- "यों तो उस पार्क को लवर्स पार्क कहा जाता था पर उसमें टहलने वाले ज्यादातर लोगों की गिनती वरिष्ठ नागरिकों में की जा सकती थी। युवाओं में अलस्सुबह उठने, जूते के तस्मे बाँधने और दौड़ लगाने का न धीरज था, न जरूरत। वे शाम के वक्त इस अभिजात इलाके के पंचसितारा जिम में पाए जाते थे- ट्रेडमिल पर हाँफ-हाँफ कर पसीना बहाते हुए और बाद में बेशकीमती तौलियों से रगड़-रगड़ कर चेहरे को चमकाते और खूबसूरत लंबे गिलासों में गाजर-चुकन्दर का महँगा जूस पीते हुए। लवर्स पार्क इनके दादा-दादियों से आबाद रहता था।"[20]

सुधा जी की कहानियाँ एक चित्र है, माध्यम है हमारी नृशंसता का, हमारे विश्वासधातों का, हमारे असत्य मुखोटों और घृणित कर्मो का। सामाजिक सादृश्यता

सुधा में सूक्ष्म से सूक्ष्मतर हुई है। सुधा अरोडा की कहानियाँ एक ऐसे आकुल व्यक्तित्त्व की खोज है जो अपने ही दायरे में छटपटा रहा है, कमजोर है, पर सशक्त बनकर मुक्ति भी पाना चाहता है।

मालती जोशी

समकालीन महिला कहानीकारों में मालती जोशी का स्थान महत्वपूर्ण रहा है| इनकी कहानियों में पारिवारिक परिवेश एवं आधुनिक शिक्षित स्त्री वर्ग का विशाल संसार चित्रित हुआ है|

आज की भारतीय स्त्री पर आधुनिक शिक्षा का प्रभाव होने से वह स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है। वह प्रगतिशील महिला होने के कारण खुद ही अपना रास्ता तय करना चाहती है, किंतु खोज की हर दिशा उनके व्यक्तित्व को खण्डित कर रही है| इस खोज में एक आधुनिक स्त्री के कई चित्र उभर कर आये है। परंपरागत रस्मों से आधुनिक स्त्री जैसे-जैसे मुक्त होने लगी है उसे हर दिशा में यानी परिवार के संदर्भ में जो नवीन समस्याओं का सामना करना पड रहा है, इन्ही समस्याओं का उद्घाटन मालती जोशी ने अपनी कहानियों के माध्यम से किया है।

विशेषतः मालती जी ने परिवार में स्त्री-पुरुष के संबंध, दांपत्य जीवन में पड़ी दरारें, विसंगतियों और विडम्बनाओं के बीच तनाव, पति-पत्नी के बीच अलगाव की स्थिति, घुटन तथा अविवाहित स्त्री के कारण परिवार में उपजे तनाव, अंतर्जातीय विवाह की समस्या से हो रहे पारिवारिक विघटन, आधुनिक शिक्षित

स्त्री समस्या, दहेज समस्या, भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था, आर्थिक समस्या आदि समस्याओं का चित्रण किया है|

मालती जोशी प्रमुख रूप से पारिवारिक जीवन से जुडी कहानीकार है। इनकी कहानियों का संसार भारतीय परिवारों का जीवन परिवेश है। इनकी समस्त कहानियाँ समकालीन समस्याओं का रुप पेश करती है तथा पारिवारिक परिवेश के के इर्द-गिर्द घुमती है। इनकी प्रत्येक कहानी में नयी से नयी पारिवारिक स्थितियों, नयी समस्याएँ एवं मानसिकता दिखाई देती है, जो उन्हें अन्य समकालीन महिला लेखकों से अलग साबीत करता है| मालती जोशी ने हिन्दी साहित्य की प्रायः सभी विधा में अपनी क्षमता की पहचान दी है। उन्होंने अपनी रचनाओं में मुख्यतः दाम्पत्य, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन को ही उभरा है। उनकी अधिकतर रचनाएँ भारतीय परिवेश को लेकर लिखी गयी हैं। नारी मन के अन्दर्द्वन्द्व को बड़ी मार्मिकता के साथ उन्होंने अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। इन्होंने पारिवारिक-सामाजिक विसंगतियों से जूझती स्त्री का उल्लेख भी किया है। उनकी रचनाओं में संबंधो के विघटन को भिन्न-भिन्न कोणों से प्रस्तुत किया गया है। मालती जोशी की बहुत सी कहानियों में परिजनों की स्वार्थ वृत्ति का चित्रण हुआ है।

इनका लेखन इनके आसपास घटती घटनाओं का दस्तावेज है जिनसे यह आंनदोलित होती रही हैं। इनकी कहानियाँ स्वयं अनुभूतियों का प्रतिबिंब मात्र है। उनमें कल्पना के साथ यथार्थ का गहरापन है। "मेरे आसपास जो कुछ घटता रहता है, मन अनजाने ही उसे अपने में समा लेता है। मुझे उसकी शरारत का

पता तब चलता है जब वे सभी बातें कहानी बनकर लेखनी में कुलबुलाने लगती हैं|"[21] इस प्रकारे मालती जी अपनी कहानी लिखने की प्रेरणा व्यक्त करती है| आज तक जैसे टीव्ही चॅनेल द्वारा मालती जी का साक्षात्कार लिया था तब उनसे यह प्रश्न पुछा गया, "आपकी कहानियों में बेहद विविधता है, संवेदना, करुणा, समाज और परिवार है, आप अपने कथानक और पात्रों का चयन कैसे करती हैं?"[22]

इस प्रश्न का जवाब देते हुए उन्होंने कहा, "मध्यमवर्गीय परिवार से हूं| ससुराल और पीहर दोनों ओर विशाल, लंबा चौड़ा परिवार है और जिसे अंग्रेजी में 'close knit' कहते हैं- दोनों परिवार वैसे ही हैं| पतिदेव घोर सामाजिक प्राणी थे| उनके मित्रों की संख्या भी कम न थी, इसलिये पात्र और कथानक के लिये मुझे कभी भटकना नहीं पड़ा| वैसे भी लेखक का संवेदनशील मन अपने आसपास से अनजाने ही कुछ न कुछ इकट्ठा करता रहता है| यह सामग्री उसके अवचेतन में जमा होती रहती है| कहानी लिखते समय कोई व्यक्ति, कोई बात, कोई प्रसंग अनायास याद आ जाता है और कहानी में फिट हो जाता है| मेरा हमेशा यह प्रयास रहा है कि आसपास से जो भी उठाया है उनका मेकअप इस तरह हो कि पहचाने न जा सके| अपने राग द्वेष बुनाने के लिये मैं अपनी लेखनी का प्रयोग कभी नहीं करती| यहां तक कि पात्रों के नामरण में मैं बेहद एहतियात बरतती हूं| सजग रहती हूं कि कोई परिचित नाम गलत संदर्भ में न चला जाये|"[23]

मालती जोशी सदैव पाठकों को संघर्षरत रहने तथा जीवन को हँसते-खेलते जीने की प्रेरणा देती हैं। इनकी कहानियों के पात्र विपरीत परिस्थितियों में जीते हुए भी जीवन के प्रति आशावान दृष्टि रखते हैं। मालती जोशी की दृष्टि जीवन के प्रति आस्थावान है। उनकी मान्यता है कि ज़िन्दगी बहुत बड़ी है। सिर्फ भावनाओं के सहारे उसे जिया नहीं जा सकता।

मालती जोशी कहती है- "परिवार मेरी प्राथमिकता रही है, इसीलिए मेरी कहानियों का परिवेश भी घरेलू ही है।"[24] पारिवारिक जीवन में संशय को दूर करने की बात वे करती हैं। घर में प्रेम एवं आपसी सुसंवाद को मालती जोशी ज्यादा महत्त्व देती हैं।

मालती जोशी की कहानियों में परिवार से संबंधित लगभग सभी समस्याओं का चित्रण बारीकी से हुआ है। उनकी कहानियों में परिवार से संबंधित अन्य समकालीन लेखिकाओं की तुलना में प्रमुख रूप से अद्वितीय और जो आज के युग में भी प्रासंगिक समस्याएँ पाई गई। मालती जोशी ने अपनी रचनाओं में सामाजिक जीवन के कई सन्दर्भों को समकालीन जीवन क्षणों के साथ पिरोकर प्रस्तुत किया है। परिवार और समाज के सभी विषयों को उन्होंने अपनी रचनाओं में समावेश किया है।

निष्कर्ष:

समकालीन महिला कहानीकारों में मालती जोशी का स्थान महत्वपूर्ण रहा है| इनकी कहानियों में आधुनिक शिक्षित नारी वर्ग का विशाल संसार चित्रित हुआ है| आज की भारतीय नारी पर आधुनिक शिक्षा का प्रभाव होने से वह स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है। वह प्रगतशील नारी होने के कारण खुद ही अपना रास्ता तय करना चाहती है, किंतु खोज की हर दिशा उनके व्यक्तित्व को खण्डित कर रही है इस खोज में आधुनिक नारी के कई चित्र उभर कर आये है।

परंपरागत रस्मों से आधुनिक नारी जैसे-जैसे मुक्त होने लगी है उसे हर दिशा में नवीन समस्याओं का सामना करना पड रहा है| इन्ही समस्याओं का उद्घाटन मालती जोशी ने अपनी कहानियों के माध्यम से किया है। विशेषतः स्त्री-पुरुष के संबंधों, दांपत्य जीवन में पड़ी दरारें, विसंगतियों और विडम्बनाओं के बीच तनाव, बिखराव पति-पत्नी के बीच अलगाव की स्थिति, घुटन तथा अविवाहित नारी की सूक्ष्म मनोभावनाओं का रुप बदलते संबंध की समस्या, अंतर्जातीय विवाह की समस्या, आधुनिक शिक्षित नारी समस्या, भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था, आर्थिक समस्या आदि समस्याओं का चित्रण किया है।मालती जोशी प्रमुख रूप से पारिवारिक जीवन से जुडी कहानीकार है। इनकी कहानियों का संसार भारतीय परिवारों का जीवन परिवेश है। इनकी समस्त कहानियाँ समकालीन समस्याओं का रुप पेश करती है तथा परिवार के संबंध में इर्द-गिर्द घुमती है। इनकी प्रत्येक कहानी में नयी से नयी पारिवारिक स्थितियों, नयी समस्याएँ एवं मानसिकता दिखाई देती है।

अंत: जब मालती जोशी के साहित्य को लेकर विशेष रूप से 'पारिवारिक' संदर्भ में कई आलोचक उनकी निंदा करने लगे तब उन्होंने बिना किसी संकोच से उनको करारा जवाब देते हुए कहा कि, "घरेलुपन हीं उनकी लोकप्रियता का आज मुख्य कारण बन चुका है|"

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वर्मा धीरेंद्र, हिंदी साहित्य कोश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ•143

2. डॉ नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर बुक्स, नई दिल्ली, पृ•456

3. द्विवेदी दिनेश, चर्चित महिला कथाकारों की कहानियाँ, भारतीय ग्रंथा निकेतन, दिल्ली, पृ•34

4. सोबती कृष्णा, हम हशमत भाग-1, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, पृ•7

5. -वही-पृ•7

6. द्विवेदी दिनेश, चर्चित महिला कथाकारों की कहानियाँ, भारतीय ग्रंथा निकेतन, दिल्ली, पृ•37

7. -वही-38

8. -वही-38

9. -वही-40

10. उषा प्रियवंदा, जिंदगी और फूल, पृ•127

11. डॉ. भरती शेळके, साठोत्तरी लेखिकाओं की कहानियों में परिवार, विद्या प्रकाशन, कानपुर, पृ•60

12. -वही-पृ•61

13. -वही-पृ•61

14. गर्ग मृदुला, मृदुला गर्ग की लोकप्रिय कहनियां, प्रभात प्रकाशन, पृ•22

15. सूर्यबाला, सूर्यबाला की प्रतिनिधी कहानियां, इंडिया नेटबुक्स, पृ•8

16. कालिया ममता, ममता कालिया की कहानियां, वाणी प्रकाशन, पृ•18

17. द्विवेदी दिनेश, चर्चित महिला कथाकारों की कहानियाँ, भारतीय ग्रंथा निकेतन, दिल्ली, पृ•41

18. -वही-

19. सुधा अरोडा, उधड़ा हुआ स्वेटर

20. -वही-

21. -वही-

22. डॉ. भरती शेळके, साठोत्तरी लेखिकाओं की कहानियों में परिवार, विद्या प्रकाशन, कानपुर

23.डॉ. विजयधुगे, मालती जोशी की कहानियों में चित्रित पारिवारिक परिवेश, रोली प्रकाशन, कानपुर, पृ•23

25. -वही-पृ•24

26. -वही-पृ•25

मालती जोशी की कहानियों का समीक्षात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

श्रीमती मालती जोशी जी के विभिन्न कहानी संग्रहों में इन्होंने मूलतः पारिवारिक समस्या को अपना लक्ष्य बनाया है। इनके कहानी संग्रहों में नए नैतिकबोध संकेत रूप में अभिव्यक्त हुए है। मालतीजी ने औरतों की कस्बाई मनोवृति को रेखांकित करते हुए इन्हें दूर करने का संकेत दिया भी दिया है। उनकी अनेक रचनाएँ भारतीय परिवेश को ध्यान में रखकर हीं लिखी गई है| मालतीजी की कहानियों में केवल नारी समस्या ही नहीं है बल्कि सभ्य पुरूष समाज की हिन मानसिकता को भी रेखांकित करती है। अनेक कहानियों में पुरुषों की भ्रमरवृति, पुरूषों का मनचलापन और महिलाओं की मजबूरीयों का फायदा उठानेवाले विकृत मानस को रेखांकित किया गया है। मालतीजी की कहानियों में घरेलु स्त्री, कामकाजी स्त्री, पारिवारिक तनाव से पूर्ण वातावरण, संयुक्त परिवार के विघटन के कारण, उच्च पदासिन महिलाओं की अपनी विवशताएँ विशिष्ट प्रकार की होती है, आदी इत्यादी समस्यांयों का वर्णन किया है| निम्नलिखित मालती जी की कहानियों की संक्षिप्त में समीक्षा की गई है|

1. **'प्रश्नों के भंवर'** कहानी में चित्रित सुनील और अंजू (अंजना) एक ही कॉलेज में पढ़ते है जिस के कारण दोनों एक-दूसरे से प्यार करने लगते हैं। जब

यह बात अंजू के घरवालों को पता चलती है तब वह अंजू का रिश्ता लेकर तुरंत सुनील के घर जाते हैं। सुनील के पिताजी संकीर्ण विचार धारा के व्यक्ती थे| जातीय भिन्नता के कारण वे इस रिश्तें को ठुकरा देते हैं। आगे सुनील तब अपने पिताजी की मर्जी के अनुसार अंजू के विरुद्ध किसी और से शादी कर लेता है। इसके बाद अंजू भी अपना घर बसा लेने का फैसला करती है। दस-बारह साल बाद जब अंजू उसी गांव में आती है तो वह अपनी भतीजी के शादी के कार्ड देने का बहाना बनाकर सुनील के घर जाती है।

"सुनील का घर उसका देखा हुआ था, पर उसके आसपास इतनी इमारतें खड़ी हो गयी थीं कि पल-भर को वह चकरा-सी गयी, सुनील का मकान लेकिन जरा भी नहीं बदला था। इन नये मकानों की तुलना में वह एकदम बदरंग, बदशक्ल और खस्ताहाल लग रहा था। पता नहीं क्यों, उसे देखकर सुनील के बुझे-बुझे से व्यक्तित्व की याद हो आयी, और साथ ही आँखों में घूम गया.."

जब उसे यह पता चलता है कि सुनील की पत्नी का स्वभाव कर्कशा और चिड़चिड़ा होने का कारण उसे ससुरालवालों द्वारा सुनील के लायक न होने की यातना दी जाती है। सुनील की पत्नी को सुनील के पिता, मां और बहन के साथ-साथ सारे रिश्तेदार भी इसी कारण उसे पसंद नहीं करते हैं और सुनील भी मुंह से कुछ नहीं कहता परंतु उसका व्यवहार इस बात का गवाह है। इसी कारण सुनील की पत्नी को हमेशा अपमानीत जीवन जीना पड़ता है। जब अंजू सुनील के घर से निकलने लगती है तब सुनील की पत्नी को पता चलता है कि अपनी इस दशा की जिम्मेदार अंजू ही है तो वह पूछती है, "अब यहां क्या लेने आयी है? मेरी गृहस्थी का सारा

रस तो ले गयी महारानी! अब यहाँ क्या रखा है ? तुम्हारें तो दोनों हाथों में लड्डू हैं। यहां-वहां सबकी चहेती बनी हुई हो, तभी तो चेहरा ऐसा गुलाब बना हुआ है। पर मेरे हिस्से क्या आया? सिर्फ इस घर की चौकीदारी! ये किस जनम का बैर भुनाया तुमने? मैने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था? फिर क्यों मुझे इस मिट्टी में झोंक दिया? क्यों मेरी जिंदगी मिट्टी कर दी? क्यों? आखिर क्यों ?"

इस प्रकार सुनील की पत्नी की हालत पति के विवाहपूर्व प्रेम के बोझ को स्वीकार कर चुपचाप जीने की विवशता जैसा दिखाई देता है।

2. **'अक्षम्य'** कहानी में शाम के परिवार का चित्रण किया है| उसके परिवार में बीमार पत्नी, चार बच्चे एवं माता-पिता है। उसके घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। वह अकेला कमाता है। रोज बेचारा तीन साडे तीन मील साईकिल से काम पर जाया करता| उसकी पत्नी गीता बीमार होने के कारण सारे घर की जिम्मेदारी श्याम की मां के ऊपर पड़ती है। इसी वजह से वह हमेशा चिड़-चिड़ करती रहती है और घर में झगड़ा होता रहता है। श्याम इस सारे झंझट से तंग आता है। उसकी पत्नी गीता की बीमारी के बाद सारे घर का नक्शा ही बदल जाता है। अतः श्याम को घर आने की इच्छा ही नहीं होती। इस परिस्थिति से तंग आकर आखिर गीता श्याम को बिंदू की माफी मांगने के लिए कहती है।

"बस एक बार जाकर माफी माँग लो। चलने लायक होती तो मैं भी साथ हो लेती। उनके पाँव पकड़ लेती। कहती 'दीदी, कसूर मेरा है। उसका दण्ड मेरे अबोध बच्चों को मत दो।"

उसे ऐसा लगता है कि बिंदू पर हुए अत्याचार के कारण ही उसकी हाय इस घर को लग गई। फिर श्याम को अपने सारे अपराध याद आते हैं कि किस प्रकार बिंदू दिखने में अच्छी न होने के कारण हमेशा ही उसकी अनचाही रही। अम्मा के बहकावे में आकर किस प्रकार वह उसे मारता पीटता था; और किस प्रकार झूठा लांछन लगाकर उस दिन श्याम ने उसे अधमरी होने तक पीटा था, और मायके छोड़ आया था। उसके बाद बिंदू ने तलाक के लिए अर्जी दी थी और तलाक के बाद उसने गीता से शादी की थी। गीता की बात सुनकर श्याम बिंदू से माफी मांगने के लिए उसके घर जाता है। जब वह बिंदू के घर का दरवाजा देखता है तो उस पर 'बिंदू पराशर एम.ए., पीएच.डी; एल.एल.बी., प्रिन्सिपल विद्‌या निकेतन ज्यूनियर कॉलेज' की नेमप्लेट पढ़कर चकीत हो जाता है। उसके बाद वह घर को अच्छी तरह से देखता है तो उसे बिंदू की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी होने का अंदाजा आता है। शाम बिंदू घर पर न होने के कारण वह उसे नहीं मिलता| इस प्रकार अंत में जब सभी रास्ते बंद हो जाते हैं तो शाम के मन में अपने कार्य के प्रति अपराध बोध की भावना दिखाई देती है।

3. **'सन्नाटा'** कहानी में उत्तरा के जीवन का वर्णन मिलता है| वह कॉलेज में लेक्चरर है। उत्तरा काफ़ी सुंदर होने के कारण कॉलेज में उसके रूप के हीं चर्चे थे| इसी रूप जाल ने तो गिरीश को बाँधा हुआ था| इसी के बल पर वह बिना किसी दान-दहेज के एक बडे घर की बहू बन गई| "उत्तरा की दो बेटियां है, निशी और आशु| उत्तरा को पी-एच० डी० मिली थी तब निशि मुश्किल से सोलह की रही होगी। स्टाफ मेम्बर्स पार्टी के लिए इसरार कर रहे थे। उत्तरा ने सोचा था-वहीं

कैंटीन में कुछ खिला-पिला देगी। निशि ने पार्टी का सारा प्रबंध अकेले ही घर पर किया। इन सब में उत्तरा के पति का कोइ सहयोग नहीं था| वह बिमारी का नाटक कर अपने कक्ष में विश्राम कर रहा था|

उसकी बड़ी बेटी निशी की शादी हो जाने के बाद वह अपने आपको अकेला महसूस करती है| जब उत्तरा के कॉलेज में उसकी पुस्तक को 'अकादमी पुरस्कार' मिलने पर 'सम्मान समारोह' आयोजित किया गया था। पर उस समारोह में उत्तरा को अकेले ही जाना पड़ता है, क्योंकि उत्तरा का पति अपनी पत्नी की कामयाबी न देख पाने के कारण बीमारी का नाटक कर समारोह में जाने से इंकार कर देता है। आशु भी पापा की देखभाल के कारण आने से इंकार कर देती है। यहां तक की उसे गुडलक कहने दरवाजे तक भी कोई नहीं आया।

उत्तरा अकेले ही सारे घर की जिम्मेदारी उठाती है। जीस कारण अपनों के बीच उत्तरा को अकेलापन महसूस करना पड़ता है।

4. **'हमको दियो परदेस'** कहानी में चित्रित कुसुम पर दस वर्ष की आयु में ही अपने छोटे भाई रघू की जिम्मेदारी आ जाती है। फिर कुसुम बड़ी होने के बाद उसके पिताजी उसकी शादी तय कर देते हैं। तभी एक हादसे में पिताजी की आँखे चली जाती हैं। इस प्रकार पिताजी और छोटे भाई की जिम्मेदारी के कारण कुसुम अपनी बनी-बनाई शादी से इंकार कर देती है और नौकरी ज्वाईन कर लेती है। अरसों से घर के सारे सभी महत्वपूर्ण निर्णय एवं सारा खर्च कुसुम हीं किया करती थी| अपनी शादी का खयाल दिल से निकालकर वह रघू की शादी बड़ी धूमधामसे

करती है। पर जो बहू घर में आती है वह अपने मायकेवालों के बहकावे में आने के कारण घर का सारा वातावरण ही बिगाड़ देती है।

इस स्थिति को देखकर बाबूजी कुसुम को शादी करने के लिए कहते हैं। पर जब अपनी भाभी का अत्याचार हद से बढ़ जाता है तो वह भी शादी कर लेती है। शादी के बाद कुसुम मायके आती है तो उसका अपमान ही होता है। जब बाबूजी बीमार थे तो यही हुआ था, कुसुम ने पूरे डेढ़ महीने तक अपने तन-मन-धन से सेवा करके बाबूजी को मौत के मुँह से निकाला था| जब रघु बिमार पड गया तब उसकी भाभी ने 'इस घर में आयेंगी तो भाई का मरा हुआ मुंह देखेंगी' ऐसा कहा था। जब रघू के बीमारी की खबर मिलती है तो वह मायके जाने का फैसला करती है फिर सोचती है कि वहां जाकर भी उसे भाभी के ताने सुनने पडेगें यह सोचकर वह अपना इरादा बदल देती है|

इस प्रकार कुसुम अपनी भाभी के आतंक से बचने के लिए प्रौढ़ावस्था में विवाह कर अपने ससुराल जाना पसंद करती है। वह दुःख अत्याचार से छुटकारा पाने के लिए शादी के बंधन को स्वीकारती है।

5. **'परायी बेटी का दर्द'** इस कहानी में नीतू की बड़ी बहन की शादी बड़ी धूमधाम से हुई थी। उस वक्त नीतू बहुत छोटी थी पर उसे घोड़े पर आया हुआ राजकुमार-सा दूल्हा याद है। शादी के कुछ दिनों के बाद जीजाजी दीदी से झूठ बोलकर उसे मायके छोड़ जाते हैं| इसका कारण बताते हैं कि उन्होंने घरवालों के दबाव में आकर शादी की थी और अब वह अपनी मर्जी से शादी करना चाहता हैं| यह

सुनकर घर में सब दुःखी हो जाते हैं। साथ ही कह जात है कि वह अपना फर्ज़ पूरा करेगा। हर महीने खर्च बराबर भेज देगा। लेकिन इसी बात का विरोध लड़की के पिता करते हैं| उस रात किसी ने मुँह में पानी नहीं लिया। घर में ऐसा सन्नाटा था था। किसी की मौत हो गयी हो।

"दीदी पर तो जैसे पहाड़ गिर जाता है। इतना सब कुछ होने पर भी अपनी बाकी बेटियों के भविष्य के लिए माँ दीदी को फिर ससुराल छोड़ आती है फिर दो ही महीनों के बाद दीदी की मृत्यु की खबर मिलती है। बाबूजी और भैया ने माँ को आड़े हाथों लिया था। दुःख के आवेग में वे कहनी-अनकहनी सब कह गये थे।

इस तरह अपने दीदी का हत्यारा एक दिन अचानक नीतू की सांस को मिल जाता है वह उसे लेकर घर आ जाती हैं। इसी कारण ससुरालवालों से मजबूर होकर नीतू को उसकी आवभगत करनी पड़ती है, "दीदी की हत्या जिसने की थी, वह भला आदमी मेहमानोंवाले कमरे में मजे से सो रहा है अतिथ्य का अनचाहा कर्तव्य मुझ पर आ पड़ा है|"

6. **बोल री कठपुतली'** कहानी की मुख्य पात्र आभा है| शादी के बाद आभा को हमेशा ही ससुरालवालों से प्रताड़ित होना पड़ता है। आभा के ससूर ने आभा का रिश्ता इसलिये तय करवाया था क्योंकी उसके पास एम.ए. की डिग्री है| जब उसके हाथों की मेहंदी भी नहीं उतरी तब उसके हाथों में नौकरी का प्रस्ताव लाकर रख दिया तब उसे एक देहात में जाकर अकेले रहना पड़ा। इसी बीच आभा दो बच्चों की मां हो गई उसके ससूर की मृत्यु हो गई; उसके बच्चे हमेशा अपनी दादी के

पास होने के कारण उनमें माँ के प्रति आत्मीयता बहुत कम थी। घर में कोई उसे समझने की कोशिश नहीं करता है| उसके अपने बच्चे भी नहीं|

हर महीनें की पहली तारीख के आसपास आभा के सासुर उसकी खैरियत पूछने के बहाने चक्कर लगाते। राशन-पानी दे जाते और पूरी तनख्वाह झटककर ले जाते। मुश्किल से हाथ खर्च के लिए कुछ छोड़ जाते। बहू का भी किसी बात के लिए मन करता होगा, यह उन्हें ख्याल ही नहीं था| जब उसकी सास बीमार होती है तब आभा का तबादला किया गया वह भी सास की देखभाल करने के लिए। जब वह अपने स्कूल में रम गई थी तो देवर डॉक्टर हो जाने पर अमीत ने उसे नौकरी छोड़ने के लिए कहा सब के दबाव में आकर उसे नौकरी छोड़नी पड़ी। खाली समय बिताने के लिए उसने फिर आस पास के गरीब बच्चों को पढ़ाना शुरू किया। उसके इस कार्य में आस पास की महिलाएं भी शामिल हो गई। अब वह कार्य जब महत्त्वपूर्ण मोड़ पर आ गया था तभी अमीत अपने प्रमोशन की और तबादले की ऑर्डर आभा के सामने रख देता है। तो वह अपने स्कूल के बारे में पूछती है इसी कारण पति और बच्चें उससे नाराज होते हैं क्योंकि इनमें से कोई भी उसकी मन की भावना को समझ नहीं सकता पर जब वह अपने मन का बोझ अमीत के सामने कम करने का प्रयास करती है तो अमीत उसे यह कार्य राजपुर में करने के लिए कहता है। "क्या हर बार इस तरह नये सिरे से शुरू करना संभव है, और हर बार क्या इसी तरह अपने किए-कराए को बिखेर कर अगले पड़ाव पर चल देना होगा ? क्या यही इन प्रयासों की सार्थकता है?" इस प्रकार आभा को हमेशा अपने परिवारवालों के सामने झुकना पड़ता है|

7. **'रानियां'** इस कहानी में चित्रित वंदना एम.ए., पीएच. डी. है और समाजशास्त्र की व्याख्याता भी है। जब उसके डान्स का प्रोग्राम होता है तब खांसी उसे बेजार कर देती है। तब वह गला-नाक-कान के डॉक्टर कुमार के पास जाती है। डॉ. कुमार सिर्फ उसका इलाज ही नहीं करते बल्कि उसका प्रोग्राम देखने भी आ जाते हैं, इससे इनकी मित्रता होती है। फिर दोनों साथ-साथ फिल्म, नाटक और कई प्रोग्राम देखने जाते हैं। इससे दोनों में एक नजदीकी रिश्ता बन जाता है। वंदना कुमार को चाहने लगती है, यहाँ तक की वंदना की मां भी कुमार को अपना दामाद मानने लगती है। पर एक दिन अचानक सक्सेना के द्वारा उसे पता चलता है कि कुमार की शादी हो गई है और वह दो बच्चों का बाप है। यह बात सुनकर वंदना को आश्चर्य होता है कि कुमार ने इतनी बड़ी बात की भनक भी लगने नहीं दी। आश्चर्य उसके चेहरे पर इस कदर पुत गया था कि नाटक करने में कोई तुक ही नहीं थी। फिर भी उसने संयत स्वर में कहा - "दरअसल हम लोगों के बीच इस तरह की कोई चर्चा ही नहीं हुई।"

जब वंदना अपने मन को समझाकर कुमार की खबर लेने आती है तो सक्सेना कुमार की लाचारी का कारण बताता है कि कुमार की बीबी झगड़ालू और गवांर होने के कारण वह बौद्धिक मित्रता के लिए तरसता रहा और आप से मिलने के बाद उसे अच्छा लगने लगा, यह दोस्ती बरकरार रखने के लिए उसने चुप रहना ही सही समझा| यह सब बातें सुनकर वंदना उस वक्त तो चली जाती है। फिर कभी अपनी भड़ास निकालने का तय करती है, "लौटते समय भी उसका मन

अक्रोश से लबालब था। यह तो अच्छा हुआ कि सक्सेना के अनुरोध पर उसने आज कुमार से मिलना स्थगित कर दिया था, नहीं तो शायद वह इस बमबारी को नहीं झेल पाता सचमुच शहीद हो जाता।"

7. **'आवारा बादल'** यह एक घटना प्रधान कहानी है। गोविंद अठारह साल का है फिर भी पढ़ाई में कमजोर होने के कारण अभी तक वह मॅट्रीक भी नहीं हुआ इसलिए उसके पड़ोस की औरतें अपने बेटे को उससे दूर रखना चाहती है। देशपांडे काकी तो एक दिन उसका अपमान करती है पर एक दिन उसके बेटे को गोविंद ही डूबने से बचाता है। घर आने पर अपनी सौतेली माँ का व्यवहार देखकर डूबने की बात किसी से नहीं कहता और उसे बचपन की बातें याद आती हैं। बचपन में जब माँ नई-नई आई थी तब उससे बहुत प्यार करती थी पर एक दिन उसके मुंह से गाली सुनकर जब वह उसे थप्पड़ मारती है। दादी और अड़ोस पड़ोस की औरतें माँ को गालियां देने लगती हैं। इस घटना के बाद से माँ गोविंद की तरफ ध्यान ही नहीं देती और दादी के अत्यधिक प्यार के कारण वह बिगड़ जाता है।

गोविंद घर में अपने कमरे में ही पड़ा रहता है, पर घरवालों के होते हुए भी अपने आपको अकेला महसूस करता है। उसी दिन शाम को बुआ द्वारा चोरी का इलजाम लगाने पर गुस्से से जब घर से निकल जाता है। उसे ढूंढ़ने के लिए पड़ोस के लोग आ जाते हैं उनके द्वारा उसे यह पता चलता है कि आज मां उसकी तरफ से बुआ के साथ लड़ी है। यह बात जानकर वह अपनी मां की माफी मांगने के

लिए तैयार होता है। "पता नहीं भाभी की उनसे जमकर लड़ाई हुई है। रोती जाती थी और कहती जाती थी, आपकी वजह से लड़का घर से गया है। बेचारा थाली पर से भूखा उठकर चला गया उसे कुछ हो गया, तो मैं जिंदगी भर आपका मुंह नहीं देखूंगी।" इस प्रकार अपनी मां के बारे में सुनने के बाद गोविंद और उसकी मां के बीच की दीवार गिरती है।

8. **'कोख का दर्प'** इस कहानी में चित्रित कुम्मी को अचानक अपनी कामवाली के कारण अपने परिवार की भी गोद लेने की रस्म के कारण कैसी हालत हुई थी इसकी याद आती है। कुम्मी के परिवार में मां- बाबूजी और ये पांच भाई-बहन थें। कुम्मी की बुआ बहुत अमीर थी पर उसके घर औलाद न होने के कारण वह अपने भाई के बच्चे को गोद लेना चाहती है। यह बात जब मां को मालूम होती है तो वह अपने पांचों बच्चों को आंचल में छुपाकर इससे इंकार कर देती है। बाबूजी अपने घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण एक बेटे को तो अच्छी परवरिश मिलेगी इसके लिए मां की मर्जी के खिलाफ किशु को गोद देते हैं। इससे मां हमेशा अपने बेटे के लिए तरसती दिखाई देती है। मां की उस हालत को कुम्मी ने बहुत नजदीक से देखा था।

एक दिन किशोर अचानक कुम्मी को मिलने के लिए उसके घर आ जाता है। तो वह अपने मां- बाबूजी की बूरी हालत का बयान करती है तो किशोर कहता है, "क्या सिर्फ जन्म देने से ही कोई हकदार हो जाता है ? उसने तड़प कर

पूछा उस दिन यह बात क्यों याद नहीं आयी जब मुझे एक घर से उखाड़ कर दूसरे के आंगन में फेंक दिया था ? अपने घर में मेरा रहने का हक भी जिन लोगों ने छिन लिया था, आज उन्हें अपने हक की बात करने का कोई अधिकार नहीं है दीदी।" इस बात से स्पष्ट है कि बेटे के वियोग के कारण से यहां मां व्यतीत थी उसी कारण किशु को भी वहां घुट-घुटकर जीवन बिताना पड़ा था। इस प्रकार गोद लेने की रस्म से परेशान परिवार की हालत स्पष्ट होती है।

10. 'आखिरी शर्त' यह कहानी 'मैं' शैली में लिखी गई है। इसमें लेखिका और उसकी बहन (दीदी) का चित्रण किया गया है। दीदी अपनी बेटी मधु की जल्दी-से-जल्दी शादी करना चाहती है। जब यह बात लेखिका को पता चलती है तब वह मधु जैसी ब्रिलियंट लड़की की I. A. S. की प्रीलिम की परीक्षा सर पर होने के कारण इतनी जल्दी उसकी शादी करने के खिलाफ होती है। मधु भी शादी की जल्दबाजी से नाराज हो जाती है। मधु की हालत देखकर लेखिका दीदी को समझाने की कोशिश करती है। जिस तरह उनकी शादी के बाद उनका गाना बजाना छूडवा दिया था, यहाँ तक की उन्हें गुनगुनाने भी नहीं दिया गया| वह उसे कहती है कि अपनी तरह अपनी बेटी का नुकसान मत करों| तथा पुराने विचारों को दिमाग से निकालकर उसके कैरियर की चिंता करों। "पीढ़ियां बदल गई पर हमारी मान्यताएं वहीं की वहीं हैं। हम उन्हें अम्मां-बाबूजी कहते थे, बच्चे हमे मम्मी-पापा कहते हैं। बस इतना ही फर्क आया है बाकी सब जैसा का वैसा ही है।" दीदी पर इसका कोई असर नहीं होता। घर आने पर जब लेखिका को यह पता चलता है कि उसकी

बेटी अपनी पढ़ाई छोड़कर भरतनाट्यम् की गहन शिक्षा करने के लिए तीन साल के लिए मद्रास जाना चाहती है। तब वह बेटी को वहाँ जाने की इजाजत नहीं देती क्योंकि वह जानती है कि हिंदुस्तानी लड़के स्टेज पर नाचने वाली लड़की को देखना पसंद करते हैं उससे शादी करना नहीं। "बंद करो ममा! बोर हो गई हूँ मैं तो। क्या लड़की के कॅरियर की यही एक आखिरी शर्त है? शादी ! ओ गॉड!"
अंत में अपनी बेटी के मुंह से यह सुनकर लेखिका खुद अपनी बेटी के बारे में अपने विचार सुनने के बाद शर्म से मुंह ढ़क लेती है। इस प्रकार अपनी दीदी को नसिहत देनेवाली लेखिका भी किस प्रकार खुद भी रूढ़ियों के जाल में फंसी हुई है इसका उसे आभास होता है|

11. **'शुभ कामना'** इस कहानी में राघवन साहब मंत्री द्वारा किए हुए गबन के कारण अपमानीत होते हैं। लेकिन यह अपमान उनसे सहन नहीं हो पाता जिसके कारण राघवन साहब आत्महत्या करते हैं। राघवन साहब के परिवार से मिला जुला सदानंद का परिवार है। सदानंद ईमानदार इंजिनियर है। लेकिन उसके घर की आर्थिक स्थिति भी इतनी अच्छी नहीं होती है। इसी कारण घरवालों, रिश्तेदारों में सदानंद की पत्नी गौरी को हमेशी अपमानीत होना पड़ता है। यहाँ तक की टी. वी., फ्रिज, गाडी न होने के कारण गौरी रिश्तेदारों को अपने घर आने से मना कर देती है| मंत्री साहब की असलीयत सदानंद को मालूम होने से मंत्री जी सदानंद का मुंह बंद कराने के लिए उसे प्रमोशन देकर उसका तबादला करवाते हैं। सदानंद को उसके घर की आर्थिक स्थिति उसे यह प्रोमोशन स्वीकारने के लिए मजबूर

करती है। पति का यह निर्णय गौरी को अच्छी नहीं लगती। वह अपनी नाराजी-क्षोभ स्पष्ट करती हुई कहती है, "अब वह विश्वास, वह अभिमान टूट गया है रोहित! तेरे पापा बिक गए हैं। अपना मुंह बंद रखने की कीमत लेकर चुपचाप यहाँ से जा रहें हैं।"

इस प्रकार अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए सदानंद मंत्री जी के राजनीतिक जाल में फंस जाता है। मंत्री जी की 'शुभकामना' से

प्राप्त प्रमोशन गौरी को राजनीतिक आतंक लगता है। इस आतंक के सामने झुकनेवाले पति के प्रति उसके मन में आक्रोश भरा हुआ है।

12. **'कोउ न जाननहार'** इस कहानी में चित्रित मनु की शादी बड़ी धूम-धाम से होती है, पर कुछ ही दिनों में उसके पति का देहांत हो जाता है। ससुरालवाले उसे अपशकुनी मानकर उसे वापस उसके मायके भेज देते हैं। पिताजी बड़ी दौड़ धूप कर उसे उसके पति के स्थान पर नौकरी दिलवा देते हैं। उसके बाद पिताजी की मृत्यु हो जाती हैं।

पिताजी की मृत्यु के बाद सारे परिवार की जिम्मेदारी अब मनु पर आ जाती है। मनु अपनी दो छोटी बहनों कि शादी करवाती है तथा अपने भाई को पढा-लिखाकर डॉक्टर बनाती है| फिर भी मनु ही अपने पति के मौत की जिम्मेदार है, यह बात बार-बार दौहराकर उसकी माँ उसे कोसती रहती है और गालियां भी देती है। अपने भाई और बहनों के लिए इतना सब कुछ करने पर भी वह मनु पर सेठजी के साथ गलत रिश्ता होने का लांछन लगाते हैं। अपनी माँ के श्राद्ध के दिन मनु

कहती है, "नहीं मेरी माँ तो बाबूजी के साथ विदा हो गई। अब जो घर में थी वह तुम्हारी माँ थी, एक स्वार्थी, झगड़ालू, मुंहफट, खुसट बुढ़ीया थी, जिसने मेरा जीवन नर्क बना दिया था। तुमने तो उसका श्राद्ध आज किया है। मैं तो उसका तर्पण बरसों पहले कर चुकी हूं।"

सेठजी की मृत्यु की खबर पढ़कर अनु अपनी दीदी से मिलने जाती है तब मनु अपने देवर के दो बच्चों के साथ खुशी से जीवन व्यतीत करती है।

प्रस्तुत कहानी की विधवा खुद नौकरी करके सारे घर की जिम्मेदारी उठाती है पर अंत में घरवालों की तरफ से उसे निराशा ही झेलनी पड़ती है। स्वार्थ पूर्ति के बाद रिश्तेदार उससे मुंह मोड लेते हैं। अतः उनके आतंक से बचने के लिए वह देवर के बच्चों के साथ रहती है।

13. **'संवेदना'** इस कहानी में लेखिका ने एक ऐसा परिवार का चित्रण किया है जिसमें मम्मी-पापा और उनकी छोटी बेटी शुची है| बड़ी बेटी की शादी हो जाने के कारण वह ससुराल में है। इस परिवार में दोनो बेटियां हीं होने के कारण बेटे की कमी भी दिखाई देती है। घर में शुची की शादी की तैयारीयां चल रही होती है। एक दिन जब लखनऊवालों का खत आता है कि उन्हें लड़की पसंद है और वे जल्द-से-जल्द शादी करना चाहते हैं। तब मम्मी-पापा चिंता में डूब जाते हैं क्योंकि बेटी की शादी हो गई तो वे लोग अकेले पड जाएंगे।

जब थोड़े दिनों के लिए शुची अपने ससुराल वालों के पास जाती है तो उन्हें अकेले में हीं दिन गुजारना मुश्किल हो जाता है। यहाँ तक की खाने का एक निवाला

भी उनके गले से नीचे नहीं उतरता। ऐसी स्थिति में मम्मी अपनी बड़ी बेटी का एक बेटा गोद लेना चाहती है। वह चिट्ठी भी बेटी को लिखती है लेकिन बेटी इससे इंकार करती है। यह बात जानकर पापा मम्मी पर गुस्सा हो जाते हैं। तब पापा पाल आंटी जिन्होने गोद ली हुई सोनाली अब आंटी की शादी तय हो जाने के कारण अनाथ होने वाली थी उसे गोद लेने का फैसला करते हैं। यह बात सुनकर पाल आंटी उन्हें लड़का गोद लेने की बात कहती है तो पापा जवाब देते हैं "नो सिस्टर! आय नीड ए डॉटर। वन मोर डॉटर। आप तो जानती हैं मेरे भाग्य में लड़का है ही नहीं। आप तो खुद इस बात की गवाह रही हैं। फिर अपने भाग्य से लड़ने में क्या तुक है, और यहां कौन-सी इस्टेट रखी है, जिसके लिए वारिस चाहिए। जो कुछ जमा पूंजी थी इन लड़कियों पर लुटाकर मैं तो निष्कांचन हो जाना चाहता हूं। पर जिंदगी तो आगे भी चलेगी ना। उसके लिए तो सहारा चाहिए।"

इस प्रकार अपनी बेटी की शादी हो जाने के बाद अकेले दिन गुजारने के तनाव में फंसे मां-बाप एक अनाथ बच्ची को गोद लेकर तनाव से मुक्त हो जाते हैं।

14. **'साथी'** इस कहानी के अम्मां-बापूजी अपने छोटे बेटे के पास रहते हैं। अम्मां अपनी पढ़ी-लिखी बहू से हिचकिचाने के बाद भी अपने पति की हर फरमाईश पूरी करती है। बाबूजी जब अपनी बेटी अलका को बुलाते हैं, तब बेटा बहुत नाराज होता है, यह बात अम्मां बाबूजी से छिपाती है और उस स्थिति का अकेले ही सामना करने का तय करती है। वह हमेशा बाबूजी को कमरे में ही खाना खिलाती

है क्योंकि उनकी वजह से बहू और बच्चों को खाने में दिक्कत होती है। वे अपने बड़े बेटे के घर भी नहीं जा सकते क्योंकि वहाँ बेटा-बहू दोनों भी नौकरी करते हैं, इनकी तरफ ध्यान देने को किसी के पास वक्त ही नहीं है। उनका छोटा बेटा श्याम जब अम्मां के पैरो में आयोडेक्स मलता है तो तब "अपने भाग्य पर उन्हें ईर्ष्या हो आई। कभी सोचा भी नहीं था इतनी बड़ी गृहस्थी इतनी आसानी से पार हो गई।" इसके बाद वह भगवान से इस भरे दरबार से उठाने की कामना करती है पर एकाएक उनकी आँखों के सामने बाबूजी की मूर्ति दिखाई देती है और वे सोचती हैं कि क्या वह बाबूजी को छोड़कर अकेली जा सकेगी?

15. **'औकात'** इस कहानी की मुख्य पात्र मीनू है| मीनू की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। वह अपनी मौसी के घर उसकी बेटी की शादी के लिए आई हुई है। जब से मीनू मौसी के पास आई है तब से मौसी ने उसे घर के कामों में इतना उलझा रखा है कि उसे विश्राम करने तक का भी समय नहीं था| जब उसकी उमर के सभी भाई-बहन पिकनीक पर जाते हैं तब मीनू घर पर रहकर घर का काम करती रहती है। मीनू की माँ ने अपना सारा बजट ताक पर लगाकर ली हुई साड़ी को मौसी देखती भी नहीं; क्योंकि उन्हें किसी अच्छे उपहार की अपेक्षा थी। मीनू के पास शादी में पहनने के लिए अच्छे कपड़े भी नहीं है। फिर भी उसकी सहेलियां उसे तैयार करती है। जब मीनू को मौसी की बेटी की शादी में देखकर एक अच्छा रिश्ता आता है तो मौसी उसका और उसके परिवार का अपमान करती है। इस बात पर मीनू जो रिश्ता आने की बात सुनकर खुश थी मानो वह एकदम टूट सी

जाती है। मीनू यह मान लेती है कि गरीब परिवार की लड़कियों को ऐसे अन्याय और अपमान का हमेशा सामना करना पड़ता है। "बेटे जरा पानदान उठाना। मौसाजी ने कहा। वह एकदम अज्ञाकारी सेवक की तरह उठ खड़ी हुई। यही औकात है उसकी इसी में रहना है।" अंत में मीनू को अर्थाभाव के कारण अपमान एवं अन्याय का शिकार होना पड़ता है।

16. **'खेल-खेल में'** इस कहानी में दोपहर के समय बच्चे मम्मी-पापा का खेल खेल रहे हैं। पिंकी को मम्मी बनने पर एक ही साड़ी पहनना अच्छा नहीं लगता। पिंकी अपने पापा को बहुत बड़ा आदमी समझने के कारण अपने छोटे भाई बबलू को पापा बनाने की जगह हरिया नौकर बनाती है। इसी बात से नाराज होकर बबलू खेल से बाहर होता है। नाराज बबलू को मनाने के लिए मम्मी उसे डाकू की मारपिट की कहानी सुनाती है तभी उसे एक बात समझ में आती है कि पिंकी को परियों की कहानियां पसंद है और उसका अंत भी सुखांत होना चाहिए नहीं तो उसकी आंखें बरसने लगती हैं। उसके बाद बबलू अपना हुलिया ठीक करके अपनी मिठाई लिए जयपुरवालें ताऊजी बनकर पिंकी के खेल में शामिल होने जाता है, और पिंकी को उसे खेल में लेना पड़ता है क्योंकि, "लाख कुछ हो, ताऊजी का अपमान तो किया नहीं जा सकता। बबलू भी इस बात को जानता है। दीदी अपने से तो यह सम्मान कभी नहीं देती। लेकिन जब बबलू ने अपने आप ही वह पदवी धारण कर ली तो उपाय क्या है? अब तो स्वागत करना ही पड़ेगा।" बबलू मिठाई बच्चों के लिए रखने के लिए कहता है। इस प्रकार वह खेल में शामिल हो जाता

है। शाम को पापा के आने पर पिंकी पहनी हुई साड़ी उतार फेंक देती है और पापा के पास जाती है और बबलू और पिंकी पापा को घूमने जाने का आग्रह करने लगते हैं।

17. **'मोरी रंग दी चुनरिया'** इस कहानी में चित्रित जया लेखिका के साथ कॉलेज में लेक्चरर है| एक दिन जब लेखिका अपनी बेटी की शादी तय होने की खुशखबरी सुनाने के लिए जया के घर आती है, तब उन्हें पता चलता है कि जया के घर में उसके पति की मृत्यु के कारण मातम मनाया जा रहा है| जया की शादी एक बहुत अमीर घर में तय हुई थी, लेकिन फेरे लेते वक्त दुल्हा अचानक गीर पड़ता है जिससे सबको पता चलता है कि लड़का निमपागल है और उसे मिरगी के झटके आते हैं। यह बात जानने पर जया के पिताजी जया को ससुराल भेजने से इंकार कर देते हैं। उसके बाद जया अपनी पढ़ाई पूरी कर नौकरी करने लगती है। लेखिका जया के लिए शादी का प्रस्ताव लाती है, पर जया के पिताजी इससे इंकार कर देते हैं। अब जया के घरवालों को किसी तीसरे आदमी के द्वारा जया के पति की मृत्यु की खबर मिलती है। वह खबर सुनकर जया के घर में मातम मनाया जाता है। जया के घरवाले उसे अपने पति की पांच लाख की प्रॉपर्टी हासिल करने के लिए उसे विधवा के रूप में अदालत में खड़ा कर देते हैं। जिस घर में 35 वर्ष तक अपना जीवन गुजारा था उसके लिए मजबूरन जया को यह काम करना पड़ता है। इसे स्पष्ट करती हुए वह कहती है, "हिंदुस्तानी औरत को एक सुरक्षित छत चाहिए, फिर चाहे वह पिता की हो अथवा भाई की, पति की हो अथवा बेटे की।"

लेकिन जब यह बात उसके सिर के ऊपर से गुजरने लगती है तो वह एक दिन हिम्मत करके यह कार्य करने से इंकार कर देती है और पहले जैसी जया बनकर कॉलेज जाने का फैसला करती है। "बिल्कुल आ रही हूं। जनता से कहिए, जरा होशियार रहें। उसने अपने बेलैस अंदाज में कहा।"

इस प्रकार जया के रूप में एक नारी को घरवालों के द्वारा पीड़ित होना पड़ता है इसका चित्रण किया है।

18. 'अंतिम संक्षेप' शीर्षक कहानी में चित्रित माँ अपने घर में अकेली रहती है। उन्हें सिर्फ दो बेटे हैं। एक बेटा विदेश में और दूसरा उसी शहर में अलग गृहस्थी बसाए हुए है। मनीष अपनी बीवी और दो बच्चों के साथ वहाँ रहता है। मनीष को अलग गृहस्थी बसाने का कोई मोह नहीं था पर बीवी के कारण उसे मजबूर होना पड़ा। महिमा अपने ससूर के कारण अपना अलग घर बसा लेती है। पर माँ अकेली होने के कारण वह अपने घर में किराएदार रख लेती है। पूजा और उसका परिवार उसमें रहता है। पूजा बातुनी और अच्छे स्वभाव की होने के कारण माँ उसके छोटे बच्चों की परवरिश का जिम्मा अपने ऊपर लेती है। क्योंकि उन्हें कभी अपने पोते-पोती को संभालने का मौका ही नहीं मिला। माँ का पूजा के प्रति प्यार भी महिमा को फूटी आँख नहीं सुहाता। महिमा और मनीष में हमेशा झगड़ा होता था और मनीष झगड़े के बाद अपनी माँ के पास चला आता था। यह बात महिमा को अच्छी नहीं लगती। एक दिन ऐसे ही मनीष अपनी बीवी से झगड़ा कर माँ के पास आता है। इसी बात को लेकर महिमा और माँ के बीच झगड़ा होता है और

महिमा के उलाहने सुनकर और आपसी झगड़े में महिमा सारा दोष माँ पर डाल देती है। यह सुनकर माँ अपने घर के दरवाजे अपने बेटे मनीष के लिए हमेशा-हमेशा के लिए बंद कर देती है और महिमा से कहती है, "एक बात और। और यह आखरी बात है महिमा, पति ताले में बंद करके रखने की चीज नहीं है। उसे तो मन की डोर से बांधना पड़ता है। वह चाहे कहीं भी भटकता रहें बसेरे के लिए अपने ठिकाने पर ही लौट कर आता है।" इस प्रकार इस कहानी द्वारा मालती जोशी जी ने पति-पत्नी के बीच के झगड़े का चित्रण किया है।

कहानीकार स्पष्ट करती है कि दांपत्य जीवन में पति-पत्नी में समझौतावादी और एक-दूसरे को जानने की दृष्टि होनी चाहिए।

19. 'क्षरण' इस कहानी में चित्रित विमलजी प्रधानाचार्या के पद से सेवानिवृत्त हो जाने के बाद अपने बेटे के घर में रहने चली आती है। बेटे के घर आने पर उन्हें एक-एक मुसीबत का सामना करना पड़ता है| पहले तो उनकी दोपहर की चाय बंद हो जाती है। उन्हें घर में अकेले ही पोतों के साथ रहना पड़ता है। घर की पार्टी में जब विमलजी अनेक प्रकार के व्यंजन बनाकर सबको खिलाती है, यह बात भी उनकी बहू को अच्छी नहीं लगती। उनका नौकरों को खाना देने पर बहू उन पर गुस्सा होती है। वह जब अपनी बेटी ने भेजे हुए संत्रे आस पड़ोस में बांटती है तब बहू फोन करके अपनी ननंद से उनकी चुगली करती है। इस प्रकार जिंदगी भर अपने वसुलों पर चली विमलजी को अपने बेटे के घर में इस प्रकार अपमानों का सामना करना पड़ता है, वह अपने आप को समझाती है, "वे रोएंगी नहीं। इस बार

भी अपनी पीड़ा का समुद्र चुपचाप पी जाएंगी। अपनी टूटन किसी पर जाहिर नहीं होने देंगी। वे छोटे-छोटे दुःख उनके भीतर इस तरह रिसतें रहेगे, और उनके साथ ही क्षार होती रहेंगी उनकी जिजीविषा।"

इस प्रकार इस कहानी की विमलजी अपने बेटे और बहू के बर्ताव के कारण तनावग्रस्त जीवन यापन करती है। उन्हें हमेशा अपनी इच्छा-विचार का गला घोंटकर जीना पड़ता है। बूढ़ों को समझौता भरा जीवनयापन करना पड़ता है।

20. 'मान-अपमान' प्रस्तुत कहानी में माँ को अचनाक एक दिन उनके घर में काम करनेवाली सहेली के समान आया मिल जाती है। वह उसे मिलकर अपनी पुरानी यादे ताजा करती है। किस प्रकार तलाक पाने के बाद अल्लारक्खी अपने भाई के कहने पर माँ के घर आया का काम करने आ जाती है। उसने मुन्ने को ग्यारह साल तक छाती से लगाकर पाला था। इसके बाद माँ उसे अपने घर ले आती है| माँ के डिप्टी बेटे का घर देखकर अल्लारक्खी के होश उड़ जाते हैं। माँ खाने-पीने का प्रबंध कर बहू को बुलाती है। उनकी मॉडर्न बहू इस प्रकार अच्छी तरह से सज सवरकर आती है कि अल्लारक्खी के होश उड जाते है। माँ बहू को अल्लारक्खी की पहचान अपनी सहेली के रूप में कराती है। इसी कारण बहू उनके चरण छुकर आशीर्वाद लेती है। इतना सबकुछ होने के बाद अल्लारक्खी को बहुत सी चीजों के साथ विदा किया जाता है। उनका बेटा उसी दिन घर वापस आता है और बहू के साथ बाहर जाने पर बहू उसे घर का सारा किस्सा सुनाती है| अगले क्षण बेटा घर

आकर अपनी माँ से शिकायत करता है कि उसकी इतनी अमीर घर की पढ़ी-लिखी पत्नी को एक नौकरानी के पैर छूने के लिए कहा गया इसे स्पष्ट करते हुए बेटा कहता है, "तुम बात को समझती नहीं हो अम्मां! कम से कम यही सोच लिया करों कि तुम्हारी बहू कितने बड़े घर की बेटी है ?" इस प्रकार जिसने उसे ग्यारह साल तक पाला उस माँ के समान आया को अपनी बीवी के लिए अपमानीत करता है इससे उसकी विकृत मानसिकता स्पष्ट होती है।

21. **'छीना हुआ सुख'** इस कहानी में चित्रित आनु का पति डॉक्टर है। आनु के पति की बुआ उसके ही घर में रहती है। एक दिन आनु के चार तोले के कंगन कहीं खो जाते हैं पर वह अपने पति गुस्सा करेंगे इस कारण चुप रहती है। फिर नौकर के जरिए उसे बुआ की असलीयत समझ में आती है। एक दिन अचानक जब बुआ अपनी बेटी बिन्नी के घर जाने का फैसला करती है तब उसका शक और भी बढ़ जाता है। बुआ जब अपनी सहेली से मिलने जाती है तब आनु चुपके से आकर बुआ की संदुक तलाशती है। उसमें उसे अनेक चीजों के साथ कंगन भी मिल जाते हैं, बाकी चीजें तो वह ठीक से रख देती है पर कंगन निकाल लेती है। बुआ के जाने के बाद आनु अपनी जासूसी अपने पति को सुनाती है तब वह गंभीर होकर उसे समझाता है कि किस प्रकार बुआ एक गरीब घर में ब्याही गई फिर उसके पति की मृत्यु हुई और उन्हें अपनी बेटी के साथ भाई के घर आश्रय लेना पड़ा। फिर वह अपनी पीड़ा कम करने के लिए अपना सारा गुस्सा बिन्नी पर उतारने लगी। बाबूजी को पहला दिल का दौरा पड़ने पर बुआ ने बिन्नी की शादी

की जल्दी की तो पिताजी ने अपनी हैसीयत से कुछ बढ़कर ही खर्चा किया और हर तीज-त्यौहार को बिन्नी के मान-सम्मान माँ ही करती रहीं। बुआ को कभी कुछ करने का मौका ही नहीं मिला। इसी मजबूरी के कारण उनकी अपनी बेटी को कुछ देने की इच्छा अपूर्ण ही रह गई| इसी इच्छा को पूरा करने के लिए वह घर की चीजें चुराकर अपनी बेटी को देती थी। इस प्रकार बुआ की अपनी बेटी को कुछ देने की इच्छी से वह लाचार दिखाई देती है। वह विवशतावश गलत काम करती है। वह बेटी को कुछ-न-कुछ देने का आनंद पाने की कोशिश में गलत काम एवं अपराध कर बैठती है।

22. 'मोहभंग' इस कहानी में गिरीश और सुनीता पति-पत्नी हैं। दोनों अपने विचारों, सिद्धांतों, और अहंकार के कारण एक-दूसरे के विरोधी हो गए हैं। सुनीता नए विचारों के आधार पर चलनेवाली नारी है। वह अपनी दोनों बच्चियों को हॉस्टेल भेजती है और अपना खाली समय गरीब बच्चों को पढ़ाने में गुजारती है। उसे लगता है कि, हम अपने बच्चों को हॉस्टेल में रख सकते हैं। पर गरीब बच्चों को कौन पढ़ाएगा? इसलिए वह उन्हें पढ़ाने के लिए जाती है। गिरीश को यह बात पसंद नहीं आती उसे अपनी बेटियों को हॉस्टेल में भेजना पसंद नहीं है जब जाते वक्त लड़कियां उसे बिलखती हैं तब उसे बहुत बुरा लगता है। उसे अपने बच्चों के कपड़े भी गरीब बच्चों को देना पसंद नहीं क्योंकि उनके साथ अपने बच्चों की यादें जुड़ी हुई होती हैं ऐसा उसे लगता है| इस प्रकार दोनों के विचार और सिद्धांतों में अंतर होने के कारण ही दोनों के बीच तनावपूर्ण वातावरण निर्माण हुआ दिखाई

देता है। इस प्रकार दोनों के विचारों में अंतर होने के कारण दोनों में तनावपूर्ण वातावरण निर्माण हुआ दिखाई देता है।

23. **'अपने अपने दायरे'** प्रस्तुत कहानी में एक अमीर घर की बेटी अपने पति के देहांत के घर में अपनी सास की मृत्यु पर जाती है। वह घर उसे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। पुराने लोगों के रीति-रिवाज जैसी कोई भी बात उसे अच्छी नहीं लगती। बप्पा अपनी पत्नी की मृत्यु से दुःखी है। बप्पा की उम्र हो गई है और उनके दोनों लड़के अच्छी नौकरी करते है| परंतु जरुरत पड़ने पर उन्हें अपनी पत्नी के ही गहने बेचकर पत्नी का अंतिम संस्कार करना पडा| पर बेटों को अपने पिता की हालत मालूम होने पर भी वे उन्हें पैसे की मदद नहीं करते। उल्टा माँ के गहनों की पूछताछ करते हैं। योगेश जब बप्पा को पूछता है तो बप्पा अपनी पत्नी की याद में एक साल तक गांव में ही रहने का फैसला करते हैं। फिर अपने बेटे से कहते हैं कि बाद में अगर मैं मर भी गया तो मुझे दाग यही आकर देना। यह बात सुनकर उनकी अपनी बहू सोचती है, "मरने के बाद अगर इन्हें यहीं आना है तो जीते जी इनका भार कौन उठाएगा।" इस प्रकार बेटे और बहू के व्यवहार से आतंकित पिता का चित्रण इस कहानी में हुआ है। भौतिक सुख-सुविधा की लालसा और रिश्ते-नातों में उपस्थित उत्पन्न तनाव के कारण मनुष्य के बीच की खाई बढ़ रही है।

24. 'सन्नाटा ही सन्नाटा' इस कहानी में सावित्री का चित्रण किया गया है। जिसका परिवार बहुत बड़ा है। उसके घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण सावित्री को हमेशा आभावों का सामना करना पड़ता है। उसका बेटा नरेश फौज में नौकरी करता है और दिल्ली में ही अपने परिवार के साथ रहता है। छुट्टियों में सिर्फ वे लोग गांव में सावित्री के पास आते हैं। इससे सावित्री खुश हो जाती है, पर जल्द ही नरेश को फौज का बुलावा आता है और सावित्री को अपने दिल पर पत्थर रखकर उसे जाने की इजाजत देनी पड़ती है। बहू भी अपने पति के साथ जाने की जिद्द करती है क्योंकि उसे यहाँ बहुत काम करना पड़ता है। सावित्री अभी अपने पोता-पोती से न मिल पाने के कारण इससे इंकार करती है। सावित्री अपनी छोटी बेटी और बेटे को कभी कही भी जाने का मौका न मिलने के कारण उन्हें नरेश के पास दिल्ली भेजना चाहती है पर नरेश इससे हमेशा आना-कानी करता है। जब सावित्री अपनी बहू को नरेश से यह बात कहते सुनती है, "देखो मैं तुम्हारी हर बात मान लूंगी, पर मुझे यहां रहने के लिए मत कहना। तुम हर महीने यहां पांच सौ रुपया भेजते हो मैं कुछ नहीं कहती। चाहो तो सौ-पचास और भेज दिया करना। मैं मना नहीं करूंगी लेकिन बस्स..." यह बात सुनकर सावित्री को बहुत बुरा लगता है उसे इच्छा होती है कि बहू को अभी जवाब दे, पर नरेश जो हर महीने पैसे भेजता था उससे उनके घर को बहुत सहारा मिलता था। इसी कारण सावित्री को अपना गुस्सा निगलकर बेटे और बहू को विदा करना पड़ता है। इस प्रकार आर्थिक लाचारी के कारण उसे बहू की नफरत को भी स्वीकार करना

पड़ता है। इस प्रकार आर्थिक आभावों से संत्रस्त मां का चित्रण इस कहानी में दिखाई देता है।

25. 'अतिक्रमण' इस कहानी में वसुधा की शादी किशोर के साथ हो जाती है। किशोर के माता-पिता की मृत्यु हो जाने के कारण, उसके घर में सिर्फ एक विधवा बुआ थी जिसने अपना अधिकार उस घर पर स्थापित किया था। बुआ जवानी में ही विधवा हो जाने के कारण उनकी सारी इच्छाएं अपूर्ण हीं रह गई थी और इसकी चिंता हमेशा उनके मन में थी। वसुधा के साथ कभी उन्होंने अच्छा व्यवहार नहीं किया। वसुधा का बनना-संवरना उन्हें बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। घर में हमेशा वसुधा पर एक दबाव-सा दिखाई देता था। राहुल के पैदा हो जाने पर भी उसकी देखभाल के लिए हमेशा बुआ द्वारा वसुधा को ताने सुनने पड़ते हैं। किशोर की अचनाक मृत्यु हो जाने के बाद भी बुआ वसुधा का पीछा नहीं छोड़ती। जब उन्हें वसुधा की शादी की भनक लगती है तब वह कंगन भेज देती है| जब वक्त और अवसर पर कंगन न मिलने के कारण तथा अब उनकी अवश्यकता न होने के कारण वसुधा उन्हें स्वीकार नहीं करती। वसुधा अपनी दूसरी शादी तय कर अपना बेटा राहुल अपनी बहन को गोद देती है। तो बुआ अपना घर राहुल के नाम कर वसुधा की बहन और जीजाजी को अपने घर रहने बुलाती है तो वसुधा कहती है, "यहाँ राहुल के हक की चिंता किसी को नहीं है। बुआ की तो साजिश ही यह है कि हम लोग आजीवन उस मायावी बंधन में जकड़े रहें। उन्होने जिंदगी भर शासन किया है। खाली घर में वे नहीं रह सकती।"

इस प्रकार वसुधा अपने ससुरालवालों से आतंकित दिखाई देती है। वह अपनी इच्छा और विचार से कुछ भी नहीं कर सकती। उसे अपनी छोटी-छोटी इच्छाओं को भी दबाना पड़ता है।

26. **'एक सार्थक दिन'** इस कहानी में दिलीप नामक पात्र की पढ़ाई पूरी हो गई है। वह नौकरी की तलाश में है। नौकरी न मिलने से उसे घरवालों की नाराजगी का सामना करना पड़ता है। एक दिन दिलीप ऐसे ही पिताजी के साथ लड़कर कटिंग कराने जाता है। वहाँ उसे एक मस्त मौला लड़का मिलता है, जो उसे बताता है कि आजकल पढ़े-लिखे लोगों के लिए ही नौकरी नहीं मिलती हम जैसे लोगों के लिए काम ही काम है। वह इतना ही नहीं कहता अपितु दिलीप को काम दिलाने के लिए भी ले जाता है। दिलीप भी घरवालों पर गुस्सा होकर दिन भर गैरेज में काम करता है और शाम को मिली हुई कमाई से खुश होकर घर लौटता है। घरवालें भी उसकी हीं राह देख रहे होते हैं। वह घर आकर खाना खाता है और साढ़े आठ बजें ही उसे नींद आ जाती है। "उसके मन में इस समय कोई कांटा नहीं था। वह अब थक कर सोना चाहता था। एक सार्थक दिन को इन निरर्थक कामों में खोने की उसकी इच्छी नहीं थी।" इस कहानी के जरिये लेखिका ने यह स्पष्ट किया है कि, पढ़े लिखे युवकों की अपने दर्जे का काम न मिलने के कारण और अपनी हैसियत से हल्के दर्जे का काम करने में शर्म आने के कारण ही बेरोजगारी जैसी समस्यां निर्माण होती है। परंतु अंत में कहानी का नायक अपनी योग्यता से हल्के दर्जे का काम स्वीकार कर इस परेशानी से मुक्त हो जाता है।

27. 'पूजा के फूल' यह कहानी सुरेश और उमा पति-पत्नी की हैं। उमा बीमार होने के कारण उसे हमेशा डॉक्टर के पास जाना पड़ता है। पर अस्पताल में होनेवाली बातें जैसे की मरीज की हैसियत के अनुसार मरीज के साथ किया जानेवाला व्यवहार देखकर वह दुःखी और परेशान होती है। उमा की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने से उसे भी अनेक प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसलिए वह डॉक्टर के पास जाने के लिए हिचकिचाती है। इसी बात से सुरेश और उसके बीच अनबन होती है। जब एक दिन उमा को इंजेक्शन लगाने आए डॉक्टर असलम जब बहुत कोशिश करने पर भी उसकी नस में इंजेक्शन नहीं लगा पाते तब वह उसके पैसे भी नहीं लेते और चले जाते हैं। इस प्रकार से डॉक्टर ने उनसे रुपये न लेकर अपनी ईमानदारी निभाई| आज डॉक्टरी पेशा नहीं अधिक-से-अधिक पैसे कमाने का धंधा बन गया है। अमानवीय व्यवहार और शोषण इसकी पहचान बन गई है।

28. 'तौलिए' इस कहानी में कुमुद एक साधारण से परिवार में पली-बढ़ी लड़की है। पति अमीर और सब सुख-सुविधाओं से युक्त घर मिल जाने के कारण उस पर साफ-सफाई का भूत संवार हो जाता है। वह हर वक्त घर की सफाई में ही लगी रहती है। यहाँ तक की पार्टी में या महमानों के घर जाने पर भी वह वहाँ का पानी भी नहीं पीती; इसी कारण से हमेशा उसमें और उसके पति के बीच झगड़ा होता है। परंतु कितना भी समझाने पर भी वह बाज नहीं आती। एक दिन

जब सुशी को देखने के लिए जो लोग आये थे उनमें बच्चे भी थे और बच्चों के कारण घर गंदा हो गया था। दीदी (कुमुद) मेहमानों को सिर्फ दरवाजे तक ही छोड़ने गई थी उसके तुरंत बाद उन्होंने कमरे की सफाई शुरू कर दी| मेहमानों में से एक औरत जब अपनी भुली हुई पर्स लेने के लिए वापस आती है तब वह इस प्रकार की साफ-सफाई देखकर आश्चर्य चकित हो जाती है। "उफ् उसके बाद क्या हंगामा हुआ है। जीजाजी दो घंटे तक पागलों की तरह चीखते रहें ये घर के दरोदीवार भी जैसे उनके गुस्से से दहल उठे थे। मैं तो उनके सामने पड़ी ही नहीं। दिनभर अपने कमरे में दुबकी इस घटना के संभावित परिणाम की कल्पना करती रही। शाम को, पूरे पांच घंटे के बाद मैं उतरी। देखा, बरामदे में इत्मीनान से बैठी दीदी धोबी को कपड़े गिनवा रही हैं।"

इस प्रकार इतना सबकुछ होने पर भी कुमुद पर कोई असर नहीं होता। उसका अत्यधिक सफाई का मोह अन्य परिवार के लोगों के लिए कष्ट-यातना का विषय बन जाता है।

29. 'रिश्तें' इस कहानी में अंकित मीरा, महेश और उनके दो बच्चे ऐसा परिवार दिखाया है। मीरा के घर के पास ही मेहता रहता है, जो महेश का अच्छा दोस्त है। मेहता का परिवार चंदीगड़ में होने के कारण मेहता हमेशा खाने के लिए महेश के यहाँ आता है। एक दिन मीरा, मेहता को औपचारिकता वश एक बात कह जाती है, तब महेश हमेशा उसे उसी पर खिजाता है। मेहता की बीवी आनेवाली है इसलिए मीरा और मेहता जाकर घर का सारा सामान खरीदते हैं और घर भी सजाते हैं।

मेहता की बीवी के आ जाने पर वह मीरा का घर मानो भूल हीं जाता है| तीसरे दिन जब मेहता और उसकी बीवी मीरा के घर आती है तब उसका अनदेखा व्यवहार देखकर मीरा को गुस्सा आ जाता है।

मेहता की बीवी नौकरी करने के कारण उसमें ईर्ष्या दिखाई देती है और मीरा को इसी बात से गुस्सा आता है। फिर मेहता की बीवी चली जाती है तब मेहता मीरा के घर आने लगता है, उस वक्त मीरा उसकी तरफ ध्यान नहीं देती। महेश द्वारा बहुत दिनों के बाद मेहता अपने परिवार से मिल पाने की बात सुनकर मीरा कहती है, "वह भूल गई की बेचारा मेहता पिछले दिनों कितना पराया हो गया था। उसने सहन भाव से यह स्वीकार कर लिया कि मुश्किल से चार दिन उसे परिवार का सुख मिलता है, उसे किसी के साथ बांटना नहीं चाहता तो यह स्वाभाविक ही है।"

30. 'साजिश' इस कहानी में पम्मी और उसके पति तथा ससुराल के अन्य लोगों का हमेशा झगड़ा होता था। इससे परेशान होकर पम्मी अपने मायके चली आया करती थी। मायके में भी परिवार बड़ा और कमानेवाला एक ही होने के कारण पम्मी का आना उन्हें बहुत महंगा पड़ता था क्योंकी उसे विदा करते समय उसके साथ बहुत सारा सामान भेजना पड़ता था। एक दिन जब निम्मी को देखने के लिए कुछ लोग आते हैं तो एकदम ही रोती हुई पम्मी वहाँ आ जाती है, जिससे सारे किए कराए पर पानी फेर जाता है। इससे सब लोग पम्मी पर नाराज हो जाते हैं। उससे कोई बात भी नहीं करता इससे तंग आकर वह घरवालों से इसका कारण पूछती है तो भाई उस पर टूट पड़ता है न कहनेवाली बातें भी सुनाता है। इससे दुःखी होकर पम्मी बाबूजी की तरफ देखती है तो बाबूजी कहते हैं, "सब

सुन रहा हूं बेटे," बाबूजी ने उसी तरह छत की ओर निर्निमेष देखते हुए कहा, "पर सच बात तो यह है बेटा, कि अब तुम्हारे बाप का घर कहाँ रहा? सब तो चुक गया। पेंशन जो मिलती है, वह दवाइयों के लिए ही पूरी नहीं पड़ती। बेटे के भरोसे पर जी रहा हूं। अपनी लंबी- चौड़ी गृहस्थी उसके गले मढ़कर बैठ गया हूं। उसका बोझ और कितना बढ़ाऊं?" यह सुनकर पम्मी को लगता है कि जैसे बाबूजी ने भी उसे पराया कर दिया। इसके बाद बाबूजी उसके भविष्य के बारे में न सोचकर उसे अपने ससुराल छोड़ आते हैं।

इस प्रकार पम्मी को न ससुरालवालों से और न मायकेवालों से सहानुभूति, आदार, अपनापन, सहायता मिलती है|

31. 'बोझ' कहानी में नीरू की बड़ी बहन ससुरालवालों के अत्याचार के कारण मर जाती है इस बात का चित्रण किया है| उस समय उसके बच्चों की जिम्मेदारी नीरू के परिवारवालों पर आती है। नीरू का परिवार भी बड़ा है जिसमें उसके बाद उसकी दो छोटी बहने हैं। एक दिन जब नीरू नौकरी से लौटती है तो घर का वातावरण उसे गंभीर दिखाई देता है। फिर उसे पता चलता है कि जीजाजी अब दूसरी शादी कर रहें हैं। यह बात सुनकर उसे ऐसा लगता है जैसे उसके कानों में किसी ने गरम तेल डाल दिया हो। यह बात सुनकर उसे पिछली बाते याद आती है जब वह दोनों बच्चों को छोड़ने के लिए जीजाजी के घर अपने बाबूजी के साथ गई थी। तो जीजाजी ने बच्चों को लेने से इंकार कर दिया और उनकी माँ ने नीरू को बहू बनाने का प्रस्ताव सामने रखा था, तो कितना गुस्सा आया था नीरू को और

जीजाजी ने भी इसमें अपनी सहमती दी थी। जब रात को माँ जीजाजी को दूसरी शादी करने पर गालियां दे रही थी तो बाबूजी माँ को बता देते हैं कि वे लोग नीरू के बारे में भी पूछ रहें थे। यह बात सुनकर माँ एकदम से कहती है कि आपने इस रिश्तें से मना क्यों कर दिया, "बेवकूफी इसमें क्या है जी ठीक ही तो कहती रही हूं। क्या खोट है जगदीश में ? जाना पहचाना है तहसीलदार है। नौकर-चाकर हैं, पैसा टका है और क्या ढूंढ़ते हैं हम। उम्र थोड़ी ज्यादा है पर अब सभी कुछ तो मिल नहीं सकता।" इस प्रकार अपनी दीदी के हत्यारे आदमी के साथ मां अपनी आर्थिक लाचारी के कारण मेरी शादी करने के लिए तैयार है यह बात सुनकर नीरू फूट-फूट कर रोने लगती है।

32. 'अपराजीता' इस कहानी में लेखिका की छोटी बहन की सहेली अंजू का चित्रण है। अंजू का परिवार गरीब था और घर में भाई-बहनों की संख्या बहुत थी। अंजू बचपन से ही अपनी विचित्र मानसिकता के कारण दूसरों पर शाब्दीक वार करने का मौका खाली नहीं जाने देती थी। हमेशा वह लेखिका की छोटी बहन पम्मी को चिढ़ाती रहती थी। अंजू का एक ही फिरका पम्मी के सारे किए कराए पर पानी फेर देता था। लेकिन जब अंजू को लेखिका के द्वारा पम्मी के बारे में पता चलता है तो अंजू पम्मी के साथ तुलना नहीं करना चाहती। इसका उत्तर देते हुए अंजू कहती है कि हमारे "माँ-बाप ने हमें सिर्फ जन्म दिया है। हमारे भविष्य के बारे में नहीं सोचा इसलिए वह खुद नौकरी करके छोटे चार भाई-बहनों को पढ़ा रही है और बड़ी बहनों की शादी भी उसी ने की है।" इतना सबकुछ करने पर भी उसकी

माँ उसकी शादी के बारे में नहीं सोचती इस प्रकार अपनी स्थिति का बयान करने पर लेखिका को अंजू के बारे में ऐसा लगता है, "संसार को तुच्छ समझनेवाली, हमेशा अपने पर गर्व करनेवाली, अंजू के लिए मन में श्रद्धा जाग रही थी। लग रहा था यह उसका अधिकार है क्योंकि उसने विषम परस्थितियों के बीच से अपना रास्ता खुद बनाया है अपने साथ चार व्यक्तियों का निर्माण किया है उसने दया की भीख को ठुकराकर हमेशा अपने कृतित्व का सहारा लिया है। सचमुच आज भी वह 'अपराजीता' है|" परिस्थिति के सामने न झुकनेवाली अंजू 'अपराजीता' है।

33. 'विदा'

प्रस्तुत कहानी में चित्रित जगत और सुषमा की मुलाकात लेखिका के घर में हुई थी। फिर उनमें नजदीकियां बढ़ती गई। एक दिन वे दोनों लेखिका के पास शादी की बात करने चले गए। यह बात सुनकर वह अपने पति के साथ सुषमा के घरवालों से बात करने चली जाती है। सुषमा के पिता इस रिश्ते से इंकार कर देते हैं। इससे नाराज होकर जगत और सुषमा भाग कर शादी करते हैं और इसीकारण सुषमा के घरवालें लेखिका के घर के साथ अपना रिश्ता तोड़ देते हैं। इससे उसे बहुत दुःख होता है। एक दिन जब सुषमा और जगत पहली बार उनके घर आनेवाले हैं उस दिन सुषमा की माँ चुपके से आकर उसे सुषमा की झोली में सुपारी-चावल डालने के लिए कहती है। "इतनी-सी बात मुझ बुढ़ीया की रख लो बिटिया घर-वर तो जिसके भाग्य में होता है वहीं मिलता है। पर कन्या तो कन्या ही रहती है। उसे कभी भी सूने विदाई नहीं देनी चाहिए, अशुभ होता है। फिर आज वह पहली

बार पीहर आ रही है। अपने भाई-भाभी के घर आ रही है। करोगी न इतना काम ?" इस प्रकार प्रेम-विवाह के कारण रिश्तों में दरारे पड़ती हैं, और एक माँ को इस प्रकार दूसरों के जरिए अपनी बेटी को 'विदा' करना पड़ता है।

34. 'ऊब' इस कहानी में चित्रित सुमन का पति दूसरे शहर में नौकरी करता है और वहीं रहता है। जिसके कारण घर में सुमन को अनेक तकलिफों का सामना करना पड़ता है। पति घर में न होने के कारण सास और ननंद उसे बहुत परेशान करती हैं। सारे घर का काम उसी को करना पड़ता है, ऊपर से ताने भी सुनने पड़ते है।पहले ननंदों की शादी के लिए और अब देवर की पढ़ाई के लिए नरेश शहर में रहता है ताकी वहाँ कमाकर घर पैसे भेज सके। इसलिए वह अपनी पत्नी सुमन को शहर नहीं ले जा सकता। इतनाही नहीं तो जब नरेश छुट्टियों में घर आता है तो सुमन की सास-ननंद उसके खिलाफ नरेश को भड़काती हैं और इसीसे झगड़ा शुरू हो जाता है। इस प्रकार घर की रोज की झंझटों से सुमन इतनी परेशान हो जाती है कि नरेश की चिट्ठी पढ़ने की भी उसकी इच्छा नहीं होती| यहाँ तक की सवेरे मिली हुई चिट्ठी की याद उसे तब आती है जब ननंद रात को चिट्ठी लाकर देती है। "पत्र हाथ में लेकर बड़ी देर तक सुन्न होकर बैठी रहीं! कैसी होती जा रही है वह, दिन भर उसे चिट्ठी पढ़ने की याद ही न आई। पहले क्या वह क्षणभर भी रुक पाती थी। पत्र हाथ में आते ही कमरे में भाग आती थी वह रसोई में होती तो आटा सने हाथों से ही खोल लेती तब कोई न कोई दया करके उसे उतनी देर की छुट्टी दे ही देता।" इस प्रकार यहाँ शारीरिक दूरी के कारण मानसिक

दूरी भी दिखाई देती है। पति और ससुरालवालों से पीड़ित सुमन दांपत्य एवं पारिवारिक जीवन से 'ऊब' गई है।

35. 'एक शहादत एक फलसफा' प्रस्तुत कहानी में चित्रित अनिल और रजनी पति-पत्नी हैं। यह शादी अनिल की मर्जी के खिलाफ होने के कारण अनिल अपनी पत्नी की तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं देता। एक दिन अचानकर अनिल को शकुन दिखाई देती है जिससे वह बहुत प्यार करता था। शकुन अनिल से अपने पति और बेटी की पहचान करा देती है। शकुन को अपने पति के साथ इतना खुश देखकर अनिल को गुस्सा आता है। उसे वह सारी बातें याद आती हैं कि किस प्रकार शकुन उससे प्यार करती थी, घरवालों के दबाव में आकर उसने कैसे कौशल से शादी कर ली और अनिल को भी अपनी मां के दबाव में आकर रजनी से शादी करनी पड़ी पर अनिल का रजनी के साथ रिश्ता सिर्फ, "दरअसल वह रजनी को पत्नी के रूप में नहीं मां की बहू के रूप में ब्याह लाया था और इसी तरह निभा भी रहा था। सब कुछ जैसे मात्र कर्तव्य हो।"

फिर और एक बार अनिल को शकुन रास्तें में मिल जाती है तो वह अपनी नाराजी व्यक्त करता है। तब वह कहती है कि पुरानी बातों को याद रखने से तकलीफ ही होती है। अपने दुःख को भूलकर अपनी जिंदगी जीनी पड़ती है और कौशल को देखकर कहती है "इन्हें देखो अनिल इन सब बातों में इनका क्या दोष है? फिर इनके जीवन में विष घोलने का मुझे क्या अधिकार है ?" इस प्रकार शकुन की

बातें सुनकर अनिल भी अपने प्यार को भूलकर रजनी के साथ नए जीवन की शुरुआत करता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मालती जोशी की अधिकांश कहानियों में रक्त संबंधो के आधार पर पिता, पुत्र, भाई तथा बहन, बेटी,माँ, ननंद, आदि का चित्रण हुआ है। अप्रत्यक्ष रूप से रक्त संबंधो के आधार पर चाचा, मामा, बुआ, मौसी का चित्रण हुआ है। इनके अलावा ताऊ, दादी, फूफा आदि का भी चित्रण प्रस्तुत हुआ है। परिवेश के आधार पर मित्र और सहेली का चित्रण भी हुआ है। व्यसनी, जिद्दी, अहंकारी, लापरवाह तथा स्वाभिमानी रूपों में इन सब का चित्रण हुआ है। यह सभी रूप परिवार के प्रति पिता की भूमिका तथा माँ की भूमिका स्पष्ट करते हैं। एक पुत्र होने का दायित्व, कहानियों में परिवार से बिछुड़ने के कारण बिखरी मानसिकता वाले पुत्र, माँ की आज्ञा से बढ़कर पत्नी का पक्ष लेने वाला पुत्र का भी चित्रण हुआ है।

लेखिका ने कहानियों में ऐसे प्रसंग चित्रित किए हैं जो अभी भी प्रासंगिक हैं। मालती जोशी की कहानियों में परिवार का बोझ उठाने वाली, विवाह की उम्र पारकर गई तथा विपरीत परिस्थिति का सामना करते हुए थकी, हारी, नौकरी करने वाली, परिजनों के स्वार्थ को जानती हुई उनमें रहने के लिए विवश पुत्री का चित्रण प्रस्तुत हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ

1. जोशी मालती, आखिरी शर्त, राजेश प्रकाशन, दिल्ली
2. -वही-पृ•40-41
3. -वही-पृ•54
4. -वही-पृ•85
5. -वही-पृ•105
6. -वही-पृ•112
7. -वही-पृ•120
8. -वही-पृ•127
9. जोशी मालती, बोल रि कठपुतली, किताब घर, नई दिल्ली, पृ•17
10. -वही-पृ•29
11. -वही-पृ•36
12. -वही-पृ•55
13. -वही-पृ•63
14. -वही-पृ•84
15. -वही-पृ•93
16. -वही-पृ•115
17. -वही-पृ•125
18. -वही-पृ•136
19. -वही-पृ•153

20. -वही-पृ• 159

21. -वही-पृ• 167

22. जोशी मालती, मालती जोशी की लोकप्रिय कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ•3

23. -वही-पृ•11

24. -वही-पृ•26

25. -वही-पृ•32

26. -वही-पृ•41

27. -वही-पृ•59

28. -वही-पृ•66

29. -वही-पृ•72

30. -वही-पृ•83

31. -वही-पृ•97

32. -वही-पृ•113

मालती जोशी की कहानियों में चित्रित पारिवारिक समस्याएं

प्रस्तावना

प्राचीन भारत में स्त्री को समाज में ऊँचा दर्जा दिया गया। परिवार में कोई भी धार्मिक समारोह उनकी भागीदारी के बिना पूरा नहीं माना जाता था। उन्हें परिवार की देवी 'गृह लक्ष्मी' कहा जाता था। परंतु अब वह निचले स्थान पर आ गयी है। द्रविड़ों से आर्य जाति की पवित्रता बनाए रखने के लिए उन पर कई तरह के प्रतिबंध लगाए जाने लगे।स्त्री अब एक मुक्त व्यक्तित्व नहीं रही, बल्कि पुरुष की दासी बन गयी। मानव-निर्मित कानून और पुरुष के दृष्टिकोण ने उसके भाग्य का फैसला किया जाता है|

पारिवारिक जीवन की गाड़ी सदस्यों के त्याग, प्रेम, स्नेह, सेवा, परस्पर आदर भाव आदि पर चलती आ रही है। परिवार को सहअस्तित्व, सामूहिक जीवन, सेवा और सहिष्णुता की पाठशाला माना गया है, किंतु जब परस्पर के संबंध स्वार्थपूर्ण, संकीर्णता, ईर्ष्या से भर जाते हैं तो परिवार नरक की साक्षात् अभिव्यक्ति के रूप में प्रकट हो जाते हैं। पारिवारिक जीवन की दुर्दशा का मुख्य कारण है व्यावहारिक जीवन की शिक्षा का अभाव। लड़के और लड़कियों को अनुभवी वृद्ध गुरुजनों के सम्पर्क में रहकर व्यावहारिक जीवन में जीने की जो शिक्षा मिलनी चाहिए वह नहीं मिलती। इसका कारण है पारिवारिक विघटन| विवाह से पहले कन्या को यह शिक्षा नहीं मिलती कि उसे पति- गृह में जाकर कैसे जीवनयापन करना है, उसका

कर्तव्य- उत्तरदायित्व क्या है और यही बात लड़कों के संबंध में भी है। पारिवारिक जीवन की शिक्षा का अभाव ही गृहस्थ जीवन की दुर्दशा का मूल कारण बनता है| मालती जोशी जी के विभिन्न कहानी संग्रहों में इन्होंने पारिवारिक समस्यां एवं समसामयिक नारी समस्या को अपना केंद्र बिंदू बनाया है। प्रस्तुत अध्याय में मालती जोशी की कहानियों में चित्रित समस्याओं का उल्लेख किया है|

1. रूढ़िवादी मानसिकता

रूढ़िवाद सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत व्यवहृत एक ऐसी विचारधारा है जो पारंपरिक मान्यताओं का अनुकरण तार्किकता या वैज्ञानिकता के स्थान पर केवल आस्था तथा प्रागनुभवों के आधार पर करती है। यह सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक मान्यताओं का समुच्चय है जो चिरकाल से प्रचलित मान्यताओं और व्यवस्था के प्रति सम्मान को बढ़ावा देती है। यह विचारधारा नए और बिना आज़माए हुए विचारों और संस्थाओं को अपनाने के बजाय पुराने और आज़माए हुए विचारों और संस्थाओं को क़ायम रखने का समर्थन करती है। इस बात का उदहारण हम मालती जोशी की कहानी 'आखिरी शर्त' में हम देख सकते है| किस प्रकार लेखिका की दीदी अपनी बेटी मधु की जल्द-से-जल्द शादी करना चाहती है। जबकी वह जनती है कि उसकी बेटी I. A. S. परीक्षा की तैयारी कर रही है। मधु भी शादी की जल्दबाजी से नाराज हो जाती है। मधु की हालत देखकर लेखिका दीदी को समझाने की कोशिश करती है। वह कहती है, "पीढ़ियां बदल गई पर हमारी मान्यताएं वहीं की वहीं हैं। हम उन्हें अम्मां-बाबूजी कहते थे, बच्चे हमे मम्मी-पापा कहते हैं। बस इतना ही फर्क आया है बाकी सब जैसा का वैसा ही

है।" किंतु यह सब व्यर्थ चला जाता है| घर आने पर जब लेखिका को यह पता चलता है कि उसकी खुदकी बेटी अपनी पढ़ाई छोड़कर भरतनाट्यम् की गहन शिक्षा करने के लिए तीन साल के लिए मद्रास जाना चाहती है। तब वह बेटी के निर्णय के खिलाफ़ जो जाती है| क्योंकी उसकी मान्यता यह होती है "हिंदुस्तानी लड़के स्टेज पर नाचने वाली लड़की को देखना पसंद करते हैं उससे शादी करना नहीं|" इस प्रकार अपनी दीदी को नसिहत देनेवाली लेखिका भी किस प्रकार रूढ़ियों के जाल में फंसी हुई है, इसे दिखाकर कहानीकार स्पष्ट करती है कि प्रगतिवादी-सुधारवादी होने का ढोंग करनेवाले संघर्ष का मैदान छोड़कर समझौतावादी बनते हैं। उनका प्रगतिवाद औरों के आचरण के लिए होता है।

2. **घरवालों एवं ससुरालवालों से प्रताडित स्त्री**

आज के इस युग में स्त्री पर अक्सर किसी न किसी रूप में अत्याचार और हिंसा होती रहती है। उन्हें तरह-तरह की यातनाएॅ दी जाती हैं, लेकिन इस पर कोई प्रकाश नहीं डालता। ऐसी घटनाओं की कमी नहीं है जब हमारे देश में कई स्थानों पर खास कर घरवालों से लेकर ससुरालवालों तक स्त्री को एक कठपुतली के समान माना जाता है| कभी-कभी उन्हें अपशकुनी, चुड़ैल अथवा पनोती भी कहा जाता है। उन्हें अपने भाग्य के भरोसे छोड़ दिया जाता है। उनके बचाव में कोई नहीं आता| उसे खुद अपनी परिस्थियों से लडना पडता है| कुछ इस प्रकार मालती जी अपनी

कहानियों में घरवालों एवं ससुरालवालों से प्रताडित स्त्री का उल्लेख करती है| उनकी कहानी 'मोरी रंग दी चुनरिया' में जया लेखिका के साथ कॉलेज में लेक्चरर है| एक दिन जब लेखिका अपनी बेटी की शादी तय होने की खुशखबरी सुनाने के लिए जया के घर आती है, तब उन्हें पता चलता है कि जया के घर में उसके पति की मृत्यु के कारण मातम मनाया जा रहा है| जया की शादी एक बहुत अमीर घर में तय हुई थी, लेकिन फेरे लेते वक्त दुल्हा अचानक गीर पड़ता है जिससे सबको पता चलता है कि लड़का निमपागल है और उसे मिरगी के झटके आते हैं। यह बात जानने पर जया के पिताजी जया को ससुराल भेजने से इंकार कर देते हैं।कुछ साल बाद जया के घरवालों को किसी तीसरे आदमी के द्वारा जया के पति की मृत्यु की खबर मिलती है तब वह खबर सुनकर जया के घर में मातम मनाया जाता है। जया के घरवालें उसे अपने पति की पांच लाख की प्रॉपर्टी हासिल करने के लिए उसे विधवा के रूप में अदालत में खड़ा कर देते हैं। जिस घर में 35 वर्ष तक अपना जीवन गुजारा था उसके लिए मजबूरन जया को यह काम करना पड़ता है। इस प्रकार जया के रूप में एक स्त्री को घरवालों के द्वारा पीड़ित होना पड़ता है इसका चित्रण मालती जी ने इस कहानी में किया है। इसी प्रकार उनकी और एक कहानी 'परायी बेटी का दर्द' कहानी में चित्रित नीतू की बड़ी बहन की शादी बड़ी धूमधामसे होती है। शादी के कुछ दिनों के बाद जीजाजी दीदी से झूठ बोलकर उसे मायके छोड़ जाते हैं| इसका कारण बताते हैं कि उन्होंने घरवालों के दबाव में आकर शादी की थी और अब वह अपनी मर्जी से शादी करना चाहते हैं| यह सुनकर घर में सब दुःखी हो जाते हैं। उस समय दीदी पर तो जैसे

पहाड़ गीर जाता है। इतना सब कुछ होने पर भी अपनी बाकी बेटियों के भविष्य के लिए माँ दीदी को फिर ससुराल छोड़ आती है फिर दो ही महीनों के बाद दीदी के मृत्यु की खबर मिलती है। तो इस प्रकार लेखिका कि दीदी को मौत के मुंह में धकेला जाता है| उपर्युक्त समस्या का 'साजिश' यह कहानी एक भी अच्छा उदाहरण है, जिसमें पम्मी और उसके पति तथा ससुराल के अन्य लोगों का हमेशा झगड़ा होता था। इससे परेशान होकर पम्मी अपने मायके चली आती है| मायके में परिवार बड़ा और कमानेवाला एक ही होने के कारण पम्मी का बार-बार आना उन्हें बहुत महंगा पड़ता था| एक दिन जब निम्मी को देखने के लिए कुछ लोग आते हैं तो एकदम ही रोती हुई पम्मी वहाँ आ जाती है, जिससे सारे किए कराए पर पानी फेर जाता है। इससे सब लोग पम्मी पर नाराज हो जाते हैं। उससे कोई बात भी नहीं करता| इससे तंग आकर वह घरवालों से इसका कारण पूछती है तो भाई उस पर टूट पड़ता है| इससे दुःखी होकर पम्मी अपने बाबूजी की तरफ देखती है तो बाबूजी कहते हैं, "सब सुन रहा हूं बेटे," बाबूजी ने उसी तरह छत की ओर निर्निमेष देखते हुए कहा, "पर सच बात तो यह है बेटा, कि अब तुम्हारे बाप का घर कहाँ रहा? सब तो चुक गया। पेंशन जो मिलती है, वह दवाइयों के लिए ही पूरी नहीं पड़ती। बेटे के भरोसे पर जी रहा हूं। अपनी लंबी- चौड़ी गृहस्थी उसके गले मढ़कर बैठ गया हूं। उसका बोझ और कितना बढ़ाऊं?" यह सुनकर पम्मी को लगता है कि जैसे बाबूजी ने भी उसे पराया कर दिया। इसके बाद बाबूजी उसके भविष्य के बारे में न सोचकर उसे अपने ससुराल छोड़ आते हैं।इस प्रकार पम्मी

को न ससुरालवालों से और न मायकेवालों से सहानुभूति, आदार, अपनापन तथा सहायता मिलती है।

3. **वात्सल्य भाव की कमी**

वात्सल्य का भाव मनुष्य के क्रिया-व्यापार का प्रमुख प्रेरक और निर्धारक है। वात्सल्य भाव, दया, पालन धार्मिकता, ममत्व, स्नेह आदि का सम्मिलित रूप है। यदि दांपत्य प्रेम विवाह बंधन को दृढ़ बनाता है, तो वात्सल्य प्रेम पारिवारिकता को मजबूत आधार प्रदान करता| मालती जोशी की कहानी 'अपराजीता' में उन्होंने वात्सल्य भाव की कमी का चित्रण किया है| इस कहानी में लेखिका की छोटी बहन की सहेली अंजू का चित्रण है। अंजू का परिवार गरीब था और घर में भाई-बहनों की संख्या बहुत थी। अंजू बचपन से ही अपनी विचित्र मानसिकता के कारण दूसरों पर शाब्दीक वार करने का मौका खाली नहीं जाने देती थी। हमेशा वह लेखिका की छोटी बहन पम्मी को चिढ़ाती रहती थी। लेकिन जब अंजू को लेखिका के द्वारा पम्मी के बारे में पता चलता है तो अंजू पम्मी के साथ तुलना नहीं करना चाहती। इसका उत्तर देते हुए अंजू कहती है कि हमारे "माँ-बाप ने हमें सिर्फ जन्म दिया है। हमारे भविष्य के बारे में नहीं सोचा इसलिए वह खुद नौकरी करके छोटे चार भाई-बहनों को पढ़ा रही है और बड़ी बहनों की शादी भी उसी ने की है।" इतना सबकुछ करने पर भी

उसकी माँ उसकी शादी के बारे में नहीं सोचती इस प्रकार अपनी स्थिति का बयान करने पर लेखिका को अंजू पर तरस आता है| इस प्रकार लेखिका ने एक बेटी कि अपने माँ-पिता का प्रेम न मिलने पर उसकी उपर्युक्त मानसिकता का चत्रण किया है|

दुसरी कहानी 'आवारा बादल' यह एक घटना प्रधान कहानी है। गोविंद अठारह साल का है फिर भी पढ़ाई में कमजोर होने के कारण अभी तक वह मॅट्रीक भी नहीं हुआ इसलिए उसके पड़ोस की औरतें अपने बेटे को उससे दूर रखना चाहती है। देशपांडे काकी तो एक दिन उसका अपमान करती है पर एक दिन उसके बेटे को गोविंद ही डूबने से बचाता है। घर आने पर अपनी सौतेली माँ का व्यवहार देखकर डूबने की बात किसी से नहीं कहता और उसे बचपन की बातें याद आती हैं। बचपन में जब माँ नई-नई आई थी तब उससे बहुत प्यार करती थी पर एक दिन उसके मुंह से गाली सुनकर वह उसे थप्पड़ मारती है। दादी और अड़ोस पड़ोस की औरतें माँ को गालियां देने लगती हैं। इस घटना के बाद से माँ गोविंद की तरफ ध्यान ही नहीं देती और दादी के अत्याधिक प्यार के कारण वह बिगड़ जाता है। गोविंद घर में अपने कमरे में ही पड़ा रहता है, पर घरवालों के होते हुए भी अपने आपको अकेला महसूस करता है। उसी दिन शाम को बुआ द्वारा चोरी का इलजाम लगाने पर गुस्से से घर से निकल जाता है। उसे ढूंढ़ने के लिए पड़ोस के लोग आ जाते हैं उनके द्वारा उसे यह पता चलता है कि आज मां उसकी तरफ से बुआ के साथ लड़ी है। यह बात जानकर वह अपनी मां की माफी मांगने के

लिए तैयार होता है। इस प्रकार अपनी माँ के बारे में सुनने के बाद गोविंद और उसकी माँ के बीच की दीवार गिरती है।

4. आर्थिक स्थिति की तंगी

भारतीय परिवारों में आर्थिक व्यवस्था विशेष रूप से आधुनिक युग में गृहस्ती सुख के लिए अनिवार्य है। इसकी व्यवस्था का उत्तरदायित्व माँ अन्यथा पत्नी पर है। अर्थ का अर्जन न भी हो तो उसका संग्रह और नियोजन जितनी कुशलता से एक स्त्री कर सकती है, उतना पुरुष नहीं। अर्थात् धन का अभाव परिवारों में सबसे बड़ा पारिवारिक तनाव का कारण माना गया है। मालती जोशी ने ऐसे हीं आर्थिक समस्यां के कारण उत्पन्न पारिवारिक तनावों को अपनी कहानियों में रेखांकित किया है। उनकी कहानी 'शुभ कामना' इस कहानी में राघवन साहब मंत्री द्वारा किए हुए गबन के कारण अपमानीत होते हैं। लेकिन यह अपमान उनसे सहन नहीं हो पाता जिसके कारण राघवन साहब आत्महत्या करते हैं। राघवन साहब के परिवार से मिला जुला सदानंद का परिवार है। सदानंद एक ईमानदार इंजिनियर है, लेकिन उसके घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होती है। इसी कारण घरवालों, रिश्तेदारों में सदानंद की पत्नी गौरी को हमेशी अपमानीत होना पड़ता है। यहाँ तक की घर में टी. वी., फ्रिज, गाडी न होने के कारण गौरी रिश्तेदारों को अपने घर आने से मना कर देती है| मंत्री साहब की असलीयत सदानंद को मालूम होने से मंत्री जी सदानंद का मुंह बंद कराने के लिए उसे प्रमोशन देकर उसका तबादला करवाते हैं। सदानंद को उसके घर की आर्थिक

स्थिति उसे यह प्रोमोशन स्वीकारने के लिए मजबूर करती है। पति का यह निर्णय गौरी को अच्छी नहीं लगता| वह अपनी नाराजी-क्षोभ स्पष्ट करती हुई कहती है, "अब वह विश्वास, वह अभिमान टूट गया है रोहित! तेरे पापा बिक गए हैं। अपना मुंह बंद रखने की कीमत लेकर चुपचाप यहाँ से जा रहें हैं।" इस प्रकार इस अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए सदानंद मंत्री जी के राजनीतिक जाल में फंस जाता है। मंत्री जी की 'शुभकामना' से प्राप्त प्रमोशन गौरी को राजनीतिक आतंक लगता है। इस आतंक के सामने झुकनेवाले पति के प्रति उसके मन में आक्रोश भरा हुआ है।

ठीक उसी प्रकार उनकी और एक कहानी 'सन्नाटा ही सन्नाटा' में सावित्री का चित्रण किया गया है। जिसका परिवार बहुत बड़ा है। उसके घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण सावित्री को हमेशा आभावों का सामना करना पड़ता है। उसका बेटा नरेश फौज में नौकरी करता है और दिल्ली में ही अपने परिवार के साथ रहता है। छुट्टियों में सिर्फ वे लोग गांव में सावित्री के पास आते हैं। इससे सावित्री खुश हो जाती है, पर जल्द ही नरेश को फौज का बुलावा आता है और सावित्री को अपने दिल पर पत्थर रखकर उसे जाने की इजाजत देनी पड़ती है। बहू भी अपने पति के साथ जाने की जिद्द करती है क्योंकि उसे यहाँ बहुत काम करना पड़ता है। सावित्री अभी अपने पोता-पोती से न मिल पाने के कारण इससे इंकार करती है। सावित्री अपनी छोटी बेटी और बेटे को कभी कही भी जाने का मौका न मिलने के कारण उन्हें नरेश के पास दिल्ली भेजना चाहती है पर नरेश इससे हमेशा आना-कानी करता है। जब सावित्री अपनी बहू को नरेश से यह बात

कहते सुनती है, "देखो मैं तुम्हारी हर बात मान लूंगी, पर मुझे यहां रहने के लिए मत कहना। तुम हर महीने यहां पांच सौ रुपया भेजते हो मैं कुछ नहीं कहती। चाहो तो सौ-पचास और भेज दिया करना। मैं मना नहीं करूंगी लेकिन बस्स..." यह बात सुनकर सावित्री को बहुत बुरा लगता है उसे इच्छा होती है कि बहू को अभी जवाब दे, पर नरेश जो हर महीने पैसे भेजता था उससे उनके घर को बहुत सहारा मिलता था। इसी कारण सावित्री को अपना गुस्सा निगलकर बेटे और बहू को विदा करना पड़ता है। इस प्रकार आर्थिक लाचारी के कारण उसे बहू की नफरत को भी स्वीकार करना पड़ता है। इस प्रकार आर्थिक आभावों से संत्रस्त मां का चित्रण इस कहानी में दिखाई देता है।

5. अपराध बोध की भावना

अपराधबोध एक नैतिक भावना है जो तब घटित होती है जब कोई व्यक्ति विश्वास करता है या महसूस करता है| जब कोई दूसरे को नुकसान पहुंचाता है, तो अपराधबोध एक स्वाभाविक भावनात्मक प्रतिक्रिया है।अपराधबोध आत्म-केंद्रित है लेकिन अत्यधिक सामाजिक रूप से किस प्रकार प्रासंगिक भी है यह मालती जोशी ने अपनी कहानियों के माध्यम से दर्शाया है| उदहारण के लिये 'अक्षम्य' कहानी में चित्रित शाम के परिवार में बीमार पत्नी, चार बच्चे एवं माता-पिता है। वह घर में अकेला कमानेवाला होने के कारण उसके घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। उसकी पत्नी गीता बीमार होने के कारण सारे घर की जिम्मेदारी श्याम की माँ के ऊपर पड़ती है। इसी वजह से वह हमेशा चिड़-चिड़ करती रहती है और घर

में झगड़ा होता रहता है। अपनी परिस्थिति से तंग आकर आखिर गीता श्याम को बिंदू की माफी मांगने के लिए कहती है।

"बस एक बार जाकर माफी माँग लो। चलने लायक होती तो मैं भी साथ हो लेती। उनके पाँव पकड़ लेती।" उसे ऐसा लगता है कि बिंदू पर हुए अत्याचार के कारण ही उसकी हाय इस घर को लग गई। फिर श्याम को अपने सारे अपराध याद आते हैं कि किस प्रकार बिंदू दिखने में अच्छी न होने के कारण हमेशा ही उसकी अनचाही रही। अम्मा के बहकावे में आकर किस प्रकार वह उसे मारता पीटता था; और किस प्रकार झूठा लांछन लगाकर उस दिन श्याम ने उसे अधमरी होने तक पीटा था, और मायके छोड़ आया था। उसके बाद बिंदू ने तलाक के लिए अर्जी दी थी और तलाक के बाद उसने गीता से शादी की थी। गीता की बात सुनकर श्याम बिंदू से माफी मांगने के लिए उसके घर जाता है। जब वह बिंदू के घर का दरवाजा देखता है तो उस पर 'बिंदू पराशर एम.ए., पीएच.डी; एल.एल.बी., प्रिन्सिपल विद्या निकेतन ज्यूनियर कॉलेज' की नेमप्लेट पढ़कर चकीत हो जाता है। इस प्रकार अंत में जब सभी रास्ते बंद हो जाते हैं तो शाम के मन में अपने कार्य के प्रति अपराध बोध की भावना दिखाई देती है।

6. प्रौढ़ावस्था में विवाह

प्रौढ़ावस्था की आयु तक पहुंचते-पहुंचते जीवन का एक अध्याय समाप्त होता है। वैवाहिक यौन सम्भोग की अवस्था समाप्त होती है तथा बच्चों की जिम्मेदारियां निभा लेने की कठिन स्थिति उपस्थित होती है।परंतु आज भी कई स्त्री और पुरुष

पारिवारिक दबाव के कारण प्रौढ़ावस्था में विवाह करते है| उदहारण के लिये मालती जी की कहानी 'हमको दियो परदेस' में कुसुम पर दस वर्ष की आयु में ही अपने छोटे भाई रघू की जिम्मेदारी आ जाती है। फिर कुसुम बड़ी होने के बाद उसके पिताजी उसकी शादी तय कर देते हैं। तभी एक हादसे में पिताजी की आँखे चली जाती हैं। इस प्रकार पिताजी और छोटे भाई की जिम्मेदारी के कारण कुसुम अपनी बनी-बनाई शादी से इंकार कर देती है और नौकरी ज्वाईन कर लेती है। अपनी शादी का खयाल दिल से निकालकर वह रघू की शादी बड़ी धूमधामसे करती है। पर जो बहू घर में आती है वह अपने मायकेवालों के बहकावे में आने के कारण घर का सारा वातावरण ही बिगाड़ देती है।वह हमेशा कुसुम को ताने देती रहती है। दिन भर उसके खिलाफ घर में षड्यंत्र रचा जाता है। इस स्थिति को देखकर बाबूजी कुसुम को शादी करने के लिए कहते हैं। पर जब अपनी भाभी का अत्याचार हद से बढ़ जाता है तो वह भी शादी कर लेती है। शादी के बाद जब कुसुम मायके आती है तो उसका अपमान ही होता है। जब बाबूजी बीमार थे तो यही हुआ था, कुसुम ने पूरे डेढ़ महीने तक अपने तन-मन-धन से सेवा करके बाबूजी को मौत के मुँह से निकाला था| तीन हफ्ते नर्सिंग होम में रहने के बाद वह तीन हफ्ते घर पर भी उनके पास रही, उन्हें एक तरह से अपने पैरों पर खड़ा करके ही उसने दम लिया| इस बीच उसके पति भी एक-दो बार आकर बाबूजी को देख गये थे। उसे बड़ा अच्छा लगा। तीसरी बार जब वे आये तो उसने विनम्र शब्दों में जाने की अनुमति माँग ली। उसके जाने की बात सुनकर बाबूज़ी की आँखें भर आयीं| जब रघु बिमार पड गया तब उसकी भाभी ने 'इस घर में आयेंगी तो भाई का

मरा हुआ मुंह देखेंगी' ऐसा कहा था। जब रघू के बीमारी की खबर मिलती है तो वह मायके जाने का फैसला करती है फिर सोचती है कि वहां जाकर भी उसे भाभी के ताने सुनने पडेगें यह सोचकर वह अपना इरादा बदल देती है, "आप ठिक कह रहें हैं। वहां जाकर तमाशा करने से क्या फायदा! इससे मरीज को उल्टे तकलीफ ही होती है। वैसे भी हम जाकर क्या कर लेगें ? जो कुछ करना है, डॉक्टर को करना है, और वे कर ही रहे हैं।"

इस प्रकार कुसुम अपनी भाभी के आतंक से बचने के लिए प्रौढ़ावस्था में विवाह कर अपने ससुराल जाना पसंद करती है। वह दुःख अत्याचार से छुटकारा पाने के लिए शादी के बंधन को स्वीकारती है।

7. **रिश्तों में स्वार्थ-वृत्ती की समस्या**

बढ़ते भौतिक संसाधनों ने मानव को और भी ज्यादा अवसरवादी और स्वार्थी बना दिया है| स्वार्थ एवं ईर्ष्या में मानव मन जितना लिप्त है, उतना ही धर्म व परमार्थ से दूर है। स्वार्थ रिश्तों में आने वाली कड़वाहट का मुख्य कारक है। जब-जब संबंधों के बीच स्वार्थ आ जाता है, तब-तब पुरा घर तनाव में आ जात है। मनुष्य स्वार्थ पूर्ति के लिए अनुचित कार्यो को अंजाम देने लगता है, जिससे जीवन में अपनों को दुःखाना आदि| मालती जोशी की 'बोल री कठपुतली' यह कहानी इस बात का उदहारण है| प्रस्तुत कहानी में चित्रित आभा को हमेशा ही ससुरालवालों से प्रताड़ित होना पड़ता है। आभा के ससूर ने आभा का रिश्ता वह एम.ए. है इसलिए मंजूर किया था। जब उसके हाथों की मेहंदी भी नहीं उतरी तब उसके

हाथों में नौकरी का प्रस्ताव लाकर रख दिया तब उसे एक देहात में जाकर अकेले रहना पड़ा जहाँ वह अच्छा खासा कमाकर ससुरालवालों को पैसे भेज सके| इसी बीच आभा दो बच्चों की माँ हो गई और उसके बच्चे हमेशा अपनी दादी के पास होने के कारण उनमें माँ के प्रति आत्मीयता बहुत कम थी। घर में कोई उसे समझने की कोशिश नहीं करता है| हर महीनें की पहली तारीख के आसपास आभा के सासुर उसकी खैरियत पूछने के बहाने चक्कर लगाते। राशन-पानी दे जाते और पूरी तनख्वाह झटककर ले जाते। मुश्किल से हाथ खर्च के लिए कुछ छोड़ जाते। बहू का भी किसी बात के लिए मन करता होगा, यह उन्हें ख्याल ही नहीं था| जब उसकी सास बीमार होती है तब आभा का तबादला किया गया वह भी सास की देखभाल करने के लिए। जब वह अपने स्कूल में रम गई थी तो देवर डॉक्टर हो जाने पर अमीत ने उसे नौकरी छोड़ने के लिए कहा सब के दबाव में आकर उसे नौकरी छोड़नी पड़ी। खाली समय बिताने के लिए उसने फिर आस पास के गरीब बच्चों को पढ़ाना शुरू किया। उसके इस कार्य में आस पास की महिलाएं भी शामिल हो गई। अब वह कार्य जब महत्त्वपूर्ण मोड़ पर आ गया था तभी अमीत अपने प्रमोशन की और तबादले की ऑर्डर आभा के सामने रख देता है। तो वह अपने स्कूल के बारे में पूछती है इसी कारण पति और बच्चें उससे नाराज होते हैं क्योंकि इनमें से कोई भी उसकी मन की भावना को समझ नहीं सकता पर जब वह अपने मन का बोझ अमीत के सामने कम करने का प्रयास करती है तो अमीत उसे यह कार्य राजपुर में करने के लिए कहता है। "क्या हर बार इस तरह नये सिरे से शुरू करना संभव है, और हर बार क्या इसी तरह अपने किए-

कराए को बिखेर कर अगले पड़ाव पर चल देना होगा ? क्या यही इन प्रयासों की सार्थकता है?" इस प्रकार स्वार्थ-वृत्ती के कारण आभा को हमेशा अपने परिवारवालों के सामने झुकना पड़ता है|

वही उनकी दुसरी कहानी 'कोउ न जाननहार' में चित्रित मनु की शादी बड़ी धुम-धाम से होती है, पर कुछ ही दिनों में उसके पति का देहांत हो जाता है। ससुरालवाले उसे अपशकुनी मानकर उसे वापीस उसके मायके भेज देते हैं। पिताजी बड़ी दौड़ धूप कर उसे उसके पति के स्थान पर नौकरी दिलवा देते हैं। पिताजी की मृत्यु के बाद सारे परिवार की जिम्मेदारी अब मनु पर आ जाती है। मनु अपनी दो छोटी बहनों कि शादी करवाती है तथा अपने भाई को पढा-लिखाकर डॉक्टर बनाती है| फिर भी मनु ही अपने पति के मौत की जिम्मेदार है, यह बात बार-बार दौहराकर उसकी माँ उसे कोसती रहती है और गालियां भी देती है। अपने भाई और बहनों के लिए इतना सब कुछ करने पर भी वह मनु पर सेठजी के साथ गलत रिश्ता होने का लांछन लगाते हैं। सेठजी की मृत्यु की खबर पढ़कर अनु अपनी दीदी से मिलने जाती है तब मनु अपने देवर के दो बच्चों के साथ खुशी से जीवन व्यतीत करती है। मनु अपनी बहन की शंका का निराकरन करती हुई कहती है, "अनु दो एकाकी नक्षत्र अंतरिक्ष में भटक रहें थे। संयोग था कि आपस में टकरा गए। एक गूंज सी हुई, जो होनी थी। कुछ स्फुलिंग बिखरे जो स्वाभाविक था बस इतना ही था। इससे जादा हम दोनों के बीच कभी कुछ नहीं था।"

प्रस्तुत कहानी की विधवा खुद नौकरी करके सारे घर की जिम्मेदारी उठाती है पर अंत में घरवालों की तरफ से उसे निराशा ही झेलनी पड़ती है। स्वार्थ पूर्ति के बाद रिश्तेदार उससे मुंह मोड लेते हैं। अतः उनके आतंक से बचने के लिए वह देवर के बच्चों के साथ रहती है।

8. मित्रता के कारण परिवार में उपजे तनाव

हमारे जीवन में सच्चे मित्र का महत्व शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है।मित्र हमें अकेलापन से दूर रखते है। अगर एक सच्चा मित्र आपका मनोबल बढ़ाकर, यथासंभव मदद करके और सलाह देकर आपकी कठिनाई को दूर करने में आपकी सहायता करता है तो दुसरी और यही घनिष्ठ मित्रतता आगे चलकर तनाव की कारण भी बन सकती है| उदहारण के लिए 'रानियाँ' कहानी में डॉ. सक्सेना डॉ. कुमार के अच्छे दोस्त हैं। दोनों व्यवसाय सहभागी भी हैं। डॉ. कुमार विवाहित होते हुए भी वंदना के साथ प्रेम सम्बन्ध रखकर उसे अंधेरे में रखता है। किन्तु डॉ. सक्सेना वंदना को बताकर डॉ. कुमार का झूठ खोल देता है कि वह बाल बच्चों वाला भी है। वंदना जब डॉ. कुमार की बीमार पत्नी से मिलने अस्पताल जाती है तब डॉ. सक्सेना डरता है कि वंदना डॉ. कुमार को उसका नाम न बता दे। तब वह कहता है - "ही में नॉट लाइक इट। और फिर आप तो जानती हैं कि दोस्ती बड़ी नाजुक चीज होती है। जरा से में गलतफहमी हो जाएगी। और आप जानती हैं, दोस्त तो हम हैं ही। अब काम-धन्धे से भी जुड़ गए हैं।" इस प्रकार

प्रस्तुत कहानी में डॉ. सक्सेना एक अच्छा मित्र है जो वंदना को सच्चाई बताकर अपने मित्र तथा वंदना दोनों का जीवन बरबाद होने से बचाता है|

9. अकेलेपन की समस्या

हर किसी के जीवन में एक ऐसा समय आता है जब एक व्यक्ति खुद को अकेला महसूस करता है। जीवन की परेशानियों से अकेले लड़ते हुए उदास महसूस करना स्वाभाविक है। ठीक इसी प्रकार मालती जोशी की कहानी 'संवेदना' इस बात का उदहारण है| इस कहानी में लेखिका ने एक ऐसा परिवार चित्रित किया है जिसमें मम्मी-पापा और उनकी छोटी बेटी शुची है| बड़ी बेटी की शादी हो जाने के कारण वह ससुराल में है। इस परिवार में दोनो बेटियां हीं होने के कारण बेटे की कमी भी दिखाई देती है। घर में शुची की शादी की तैयारीयां चल रही होती है। एक दिन जब लखनऊवालों का खत आता है कि उन्हें लड़की पसंद है और वे जल्द-से-जल्द शादी करना चाहते हैं। तब मम्मी-पापा चिंता में डूब जाते हैं क्योंकि बेटी की शादी हो गई तो वे लोग अकेले पड जाएेंगे। जब थोड़े दिनों के लिए शुची अपने ससुराल वालों के पास जाती है तो उन्हें अकेले में हीं दिन गुजारना मुश्किल हो जाता है। यहाँ तक की खाने का एक निवाला भी उनके गले से नीचे नहीं उतरता। ऐसी स्थिति में मम्मी अपनी बड़ी बेटी का एक बेटा गोद लेना चाहती है। वह चिट्ठी भी बेटी को लिखती है लेकिन बेटी इससे इंकार करती है। यह बात जानकर पापा मम्मी पर गुस्सा हो जाते हैं। तब पापा पाल आंटी जिन्होंने

गोद ली हुई सोनाली अब आंटी की शादी तय हो जाने के कारण अनाथ होने वाली थी उसे गोद लेने का फैसला करते हैं।

इस प्रकार अपनी बेटी की शादी हो जाने के बाद अकेले दिन गुजारने के तनाव में फंसे माँ-बाप एक अनाथ बच्ची को गोद लेकर तनाव से मुक्त हो जाते हैं|

10. दांपत्य जीवन में उभरते तनाव

विवाहों को अक्सर उनकी सकारात्मक और नकारात्मक विशेषताओं के आधार पर पहचाना जाता है, चाहे वे संतुष्टि और खुशी की भावनाएँ उत्पन्न करते हों या संघर्ष और नकारात्मकता की। परिवारों में दाम्पत्य जीवन को आदर्श रूप प्रदान करने में आचार, विचारों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है| समकालीन महानगरीय परिवेश ने व्यक्ति को ऐसी अंधी दौड़ में डाल दिया है कि वह अपने घर, परिवार, सबको रौंदता हुआ पदोन्नति प्राप्त करना चाहता है| इन परिस्थितियों का उदहारण हमें निमनलिखित कहानियों में देखने को मिलता है;

'अंतिम संक्षेप' शीर्षक कहानी में चित्रित माँ अपने घर में अकेली रहती है। उन्हें सिर्फ दो बेटे हैं। एक बेटा विदेश में और दूसरा उसी शहर में अलग गृहस्थी बसाए हुए है। मनीष अपनी बीवी और दो बच्चों के साथ वहाँ रहता है। मनीष को अलग गृहस्थी बसाने का कोई मोह नहीं था पर बीवी के कारण उसे मजबूर होना पड़ा। महिमा अपने ससूर के कारण अपना अलग घर बसा लेती है। पर माँ अकेली होने के कारण वह अपने घर में किराएदार रख लेती है। पूजा और उसका परिवार उसमें रहता है। पूजा बातुनी और अच्छे स्वभाव की होने के कारण माँ उसके छोटे बच्चों

की परवरिश का जिम्मा अपने ऊपर लेती है। क्योंकि उन्हें कभी अपने पोते-पोती को संभालने का मौका ही नहीं मिला। माँ का पूजा के प्रति प्यार भी महिमा को फूटी आँख नहीं सुहाता। महिमा और मनीष में हमेशा झगड़ा होता था और मनीष झगड़े के बाद अपनी माँ के पास चला आता था। यह बात महिमा को अच्छी नहीं लगती। एक दिन ऐसे ही मनीष अपनी बीवी से झगड़ा कर माँ के पास आता है। इसी बात को लेकर महिमा और माँ के बीच झगड़ा होता है और महिमा के उलाहने सुनकर और आपसी झगड़े में महिमा सारा दोष माँ पर डाल देती है। यह सुनकर माँ अपने घर के दरवाजे अपने बेटे मनीष के लिए हमेशा-हमेशा के लिए बंद कर देती है| इस प्रकार इस कहानी द्वारा मालती जोशी जी ने पति-पत्नी के बीच के झगड़े का चित्रण किया है।

'मोहभंग' इस कहानी में गिरीश और सुनीता पति-पत्नी हैं। दोनों अपने विचारों, सिद्धांतों, और अहंकार के कारण एक-दूसरे के विरोधी हो गए हैं। सुनीता नए विचारों के आधार पर चलनेवाली नारी है। वह अपनी दोनों बच्चियों को हॉस्टेल भेजती है और अपना खाली समय गरीब बच्चों को पढ़ाने में गुजारती है। उसे लगता है कि, हम अपने बच्चों को हॉस्टेल में रख सकते हैं। पर गरीब बच्चों को कौन पढ़ाएगा? इसलिए वह उन्हें पढ़ाने के लिए जाती है। गिरीश को यह बात पसंद नहीं आता| उसे अपनी बेटियों को हॉस्टेल में भेजना पसंद नहीं है जब जाते वक्त लड़कियां उसे बिलखती हैं तब उसे बहुत बुरा लगता है। उसे अपने बच्चों के कपड़े भी गरीब बच्चों को देना पसंद नहीं क्योंकि उनके साथ अपने बच्चों की यादें जुड़ी हुई होती हैं ऐसा उसे लगता है| इस प्रकार दोनों के विचार और सिद्धांतों

में अंतर होने के कारण ही दोनों के बीच तनावपूर्ण वातावरण निर्माण हुआ दिखाई देता है। "मुझे घर लौटने की इच्छा ही नहीं होती जरा भी अकेले हुए तो हम लोग बिना बात के लड़ पड़ते हैं। जो कहना चाहते हैं वह तो कह नहीं पाते। किसी तीसरी ही फालतू बात पर उलझ जाते हैं। मन की फांस मन में ही रह जाती है।" 'रिश्तें' इस कहानी में अंकित मीरा, महेश और उनके दो बच्चे ऐसा परिवार दिखाया है। मीरा के घर के पास ही मेहता रहता है, जो महेश का अच्छा दोस्त है। मेहता का परिवार चंदीगढ़ में होने के कारण मेहता हमेशा खाने के लिए महेश के यहाँ आता है। एक दिन मीरा, मेहता को औपचारिकता वश एक बात कह जाती है, तब महेश हमेशा उसे उसी पर खिजाता है। मेहता की बीवी आनेवाली है इसलिए मीरा और मेहता जाकर घर का सारा सामान खरीदते हैं और घर भी सजाते हैं। मेहता की बीवी के आ जाने पर वह मीरा का घर मानो भूल हीं जाता है| तीसरे दिन जब मेहता और उसकी बीवी मीरा के घर आती है तब उसका अनदेखा व्यवहार देखकर मीरा को गुस्सा आ जाता है। मेहता की बीवी नौकरी करने के कारण उसमें ईर्ष्या दिखाई देती है और मीरा को इसी बात से गुस्सा आता है। फिर मेहता की बीवी चली जाती है तब मेहता मीरा के घर आने लगता है, उस वक्त मीरा उसकी तरफ ध्यान नहीं देती। महेश द्वारा बहुत दिनों के बाद मेहता अपने परिवार से मिल पाने की बात सुनकर मीरा कहती है, "वह भूल गई की बेचारा मेहता पिछले दिनों कितना पराया हो गया था। उसने सहन भाव से यह स्वीकार कर लिया कि मुश्किल से चार दिन उसे परिवार का सुख मिलता है, उसे किसी के साथ बांटना नहीं चाहता तो यह स्वाभाविक ही है।" इस प्रकार हम देख

सकते है कि किस प्रकार दांपत्य के व्यवहार एवं विचारों में अंतर होने के कारण दोनों में तनावपूर्ण वातावरण निर्माण होता है।

11. व्यक्तिगत मजबुरी के कारण उभरते तनाव

जब कोई व्यक्ति जुनूनी-बाध्यकारी विकार से प्रभावित होता है, तो उनकी स्वाभाविक प्रतिक्रिया उद्देश्यपूर्ण व्यवहार और जानबूझकर कार्यों के साथ अपनी चिंता पैदा करने वाले घुसपैठ विचारों से लड़ना है यह व्यवहार मजबूरियां कहलाते हैं| उसी प्रकार से मजबुरी एक व्यक्ति से क्या कुछ नहीं करती| प्रस्तुत मालती जोशी की कहानी 'छीना हुआ सुख' में चित्रित आनु का पति डॉक्टर है। आनु के पति की बुआ उसके ही घर में रहती है। एक दिन आनु के चार तोले के कंगन कहीं खो जाते हैं पर वह अपने पति गुस्सा करेंगे इस कारण चुप रहती है। फिर नौकर के जरिए उसे बुआ की असलीयत समझ में आती है। एक दिन अचानक जब बुआ अपनी बेटी बिन्नी के घर जाने का फैसला करती है तब उसका शक और भी बढ़ जाता है। बुआ जब अपनी सहेली से मिलने जाती है तब आनु चुपके से आकर बुआ की संदुक तलाशती है। उसमें उसे अनेक चीजों के साथ कंगन भी मिल जाते हैं, बाकी चीजें तो वह ठीक से रख देती है पर कंगन निकाल लेती है। बुआ के जाने के बाद आनु अपनी जासूसी अपने पति को सुनाती है तब वह गंभीर होकर उसे समझाता है कि किस प्रकार बुआ एक गरीब घर में ब्याही गई फिर उसके पति की मृत्यु हुई और उन्हें अपनी बेटी के साथ भाई के घर आश्रय लेना पड़ा। फिर वह अपनी पीड़ा कम करने के लिए अपना सारा गुस्सा बिन्नी पर

उतारने लगी। बाबूजी को पहला दिल का दौरा पड़ने पर बुआ ने बिन्नी की शादी की जल्दी की तो पिताजी ने अपनी हैसीयत से कुछ बढ़कर ही खर्चा किया और हर तीज-त्यौहार को बिन्नी के मान-सम्मान माँ ही करती रहीं। बुआ को कभी कुछ करने का मौका ही नहीं मिला। इसी मजबूरी के कारण उनकी अपनी बेटी को कुछ देने की इच्छा अपूर्ण ही रह गई| इसी इच्छा को पूरा करने के लिए वह घर की चीजें चुराकर अपनी बेटी को देती थी। इस प्रकार बुआ की अपनी बेटी को कुछ देने की इच्छी से वह लाचार दिखाई देती है। वह विवशतावश गलत काम करती है। वह बेटी को कुछ-न-कुछ देने का आनंद पाने की कोशिश में गलत काम एवं अपराध कर बैठती ह|

12. असहाय पिता

पिता का सबसे महत्वपूर्ण गुण है, कि वे सदैव हर समय धीरज से काम लेते हैं और कभी खुद पर से आपा नहीं खोते। हर परिस्थिति में वे शांति से सोच समझ कर आगे बढ़ते है तथा गंभीर से गंभीर परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखते हैं। परंतु बुढापे में बच्चो का दायित्व होता है कि वे अपने माता-पिता की देखभाल करें और उन्हें सुरक्षा प्रदान करें| प्रस्तुत कहानी एक असहाय पिता की स्थिति को दर्शाती है| 'अपने अपने दायरे' कहानी में एक अमीर घर की बेटी अपने पति के देहांत के बाद सीधे सास की मृत्यु पर उस घर जाती है। वह घर उसे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। पुराने लोगों के रीति-रिवाज जैसी कोई भी बात उसे अच्छी नहीं लगती। बप्पा अपनी पत्नी की मृत्यु से दुःखी है। बप्पा की उम्र हो गई है

और उनके दोनों लड़के अच्छी नौकरी करते है| परंतु जरुरत पड़ने पर उन्हें अपनी पत्नी के ही गहने बेचकर पत्नी का अंतिम संस्कार करना पडा| पर बेटों को अपने पिता की हालत मालूम होने पर भी वे उन्हें पैसे की मदद नहीं करते। उल्टा माँ के गहनों की पूछताछ करते हैं। पुष्पा और उसका पति बप्पा को अपने घर ले जाना चाहते हैं| इस प्रकार बेटे और बहू के व्यवहार से आतंकित पिता का चित्रण इस कहानी में हुआ है। भौतिक सुख-सुविधा की लालसा और रिश्ते-नातों में उपस्थित उत्पन्न तनाव के कारण मनुष्य के बीच की खाई बढ़ रही है।

13. बेरोजगारी की समस्यां

बेरोजगारी एक ऐसी स्थिति है जहां एक व्यक्ति चालू मजदूरी दर पर काम करने को तैयार है, लेकिन काम नहीं मिलता है। दूसरे शब्दों में, यदि कोई व्यक्ति काम करने में सक्षम है और काम करने का इच्छुक है, लेकिन उसे प्रचलित मजदूरी दर पर काम नहीं मिलता है, तो उसे बेरोजगार माना जाता है। निमनलिखित कहानी में बेरोजगारी समस्यां का वर्णन किया है| 'एक सार्थक दिन' इस कहानी में दिलीप नामक पात्र की पढ़ाई पूरी हो गई है। वह नौकरी की तलाश में है। नौकरी न मिलने से उसे घरवालों की नाराजगी का सामना करना पड़ता है। एक दिन दिलीप ऐसे ही पिताजी के साथ लड़कर कटिंग कराने जाता है। वहाँ उसे एक मस्त मौला लड़का मिलता है, जो उसे बताता है कि आजकल पढ़े-लिखे लोगों के लिए ही नौकरी नहीं मिलती हम जैसे लोगों के लिए काम ही काम है। वह इतना ही नहीं कहता अपितु दिलीप को काम दिलाने के लिए भी ले जाता है। दिलीप

भी घरवालों पर गुस्सा होकर दिन भर गैरेज में काम करता है और शाम को मिली हुई कमाई से खुश होकर घर लौटता है। घरवालें भी उसकी हीं राह देख रहे होते हैं। वह घर आकर खाना खाता है और साढ़े आठ बजें ही उसे नींद आ जाती है। इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने यह स्पष्ट किया है कि, पढ़े लिखे युवकों की अपने दर्जे का काम न मिलने के कारण और अपनी हैसियत से हल्के दर्जे का काम करने में शर्म आने के कारण ही बेरोजगारी जैसी समस्यां निर्माण होती है। परंतु अंत में कहानी का नायक अपनी योग्यता से हल्के दर्जे का काम स्वीकार कर इस परेशानी से मुक्त हो जाता है।

14. डॉक्टर से पीडित परिवार

एक डॉक्टर को धैर्यवान और सहज होना चाहिए, और हर एक मरीज की गोपनीयता का सम्मान करना चाहिए। मरीज की स्थिति की बताते समय, डॉक्टर को न तो मरीज की स्थिति की गंभीरता को कम करना चाहिए, और न ही उसे बढ़ा-चढ़ा कर बताना चाहिए। प्रस्तुत कहानी डॉक्टर से पीडित परिवार की मानसिकता का वर्णन करती है| 'पूजा के फूल' यह कहानी सुरेश और उमा पति-पत्नी की हैं। उमा बीमार होने के कारण उसे हमेशा डॉक्टर के पास जाना पड़ता है। पर अस्पताल में होनेवाली बातें जैसे की मरीज की हैसियत के अनुसार मरीज के साथ किया जानेवाला व्यवहार देखकर वह दुःखी और परेशान होती है। उमा की आर्थिक

स्थिति अच्छी न होने से उसे भी अनेक प्रकार की परेशानीयों का सामना करना पड़ता है। इसलिए वह डॉक्टर के पास जाने के लिए हिचकिचाती है। इसी बात से सुरेश और उसके बीच अनबन होती है। जब एक दिन उमा को इंजेक्शन लगाने आए डॉक्टर असलम बहुत कोशिश करने पर भी उसकी नस में इंजेक्शन नहीं लगा पाते तब वह बीना पैसे लिये हीं चले जाते हैं। इस प्रकार से डॉक्टर ने उनसे रुपये न लेकर अपनी ईमानदारी निभाई| आज डॉक्टरी पेशा नहीं अधिक-से-अधिक पैसे कमाने का धंधा बन गया है। अमानवीय व्यवहार और शोषण इसकी पहचान बन गई है।

15. साफ़-सफ़ाई का मोह: एक समस्या

स्वच्छता का मतलब है कि कोई गंदगी न हो, कोई धूल न हो, कोई दाग-धब्बा न हो, कोई दुर्गंध न हो। स्वच्छता का लक्ष्य स्वास्थ्य, सौंदर्य, अप्रिय गंध की अनुपस्थिति और खुद को और दूसरों को गंदगी और दूषित पदार्थों को फैलने से रोकना है। परंतु साफ़ सफाई का अधिक मोह एक समस्यां बन सकती है| उदहारण 'तौलिए' इस कहानी में कुमुद एक साधारण से परिवार में पली-बढ़ी लड़की है। पति अमीर और सब सुख-सुविधाओं से युक्त घर मिल जाने के कारण उस पर साफ-सफाई का भूत संवार हो जाता है। वह हर वक्त घर की सफाई में ही लगी रहती है। यहाँ तक की पार्टी में या महमानों के घर जाने पर भी वह वहाँ का पानी भी नहीं पीती; इसी कारण से हमेशा उसमें और उसके पति के बीच झगड़ा होता है। परंतु कितना भी समझाने पर भी वह बाज नहीं आती। एक दिन जब

सुशी को देखने के लिए जो लोग आये थे उनमें बच्चे भी थे और बच्चों के कारण घर गंदा हो गया था। दीदी (कुमुद) मेहमानों को सिर्फ दरवाजे तक ही छोड़ने गई थी उसके तुरंत बाद उन्होंने कमरे की सफाई शुरू कर दी| मेहमानों में से एक औरत जब अपनी भुली हुई पर्स लेने के लिए वापस आती है तब वह इस प्रकार की साफ-सफाई देखकर आश्चर्य चकित हो जाती है। इस प्रकार इतना सबकुछ होने पर भी कुमुद पर कोई असर नहीं होता। उसका अत्यधिक सफाई का मोह अन्य परिवार के लोगों के लिए कष्ट-यातना का विषय बन जाता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मालती जोशी की कहानियों की भाषा शहरी मध्यवर्ग में बोली जाने वाली सामान्य बोलचाल की भाषा है।उन्होंने खड़ी बोली के साथ कुछ देहाती बोलियों का प्रयोग भी अपनी कहानियों में किया है। मध्यवर्गीय आम आदमी के पारिवारिक जीवन यथार्थ तथा स्त्री की त्रासदी लेखिका ने अपनी कहानियों में चित्रित की है। कामकाजी स्त्री, अविवाहित स्त्री, गैर जिम्मेदार युवा पीढ़ी और लाचार तथा विवश माता-पिता, असहाय पिता तथा अन्य विषयों को मालती जी ने कहानी के माध्यम से उजागर किया है। मालती जोशी की विशेषता इसी में है कि वे कथानक को यथार्थ से जोड़ती है। समाज की जितनी भी समस्याओं का उनकी कहानियों में चित्रण हुआ है, वे सब आम आदमी की समस्याएँ हैं। उनकी कहानियाँ, भारतीय परिवारों के परिवेश का एक आयना है।

संदर्भ ग्रंथ

1. जोशी मालती, मालती जोशी की लोकप्रिय कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ•3

2. -वही-पृ•14

3. -वही-पृ•26

4. -वही-पृ•33-34

5. जोशी मालती, बोल रि कठपुतली, किताब घर, नई दिल्ली, पृ•17

6. -वही-पृ•112

7. -वही-पृ•120

8. -वही-पृ•127

9. जोशी मालती, आखिरी शर्त, राजेश प्रकाशन, दिल्ली, पृ•13

10. -वही-पृ•29

11. -वही-पृ•36

12. -वही-पृ•55

13. -वही-पृ•63

14. -वही-पृ•84

15. -वही-पृ•93

16. -वही-पृ•115

17. -वही-पृ•125

18. -वही-पृ•136

19. -वही-पृ•153

20. -वही-पृ• 159

21. -वही-पृ• 167

22. जोशी मालती, मालती जोशी की लोकप्रिय कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ•41

23. -वही-पृ•57

24. -वही-पृ•62

25. -वही-पृ•76

उपसंहार

संसार के विभिन्न भागों में परिवार के स्वरूपों में विविधता दिखाई देती है। समाज में परिवार का जो रूप पहले था उसमें धीरे-धीरे बदलाव आ चुका है।सदियों से चलती आ रही मान्यताएँ अब धीरे-धीरे लुप्त होती नजर आ रही हैं। आधुनिकता की इस अंधी दौड़ में पुराने पारिवारिक संबंधो का टूट जाना और संयुक्त परिवारों का एकल परिवारों में बँट जाने की प्रक्रिया ने विघटन पैदा कर दिया है। जैसे विवाह संबंध में तलाक, अलगाव, पारिवारिक मूल्यों का विघटन आदि मूल कारण है। प्रस्तुत थीसिस में श्रीमती मालती जोशी के कहानियों में चित्रित समस्यायों का अध्ययन किया है| सभी अध्याय में लेखिका के कहानी संग्रहों में प्राप्त समस्यायों को प्रामाणिक रूप में रेखांकित किया गया है।

मालती जोशी आंदोलन तथा प्रेम पक्ष से हमेशा अलग रही है। इसलिए उन्हें समीक्षकों की उपेक्षा का शिकार भी होना पड़ा है। कहानीकार मालती जोशी के दुसरे अध्याय पर अवलोकन करने के बाद कहा जा सकता है कि, श्रीमती मालती

जोशी का समकालीन महिला कहानीकारों में महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है| मराठी भाषी होते हुए मालती जी हिंदी की प्रतिष्ठित कहानीकार रही है| लेखिका प्रमुख रूप से पारिवारिक परिवेश से जुड़ी है| वास्तव में कहा जा सकता है कि परिवार ही व्यक्ति के जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए उसके व्यक्तित्व, सोच-विचार, आचार-व्यवहार आदि सभी को निर्मित करता है।

लेखिका का कहानी संग्रहों को पढ़ने से यह ज्ञात होता है कि मध्यवर्गीय परिवार तथा स्त्री इनकी कहानी का मुख्य विषय रहा है। लेखिका को अपने आस-पास कहानी के बीज मिल जाते है। आरंभ में कविता, गीत लिखने वाली मालती जी ने कहानी विधा के क्षेत्र में अपना स्थान निश्चित किया है| लेखिका को अपनी कहानी संग्रहों के लिये कई पुरस्कार भी प्राप्त हुए है तथा कई संस्थाओं ने इन्हें सम्मानित भी किया है। समकालीन लेखिकाएँ मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, सुधा अरोडा, आदि ने हिंदी कथा साहित्य को नई दृष्टि तथा दिशा दी है। वहीं इन सभी लेखिकाओं के बीच श्रीमती मालती जोशी का भी अपना एक विशेष स्थान रहा है। इन लेखिकाओं जैसी विषय वैविध्यता मालती जोशी की कहानियों में दिखाई नहीं देती। इनका अपना एक निश्चित दायरा रहा है- परिवार का| यद्यपि सामाजिक तथा महानगरीय समस्याओं का चित्रण इनकी कहानियों में मिलता है। लेखिका की कहानियों में पात्रों का चित्रण कई प्रकार से हुआ है।जैसे- 'रक्त संबंधित', 'आर्थिक लाचारी', 'अपनों से अपमान', दांपत्य जीवन में उभरते तनाव', 'ईर्ष्या', स्वार्थ-वृत्ती', 'पिता की त्रासदी', 'माँ-बेटे में अनबन', 'बेरोजगारी', 'संकीर्ण सोच की समस्या', 'अकेलेपन की समस्या', आदि|

लेखिका की कहानियों में भारतीय परिवारों का जीवन्त, यथार्थ का चित्रण प्रस्तुत हुआ है। व्यक्ति के जीवन से जुडी हर छोटे-बड़े प्रसंगों के साथ परिवार का महत्वपूर्ण स्थान होता है। लेखिका ने व्यक्ति और समाज के बीच की कड़ी के रूप में परिवार के सदस्यों के सुख-दुःख, टूटते-जुड़ते संबंध, उनकी मानसिक तथा आर्थिक स्थिति का चित्रण करते हुए पारिवारिक विसंगतियों का विस्तार किया है। बदलती जीवन शैली, आधुनिकीकरण, शिक्षा-प्रसार, विज्ञान तथा तकनीकी विकास, स्त्री शिक्षा एवं अस्मिता जैसे विभिन्न कारणों से पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन होकर नई मान्यताएँ स्थापित होने लगी। बदलती धारणाओं के कारण परिवार में अनेक समस्याएँ निर्माण हो गई| नई-पुरानी पीढ़ी में संघर्ष बढ़ने लगा। कामकाजी स्त्री घर-परिवार तथा दफ्तर दोनों स्तर पर तनाव महसूस करने लगी। लेखिका ने परिवार की धुरी स्त्री की पीड़ा को यथार्थ रूप में चित्रित किया है।

निष्करतः कहा जा सकता है कि मालती जोशी के कहानी-साहित्य के विषय प्रासंगिक है जो आज के समाज को नई दिशा प्रदान कर सकते है। उन्होंने अपने साहित्य का विषय 'परिवार' एवं समाज की सामाजिक विसंगतियों तथा नारी जीवन को बनाया है| आज स्त्री कहने को तो पूरी तरह स्वतन्त्र हो चुकी है, परंतु कुछ परिस्थितियों में वह आंतरिक रूप से अभी प्रताड़ित है। जिसका वर्णन मालती जी ने अपनी कहानियों द्वारा व्यक्त किया है| इस प्रकार कहा जा सकता हैं कि मालती जोशी का कहानी साहित्य वर्तमान समाज में बहुत प्रासंगिक है।